1998 से निरंतर प्रकाशित

RNI No. MPHIN/2017/73838

ISSN 2581-446X

वर्ष-3, अंक-4, फरवरी-मार्च 2020 ₹ 25/-

कला समय

कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका

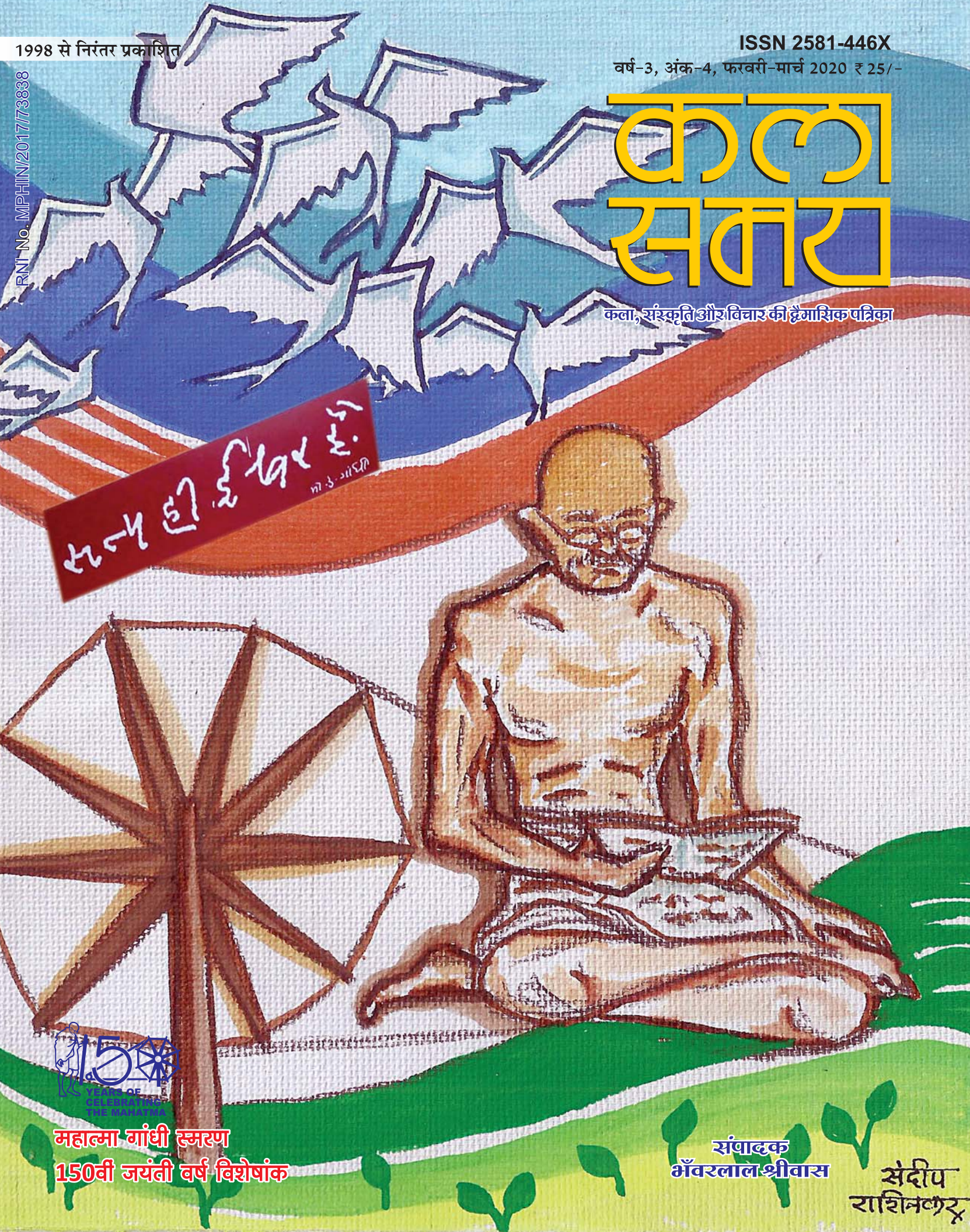

15 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

महात्मा गांधी स्मरण

150वीं जयंती वर्ष विशेषांक

संपादक

भँवरलाल श्रीवास

संदीप राशिनकर

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

मध्यप्रदेश शासन

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

स्टेट कंट्रोल रूम, भोपाल

मध्यप्रदेश के बाहर फँसे श्रमिकों की वापसी के संबंध में सूचना

कोरोना संकट के कारण मध्यप्रदेश के बाहर फँसे और अपने घर आने के इच्छुक श्रमिकों से अनुरोध है कि वह कंट्रोल रूम के

टोल फ्री नं. 0755-2411180

अथवा

पोर्टल http://mapit.gov.in/covid-19

पर जल्द से जल्द अपना पंजीयन करायें।
आपसे प्राप्त जानकारी के आधार पर कार्यक्रम तैयार कर आपको वापस लाने की कार्यवाही तत्काल की जायेगी।

आई.सी.पी. केशरी
अपर मुख्य सचिव
प्रभारी, स्टेट कंट्रोल रूम

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2020

D-17002

1998 से निरंतर प्रकाशित
RNI NO. MPHIN/2017/73838

कला समय पत्रिका अब वेबसाइट पर उपलब्ध
www.kalasamaymagazine.com

ISSN 2581-446X
(वर्ष : 22+3) पूर्णांक-103
वर्ष-3, अंक-4, फरवरी-मार्च 2020

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल म.प्र. द्वारा पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित
म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल (म.प्र.) द्वारा 'सप्तपर्णी सम्मान' से पुरस्कृत

कला समय

कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका

संरक्षक
नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
डॉ. महेन्द्र भानावत
पं. विजय शंकर मिश्र
श्यामसुंदर दुबे
पं. सुरेश तातेड़
कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय

परामर्श
लक्ष्मीनारायण पयोधि
ललित शर्मा
राग तेलंग
प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
प्रो. सुधा अग्रवाल
डॉ. कुंजन आचार्य
डॉ. देवेन्द्र शर्मा

सांस्कृतिक प्रतिनिधि
चेतना श्रीवास
डॉ. वर्षा नालमे
उमेश कुमार पाठक
बंशीधर 'बंधु'
पं. देवेन्द्र वर्मा

वेबसाइट प्रबंधन
मयंक अग्रवाल

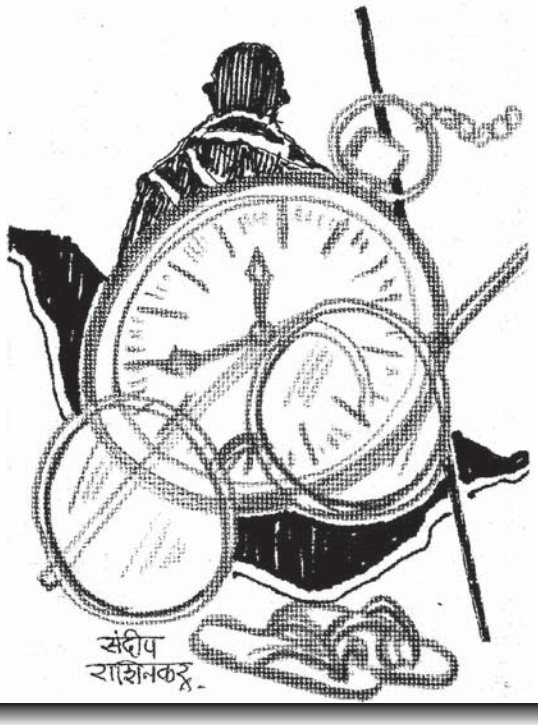

संपादक
भँवरलाल श्रीवास
bhanwarlalshrivas@gmail.com
94256 78058

सह संपादक
डॉ. मधु भट्ट तैलंग

उप संपादक
राहुल श्रीवास

संपादक मंडल
रामेश्वर शर्मा 'रामूभैया'
साहित्य
हरीश श्रीवास
कला
डॉ. मुक्ति पाराशर
संस्कृति
नरिन्दर कौर
प्रबंध

कानूनी सलाहकार
जयंत कुमार मेढ़े (एडवोकेट)

सहयोग राशि

वार्षिक	**: 150 /-**	**(व्यक्तिगत)**
	: 175 /-	**(संस्थागत)**
द्वैवार्षिक	**: 300 /-**	**(व्यक्तिगत)**
	: 350 /-	**(संस्थागत)**
चार वर्ष	**: 500 /-**	**(व्यक्तिगत)**
	: 600 /-	**(संस्थागत)**
आजीवन	**: 5,000/-**	**(व्यक्तिगत)**
	: 6,000/-	**(संस्थागत)**

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाइन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा कला समय के नाम से उक्त पते पर भेजें)

संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग संपर्क -
जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016
फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सुविधा : 'कला समय' का बैंक खाता विवरण
ओरियण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स की शाखा **(IFSC : ORBC0100932)** में **KALA SAMAY** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में नगद राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हों। पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे।
सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक/अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस काम्पलेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- भँवरलाल श्रीवास

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

रमेश दवे

डॉ. महेन्द्र भानावत

न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

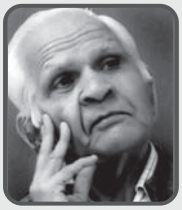

युगेश शर्मा

डॉ. डी.आर. मेहता

डॉ. भवरलाल जैन

डॉ. विभा सिंह

इस अंक के सहयोगी विद्वान और संस्थाएँ

दयाराम नामदेव
सचिव, गांधी भवन न्यास, भोपाल
छायाचित्र, साहित्य

डॉ. नारायण व्यास
पुरातत्वविद्, भोपाल
दुर्लभ सामग्री उपलब्धता

अश्विन झाला
संपादक, खोज गांधी की
गांधी रिसर्च फाउंडेशन, जलगांव
चित्र, आलेख

संदीप राशिनकर
चित्रकार, लेखक, इंदौर
आलेख, नाटक, चित्र
रेखांकन

इस बार

- संपादकीय / 5
  युग सारथी महात्मा गांधी
- आलेख
  कलात्मक गांधी और गांधी की कला / नर्मदा प्रसाद उपाध्याय/6
  सत्य और अहिंसा : गांधी प्रासंगिक या अप्रसांगिक ?/ रमेश दवे/11
  गांधीजी चरखों दे गया/ डॉ. महेन्द्र भानावत / 14
- गांधी तीर्थ से / 16
  हमारी भूमिका/न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी
- आलेख
  गांधी व्यक्ति नहीं विचार है / युगेश शर्मा/18
- गांधी तीर्थ से / 20
  आज अगर गांधी होते/डॉ. डी.आर. मेहता
- आलेख
  महिला सशक्तिकरण में गांधीजी का योगदान / दयाराम नामदेव/21
- गांधी तीर्थ से / 22
  गांधी तीर्थ का निर्माण! यही मेरी अंतरात्मा की आवाज है.../डॉ. भवरलाल जैन
- समीक्षा /नाटक/ 24
  मोनिया दि ग्रेट : महात्मा गांधी के बचपन पर आधारित नाट्य कृति / संदीप राशिनकर
  मोनिया से महात्मा महात्मा गांधी के बचपन पर आधारित नाटक / शकील अख्तर
- आलेख / 32
  अहिंसा और सत्याग्रह: महात्मा के दो अस्त्र / डॉ. विभा सिंह
- मध्यांतर / 34
  इब्तिसात बरकत की कविताएँ, अनुवाद : मणि मोहन
  डॉ. कृपा शंकर शर्मा 'अचूक' के गीत / 35
  धर्मपाल महेन्द्र जैन की कविताएँ / 36
  महेश अग्रवाल की चार ग़ज़लें / 37
- महात्मा गांधी डायरी से / 38
  एकादश व्रत/रचनात्मक कार्यक्रम (गांधी के शब्दों में)/गांधीजी का जीवन घटनाक्रम
- आलेख / 41
  राष्ट्रदेव गांधी के अंतिम 24 घण्टे /प्यारेलाल
- शख्सियत / 44
  डॉ. एस.एन. सुब्बाराव आज के गांधी
- समीक्षा
  महीन संवेदनाओं का सघन वितान रचता रचनाकर्म / संदीप राशिनकर/46
  धूप का रास्ता /डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय / 48
- आलेख / 50
  झालावाड़ की कला नृत्यांगना 'कुक्की' की संगीत साधना ... / ललित शर्मा/ 50
  कस्तूरबा जीवन झाँकी बा-बापू की सहधर्मचारिणी / दयाराम नामदेव /52
- संस्था समाचार / 54
  गांधी भवन न्यास, भोपाल
- कला समय का आयोजन/ 56
  दक्षताओं का उपयोग सुनिश्चित करना सबसे बड़ी आवश्यकता : मनोज श्रीवास्तव
- समवेत / 58
  'इतिहास कला श्री' पुरातत्व सम्मान से अलंकृत हुई 'डॉ. मुक्ति पाराशर'/ 'हिन्दी साहित्य मनीषी' सम्मानोपाधी से अलंकृत हुई इतिहासविद 'पुष्पा शर्मा'/ 'हिन्दी साहित्य मनीषी' सम्मानोपाधी से समलंकृत हुई 'श्रीमती प्रीति शर्मा' 'रोशनी के दीप का हुआ विमोचन'/ पोयसिस समारोह में डॉ. शाम्भवी शुक्ला का काव्य - नर्तन/' श्री हरिसरल गीता' से जनमानस को कर्तव्यनिष्ठ बनाने में मदद मिलेगी : डॉ. सुरेन्द्र बिहारी गोस्वामी/ आपले वाचनालय में बौराया 'कविता का वसंत' कवि निशांत हुए सम्मानित/ लघुकथा प्रसंग आयोजित / काकली संगीत समारोह सम्पन्न / कला समय विशेषांक 102वाँ अंक का लोकार्पण
- पत्रिका के बहाने / 60

शब्द संयोजन एवं आकल्पन - गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 9981984888 | **आवरण चित्र** - संदीप राशिनकर | **अंतिम आवरण चित्र** - संदीप राशिनकर | **छायाचित्र** - मनीष सराठे, सुनील सेन | **रेखांकन** - संदीप राशिनकर | **सहयोग** - धन सिंह, लता श्रीवास | **आवरण सज्जा** - मनोज माकोड़े, गणेश ग्राफिक्स

युग सारथी महात्मा गांधी

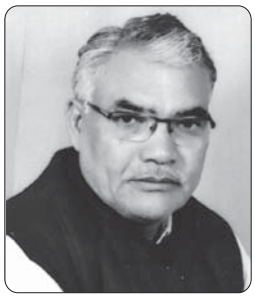

''गति का संयम, मन का साधन रवि-चन्द्र निरखते निर्निमेष।
तुम अप्रतिहत चल रहे विघ्न-विघ्न बाधाओं को कर दूर।।
डगमग-डगमग अहि कोल कमठ नप गये तुम्हारे तीन डगों में नभ-जल-थल
तुम बीत राग दे दिया अपर को महायज्ञ का महाभाग!!''

- डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'

गांधी के नाम के साथ महात्मा की उपाधि पहले-पहल रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लगाई थी। जिनकी आत्मा अर्थात स्वरूप महान हो, उन्हें महात्मा कहते हैं। भगवान श्रीकृष्ण सबके आत्म रूप है इसलिये वे महात्मा हैं। नरलीला लिये मानुष रूप में श्री कृष्ण ने अर्जुन के प्रार्थना करने पर अपने विश्व रूप को संवरण करके, चतुर्भुज रूप के दर्शन देने के पश्चात जब स्वाभाविक मानुषरूप से युक्त होकर भय से व्याकुल हुए अर्जुन को धीरज दिया। रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है कि महात्मा गांधी ने भारतीय संस्कृति पर इतनी अधिक दिशाओं में प्रभाव डाला है कि उनके समस्त अवदान का सम्यक मूल्य निर्धारित करना अभी किसी के लिए संभव नहीं दिखता। उनके खान-पान, रहन-सहन, भाव-विचार भाषा और शैली परिच्छद और परिधान दर्शन और सामाजिक व्यवहार एवं धर्म-कर्म, राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता भारत में आज जो भी आचार या विचार प्रचलित हैं, उनमें से प्रत्येक पर कहीं-न-कहीं गांधीजी की छाप है। यहां तक कि उनके आलोचकों और विरोधियों में भी ऐसे अनेक लोग हैं, जिनकी पोशाक नहीं तो खान-पान में, विचार नहीं तो सामाजिक आचार में महात्मा गांधी का प्रभाव मौजूद है। आज का भारत गांधी का भारत है और गांधी नाम आज के भारत नाम का पूरा पर्याय है इसमें कोई संदेह नहीं। गांधी जी के इस महाव्यापक प्रभाव को दृष्टिगत रखते हुए यह सरल कार्य नहीं है। प्रत्येक महापुरूष अपने समय का परिणाम होता है काल के हृदय में जो अनुभूतियां एकत्र होती है, उन्हीं की अभिव्यक्ति के लिये समय कवि, संत और सुधारक को जन्म देता है। आत्मबल शारीरिक बल से श्रेष्ठ है। लगभग सौ वर्षों तक इस आध्यात्मिक देश ने जो आत्म-मंथन किया, पराधीनता की ग्लानि को धोने के लिए अपनी श्रेष्ठ शक्तियों का चिन्तन और ध्यान किया, गांधी जी उस तपस्या के वरदान बनकर प्रकट हुए। नवोत्थान से प्रेरित भारत अपनी भी स्वाधीनता खोज रहा था और विश्व की समस्याओं का समाधान भी। महात्मा गांधी ने उसकी दोनों कामनाऐं पूर्ण की। महात्मा गांधी वास्तव में महा मानव थे, युगपुरुष थे। वे कहते थे 'मेरा जीवन मेरा संदेश है' और 'सत्य ही ईश्वर है'। उन्होंने अपने महान कार्यों, विचारों आदर्शों और जीवन-व्यवहार से न केवल भारत अपितु सारी दुनिया को अपना मुरीद बना लिया। सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों पर गांधी को अडिग आस्था थी उन्होंने अहिंसा, असहयोग, सविनय अवज्ञा तथा शांतिपूर्ण सत्यग्रह जैसे पुनीत साधनों का इस्तेमाल देश के स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व करते हुए बहुत प्रभावी और सफल ढंग से किया। गांधी जी ने देशवासियों को विदेशी शासन के भय से न केवल मुक्त किया उनमें स्वतंत्रता आंदोलन में साहस के साथ कूद पड़ने का जज्बा भी पैदा किया आत्म विश्वास से भर दिया। स्वराज आंदोलन के साथ-साथ गांधीजी अनेक सामाजिक एवं आर्थिक मोर्चों पर भी समान रूप से संघर्ष कर रहे थे। इसमें अस्पृश्यता निवारण, हरिजनोद्धार अंधविश्वास और कुरीतियों से मुक्ति बुनियादी शिक्षा, ग्राम स्वराज, पंचायतराज खादी के उपयोग को बढ़ावा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार स्वदेशी आर्थिक स्वावलंबन स्वच्छता, धार्मिक सद्भाव मद्य-निषेध हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि का प्रचार-प्रसार आदि शामिल थे। जातिगत ऊंच-नीच की भावना का तिरोहण, छूआछूत की समाप्ति, हरिजनोद्धार से जुड़े विषयों पर जन-जागरण के लिए गांधी जी ने 'हरिजन' अखबार का प्रकाशन प्रारंभ किया। वे कहते थे व्यक्ति की पूजा के बजाय गुण की पूजा करनी चाहिए। हर एक बड़े ध्येय के लिए जूझने वालों की संख्या का महत्व नहीं होता। संसार के महान पुरूष हमेशा अपने ध्येय पर अकेले डटे रहे हैं। गांधी की यात्राएं कोई साधारण यात्राएं नहीं होती थीं। उनके व्यक्तित्व के साथ-साथ एक समूचा विचार दर्शन तथा एक समग्र जीवन पद्धति भी चलतीं थीं। उनके स्वागत तथा व्यवस्था में लगे सहस्त्रों नर-नारियों को भी इस पद्धति से परिचित होने का अवसर मिला। एक स्थान पर उनके आवागमन का संबंध मात्र उस स्थान से नहीं वरन उस क्षेत्र की समूची जनता से होता और दूर-दूर से लोग उनका भाषण सुनने आते। इस प्रकार गांधी द्वारा की गई यात्राएं उस क्षेत्र के व्यक्तित्व को ही आमूल चूल परिवर्तन करने में समर्थ हुई। गांधी जी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जो सुधार वे दूसरों को सिखाते हैं, उन सुधारों की कीमत पहले वे आप चुका देते हैं। गांधी जी में सभी महान गुण है, किन्तु उनका व्यक्तित्व उनके गुणों से भी अधिक महान है। संगीत, चित्र और मूर्ति-कलाओं में से भी केवल उसे ही ग्रहण करते थे जो सुन्दर काव्य के अलावा शिव और सत्य भी था। महात्मा गांधी ने मध्यप्रदेश की यात्रा में वर्ष 1918 से 1942 के बीच जो यात्राएं की इनमें प्रथम यात्रा 29 मार्च 1918 को इंदौर में वे पहली बार आये फिर छिन्दवाड़ा, जबलपुर में 20 मार्च 1921 को कस्तूरबा (बा) के साथ सिवनी से जबलपुर गए, खण्डवा, महू, बालाघाट, अनन्तपुर, बैतूल, इटारसी, करेली, मण्डला, सोहागपुर, हरदा, बुरहानपुर, भोपाल में 11 सितम्बर 1929 को आये और तीन दिनों तक रूके वे बड़े शहरों के अतिरिक्त दूर-दराज के छोटे-छोटे गांवों में भी गए थे। रवीन्द्रनाथ टैगोर कहते हैं 'हजारों दीन-दुखियों की झोपड़ियों में उन्हीं के समान वे आये उनमें उन्हीं की भाषा में बातें की। उन्होंने जो कहा वह खरा सत्य था, शास्त्रों के उद्धरण नहीं। इसलिए भारत की जनता द्वारा उन्हें दिया गया 'महात्मा' ही उनका सच्चा नाम है। दूसरा कौन है जिसने उनके समान सारे भारतीयों को अपना परिजन समझा हो? सत्य से सीधा संबंध स्थापित होने पर आत्मा की दबी हुई शक्तियां फिर से जागृत हो उठती है। जहां-जहां गांधी जी के चरण पड़े वहां-वहां तीर्थ स्थान बन गये भारत के हृदय स्थल बन गये भारत का हृदय स्थल म.प्र. को भी यह गौरव प्राप्त है अविभाजित मध्यप्रदेश में सन् 1918 से 1942 तक गांधीजी की दस यात्राएं की इन यात्राओं में उनका सत्रह दिवसीय ऐतिहासिक हरिजन दौरा भी शामिल है वे कहते थे सत्य का दर्शन बगैर अहिंसा के हो ही नहीं सकता इसीलिये कहा है 'अहिंसा परमो धर्म' विश्व की विलक्षण विभूति और भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के एक सौ पचासवें जन्म वर्ष में कला समय लघु पत्रिका का यह अंक महात्मा गांधी स्मरण विशेषांक स्मरणांजलि के सुधी विद्वान लेखक नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, रमेश दवे, एस.एन. सुब्बाराव, दयाराम नामदेव, डॉ. महेन्द्र भानावत, युगेश शर्मा, डॉ. विभा सिंह, डॉ. भंवरलाल जैन, डॉ. डी.आर. मेहता ने अपना रचनात्मक योगदान दिया। विशेष सहयोग गांधी भवन न्यास के सचिव दयाराम नामदेव और डॉ. नारायण व्यास, अश्विन झाला और आवरण चित्र सहित संपूर्ण रेखाचित्रों का सहयोग संदीप राशिनकर ने विशेष रूप से इस विशेषांक हेतु उपलब्ध करायें। साथ ही गांधी रिसर्च फाउण्डेशन के प्रथम अध्यक्ष स्व. न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी का आलेख विशेष है। हम हमारे लेखकों के साथ आप चारों का भी इस विशेष सहयोग हेतु हृदय से आभारी है। आपको यह अंक कैसा लगा जरूर अपनी प्रतिक्रिया से व्यक्त करायें। होली पर्व और नवसंवत्सर विक्रम संवत 2077 की मंगलमय शुभकामनाएँ।

"रवीन्द्रनाथ टैगोर कहते हैं 'हजारों दीन-दुखियों की झोपड़ियों में उन्हीं के समान वे आये उनमें उन्हीं की भाषा में बातें की। उन्होंने जो कहा वह खरा सत्य था, शास्त्रों के उद्धरण नहीं। इसलिए भारत की जनता द्वारा उन्हें दिया गया 'महात्मा' ही उनका सच्चा नाम है। दूसरा कौन है जिसने उनके समान सारे भारतीयों को अपना परिजन समझा हो? सत्य से सीधा संबंध स्थापित होने पर आत्मा की दबी हुई शक्तियां फिर से जागृत हो उठती है।"

-भँवरलाल श्रीवास

आलेख

कलात्मक गांधी और गांधी की कला

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

कलात्मक होना नैसर्गिक होता है। फिर भी नैसर्गिकता उस कृतित्व में स्वत: अभिव्यक्त होती है जो कृतित्व आपके व्यक्तित्व की पहचान को गढ़ता है। कृतित्व की भिन्नता से कला की नैसर्गिकता अभिन्न बनी रहती है। इन अर्थों में महात्मा गांधी एक कलात्मक राजनीतिज्ञ थे। प्रख्यात कलाकार नंदलाल बोस ने लिखा था कि गांधीजी का जीवन कलाकारों की प्रेरणा कुंजी है। वे हमारी तरह पेशेवर कलाकार न हों किन्तु वे सच्चे कलाकार हैं। उन्होंने अपना पूरा जीवन अपने व्यक्तित्व को गढ़ने में और उस व्यक्तित्व के माध्यम से समाज को उनके जीवन मूल्यों से श्रृंगारित करने में लगाया। उनका ध्येय मनुष्य की माटी से ईश्वर को निर्मित करने का था।

गांधीजी को कला के परिप्रेक्ष्य में समझने के कई आयाम हैं। उनके कला संबंधी विचार लिखित रूप में बहुत अधिक उपलब्ध नहीं है लेकिन सुंदरता तथा कला के संबंध में उन्होंने अपने विचार समय-समय पर व्यक्त किए हैं। साहित्य, संगीत तथा चित्रांकन के बारे में उनका दृष्टिकोण स्पष्ट है तथा विशेष रूप से गुजराती व अंग्रेजी में उनके द्वारा प्रभूत लेखन किया गया है।

गांधीजी सीधे सरल और विनयी व्यक्ति थे तथा जटिलता के नहीं बल्कि सहज सम्प्रेषणीयता के पक्षधर थे। उनका मानना था कि मनुष्य और कला का सहचर्य होना चाहिए। यह सहचर्य मनुष्य के आचरण को सहज बनाता है। यह तथ्य अपने स्थान पर पूरी तरह सत्य है कि गांधीजी की प्रतिबद्धता भारत को स्वतंत्रता दिलाने के प्रति थी तथा अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वे जो यात्राएं करते थे, उन यात्राओं के दौरान कलाकारों से उनका संवाद होता था तथा वे अपने विचार भी कला के संबंध में तथा उन कलाकारों की कृतियों के संबंध में व्यक्त करते थे।

महात्मा गांधी ने अनेक अवसरों पर शांति निकेतन का प्रवास किया तथा गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर से उनका बहुत महत्वपूर्ण संवाद होता रहा। रवीन्द्रनाथ टैगोर के भाई तथा प्रख्यात कलाकार अवनीन्द्रनाथ टैगोर भारतीय कला में स्वदेशी के विचारों के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने सन् 1905 में भारत माता शीर्षक से, भारत माता का एक सुप्रसिद्ध चित्र बनाया था। गांधीजी उनके इस कार्य से बड़े प्रभावित थे। नन्दलाल बोस, अवीन्द्रनाथ टैगोर के शिष्य थे जिनसे गांधीजी की निरंतर भेंट हुई। नन्दलाल बोस ने शांति निकेतन की कलावीथिका में प्रदर्शित कलाकृतियों से गांधीजी को रूबरू कराया। यहां यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि गांधीजी की रूचि न केवल भारतीय कलाकृतियों में रही बल्कि उन्होंने वेटिकन सिटी की कलादीर्घाओं में संरक्षित कलाकृतियों के संग्रहों को देखा, वहां के भित्तिचित्रों का अवलोकन किया और माइकल एंजिलो जैसे महान कलाकार के कार्य को देखते हुए वे भावुक भी हुए। अपनी युवावस्था में सन् 1890 में जब वे पेरिस गए तब उन्होंने नात्रोदम कैथेड्रल की वास्तुकला और उसकी आंतरिक सज्जा को देखा जिससे वे बहुत प्रभावित हुए। अपनी आत्मकथा में उन्होंने इसका उल्लेख किया है।

नन्दलाल बोस का यह कथन बड़ा सटीक है। गांधीजी ऐसे शिल्पी थे जिन्होंने मनुष्य के देवत्व की सृष्टि की। गांधीजी का यह दिव्य व्यक्तित्व न केवल भारत के बल्कि विश्व के विभिन्न कलाकारों ने अपने-अपने ढंग से उरेहा। वर्ष 1918 में जब शांति निकेतन के प्रख्यात कलाकार मुकुल डे सरोजनी नायडू के साथ गांधीजी से मिले और उनसे, उनका व्यक्तिचित्र बनाने के लिए सहमति चाही तो गांधी जी केवल मुस्कुराए और वे अपने चित्रांकन के लिए ऐसे प्रस्तुत हुए जैसे वे स्वाभाविक रूप से रहते थे, सहज, सरल और मुस्कुराते हुए तथा जब उनका यह व्यक्तिचित्र उनके सामने रखा गया तब उन्होंने मुकुल डे से कहा कि क्या मैं वास्तव में ऐसा ही लगता हूं क्योंकि जिस कोण से आप देखते हो उससे मैं अपने आपको नहीं देख सकता। पैंसिल से किए गए इस रेखांकन में मुकुल डे ने गांधीजी की शिखा भी बनाई थी तथा उनके अनुरोध पर गुजराती में हस्ताक्षर भी किए थे। पूरे हस्ताक्षर में उन्होंने लिखा था 'मोहनदास गांधी, फागुन बदी 3 संवत 1975'। गांधीजी की इस मुस्कान में उनकी कलात्मकता छुपी हुई थी। उन्होंने एक बार सुप्रसिद्ध कलाचिंतक दिपीप रे से कहा था, 'जब मैं यह दावा करता हूं कि मैं एक कलाकार हूं तो इसकी अच्छी अभिव्यक्ति, मेरे लिए अनिवार्य रूप से मेरी मुस्कान है। इसके बाद मुकुल डे ने दो बार और गांधीजी के व्यक्तिचित्र बनाए। दूसरी बार सन् 1928 में साबरमती में जहां उन्होंने गांधीजी के चार अलग-अलग व्यक्तिचित्र बनाए वहीं उनका एक चित्र कस्तूरबा गांधी के साथ भी बनाया। इसके पश्चात सन् 1945 में पूना में जहां उन्होंने पैंसिल, क्रेयॉन, पेन तथा स्याही से गांधीजी के व्यक्तिचित्र निर्मित किए।

गांधीजी शांति निकेतन के कलाकारों के सान्निध्य में रहे और उनकी कलाकृतियों को उन्होंने गहराई से देखा। शांति निकेतन के कलाकार तथा प्रख्यात चित्रकार वेंकटप्पा के द्वारा बनाए गए ऋतु केन्द्रित चित्रों की प्रदर्शनी उन्होंने ऊटी में देखी और फिर यंग इंडिया में उन्होंने लिखा कि गहरी अवलोकन शक्ति तथा रंग और रेखा पर उनके असाधारण अधिकार को देखकर

मैं बहुत प्रभावित हूं। उन्होंने ऊषा, प्रात:काल और संध्याकाल के जो चित्र बादलों के साथ निर्मित किए हैं वे अपूर्व शांति का एक वातावरण रचते हैं और इस तथ्य को पुष्ट करते हैं कि उन्होंने प्रकृति को पढ़कर उससे अपने आपको किस तरह एकाकार कर लिया है। उन्होंने वेंकटप्पा से कहा कि मैं तुम्हारे चित्रों को देखकर बहुत प्रसन्न हूं और मेरे आशीर्वाद तुम्हारे लिए हैं लेकिन मैं तुम्हें एक सुझाव देना चाहता हूं कि यदि तुमसे चरखा यह कहे कि क्या तुम उसे चित्रित कर सकते हो और चरखा एक ग्रामीण के जीवन के लिए क्या है, तुम यदि उसे चित्रित कर दो तो मैं और अधिक प्रसन्न हो जाऊंगा। अपनी खुशी को बढ़ाने के लिए मैं तुमसे यह अपील करता हूं।

वर्ष 1930 में जब गांधीजी अपने दांडी मार्च के कारण इस राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में उभरे तब नन्दलाल बोस ने उनका एक सुंदर काष्ठ अंकन 'बापूजी' शीर्षक से 12 अप्रैल 1930 को बनाया था। इस अंकन में गांधीजी के 78 अनुयायी भी उनके साथ थे। डांडी मार्च के समय गांधीजी के जो चित्र बनाए गए उनमें विनायक एस. मासोजी के द्वारा बनाया गया चित्र बड़ा प्रसिद्ध हुआ। इस अंकन में गांधीजी के बंदी बनाए जाने की तुलना जीसस क्राइस्ट के बंदी बनाए जाने से की गई थी और इसका शीर्षक था 'दि मिडनाइट अरेस्ट।' जब इस चित्र को राजकुमारी अमृत कौर के साथ गांधीजी ने कांग्रेस की आर्ट गैलेरी में देखा तब राजकुमारी अमृत कौर ने उनसे पूछा कि क्या यह केवल कलाकार की कल्पना है या इसमें कहीं कुछ साम्य है तब गांधीजी ने मुस्कुराते हुए कहा वास्तव में यह ऐसा ही है।

गांधीजी जब गोलमेज सम्मेलन में लंदन गए तब वहां एक अमेरिकन शिल्पज्ञ जो डेविडसन ने उनका एक शिल्प बनाया। जो डेविडसन ने उस समय की गांधीजी की भावभंगिमाओं के संबंध में विस्तार से लिखा है। उसने लिखा है कि गांधीजी ने कहा कि जो, मैं समझता हूं कि तुम मिट्टी से नायक गढ़ देते हो।

गांधीजी कला को, कला के लिए नहीं मानते थे। उनके मन में कला के प्रति बड़ा सम्मान था। लेकिन उनका यह भी मानना था कि कला के पास जब कोई प्रेरक शक्ति नहीं होगी तब तक वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकती। उन्होंने अपने अधिकतर चित्रों पर जो हस्ताक्षर किए हैं उनके साथ उन्होंने एक छोटा सा संदेश भी प्राय: लिखा है। 4 दिसम्बर 1931 को उनका एक स्कैच बनाया गया जब उस पर उन्होंने लिखा, 'सत्य ईश्वर है'। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि गांधीजी का व्यक्तित्व बड़ा सुदर्शन था और इसलिए वे कलाकारों विशेष रूप से फोटोग्राफर्स के लिए बड़े आकर्षण का केन्द्र थे। वर्ष 1936 में जब लखनऊ में कांग्रेस अधिवेशन हुआ तब उन्होंने स्वत: नन्दलाल बोस को वहाँ की पवैलियन में चित्र बनाने के लिए आमंत्रित किया और नन्दलाल बोस अपने शिष्यों के साथ शांति निकेतन से आए और उन्होंने बहुत सरल रूप में रीड, बांस व लकड़ी की कलात्मक कृतियों से उस पैवेलियन को सज्जित किया। वहां उन्होंने भारतीय इतिहास की प्रमुख घटनाओं को भी चित्रित किया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए 28 मार्च 1936 को गांधीजी ने कहा कि मेरी दृष्टि में यह प्रदर्शनी पहली बार ग्रामीण भारत की अवधारणा को स्पष्ट करती है तथा इसका यह उद्देश्य है कि जिन वस्तुओं को भले हम शहर में रहने वाले लोग पसंद न करते हों किन्तु उनका उपयोग ग्रामजन कर सकते हैं और उसका लाभ हमें मिल जाता है। उन्होंने नन्दलाल बोस और उनके शिष्यों को इस ग्रामीण जगत के शिल्प को प्रस्तुत करने के लिए बधाई दी और यह विश्वास व्यक्त किया कि उनके इस कार्य से बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

नन्दलाल बोस के साथ गांधीजी का विशेष लगाव था। उन्हें एक बार फिर फैज़पुर में कांग्रेस पैवेलियन को सज्जित करने के लिए गांधीजी ने बुलाया। जब नन्दलाल बोस ने उनसे कहा कि वे चित्रकार हैं कोई शिल्पज्ञ नहीं है तब गांधीजी ने उन्हें हास्यपूर्वक लिखा कि वे किसी रेखाचित्र बनाने वाले विशेषज्ञ को नहीं चाहते, एक ऊष्मा से भरपूर सारंगी वादक को चाहते हैं। तब नन्दलाल बोस ने आकर उन सामान्य वस्तुओं से जो स्थानीय स्तर पर उपलब्ध थीं पैवेलियन को सजया और तब अपने भाषण में नन्दलाल बोस की प्रशंसा करते हुए गांधीजी ने कहा कि वे एक सृजनशील कलाकार हैं जबकि मैं नहीं हूं। ईश्वर ने मुझे कला को अनुभव करने की शक्ति तो दी है किन्तु इसकी अभिव्यक्ति के लिए मुझे कोई समर्थ अंग नहीं दिए। उन्होंने नन्दलाल बोस के द्वारा बनाई गई ग्राम्य कलाकृतियों की सराहना की और कहा कि इस प्रकार के हस्तशिल्पों का निर्माण कर अनेक बेरोजगार को रोजगार मिल सकता है और इस कला से हम यह जान सकते हैं कि किस प्रकार अवशिष्ट से सम्पन्नता को निर्मित किया जा सकता है (How to turn waste into wealth)। उन्होंने यह जिज्ञासा भी प्रकट की कि नन्दलाल बोस यह बताएं कि वे अपनी सज्जा सामग्री कहां-कहां से तथा कितने खर्च में एकत्रित करते हैं। गांधीजी ने प्रतिमाह दो सौ रूपये की वित्तीय सहायता भी नन्दलाल बोस के शांति निकेतन के स्कूल के लिए उपलब्ध कराई। वर्ष 1938 में हरिपुरा कांग्रेस की पैवेलियन की सज्जा भी ग्रामीण कलाकारों के साथ नन्दलाल बोस ने पटुआ के द्वारा की। उन्होंने ऐसे पटुआ के तिरयासी पैनल्स तैयार किए जिन्हें हरिपुरा पोस्टर्स के नाम से जाना जाता है। इनके विषय दैनंदिन के ग्राम जीवन के तथा आसपास की परिस्थितियों के विषय थे। इनमें गांधीजी की ग्रामीण अवधारणा स्पष्ट होती थी।

पोलिश कलाकार फेलीकस टोपोलिस्की ने वर्ष 1944 से 1946 के बीच गांधीजी के अनेक स्कैच बनाए जिनमें उनकी कई भंगिमाएं हैं। शांति निकेतन की अपनी अंतिम यात्रा में गांधीजी ने अवीन्द्रनाथ टैगोर के द्वारा बनाए गए उन खिलौनों को देखा जो अवशिष्ट वस्तुओं तथा सूखी टहनियों से बनाए गए थे। उस समय अवीन्द्रनाथ टैगोर कोलकाता में बीमार पड़े थे। तब गांधीजी ने अपने सचिव प्यारेलाल को उनके पास अपने संदेश के साथ भेजा और यह कामना की कि वे शीघ्र स्वस्थ हों और देश की सेवा करें। इन प्रसंगों से यह स्पष्ट होता है कि गांधीजी ने कभी कला को कला के लिए तक सीमित नहीं किया अपितु वे कलाकारों के और कलाओं के संरक्षक बने। उनके कला दर्शन का सार आत्मा और उससे जुड़े मनुष्य के अस्तित्व के बीच समरसता को स्थापित करना था।

गांधीजी ने इस संदर्भ में भी विचार किया कि सामग्री या कंटेन्ट प्रधान है या फॉर्म अथवा स्वरूप तथा उन्होंने स्वरूप को प्रधान माना, उसे अमरता के समान माना तथा ऑस्कर वाइल्ड का उदाहरण देते हुए कहा कि जब वे इंग्लैण्ड में थे तो उसकी बहुत चर्चा होती थी तथा वाइल्ड ने स्वरूप में कला की सर्वोच्चता का अनुभव किया तथा वह स्वरूप ही था जिसके माध्यम से उसने अमरता में सौंदर्य को प्रतिष्ठित किया।

कला को कला के लिए, कहने वालों को उन्होंने कड़ा संदेश दिया। उन्होंने कहा कि कला केवल साध्य तक पहुंचने का साधन है जिस पर पहुंचने का हम सबका लक्ष्य होना चाहिए।

गांधीजी की सौंदर्य दृष्टि का सत्य, सत्याग्रह में निहित था। दिनांक 20.03.1921 के यंग इंडिया में उन्होंने लिखा कि सत्याग्रह, सत्य है तथा सत्य आत्मा है। एक अन्य स्थान पर उन्होंने लिखा कि मैं सत्य में और सत्य के माध्यम से सौन्दर्य देखता हूं। वे मानते थे कि सभी कलाएं सत्य पर आधारित हैं और उन्होंने दृढ़तापूर्वक यह कहा कि मैं उन तमाम सुंदर वस्तुओं को खारिज करता हूं जिनका आधार असत्य है। वे कला में सत्य को देखने के लिए किसी बाहरी उपादान की उपस्थिति आवश्यक नहीं मानते थे। उनके लिए अपने आसपास का उल्लास ही पर्याप्त था जो आत्मा के सत्य को जीवंत रखता है। सत्य और आत्मा दोनों की वे साथ-साथ सत्ता के अस्तित्व को तो मानते थे उनकी पक्षधरता केवल उसी सुन्दरता के प्रति थी जो सत्य पर आधारित है। उनका मानना था कि हमने प्राय: यह मान लिया है कि कला और जीवन की स्वतंत्रता अलग-अलग है। कला जीवन की पवित्रता से पृथक है लेकिन मैं यह कह सकता हूं कि जीवन की पवित्रता कला का सर्वोच्च तथा सबसे बड़ा सत्य है।

सुकरात का उदाहरण देते हुए उन्होंने यह भी कहा कि सत्य की भौतिक अभिव्यक्ति सुंदर हो या आवश्यक नहीं है। अपने समय में सत्य के लिए संघर्ष करने वाला सबसे बड़ा व्यक्ति सुकरात था लेकिन वह ग्रीस में अपने समय के सबसे कुरूप व्यक्ति के रूप में जाना जाता था।

सौन्दर्य के बारे में उनका यह मानना था कि हमें सौन्दर्य के अनुवादक नहीं चाहिए। सौन्दर्य से बिना किसी माध्यम से हमारा साक्षात्कार होना चाहिए। उनका प्रश्न था कि किसी चित्र को समझने के लिए हमें किसी समीक्षक की आवश्यकता क्यों हो? उन्होंने लिखा है कि वेटिकन में जब अपना आंचल संवारते उन्होंने एक अर्धनग्न स्त्री की मूर्ति देखी और वेल्लूर के एक प्राचीन मंदिर में बोलती हुई पाषाण प्रतिमा देखी तो वे खड़े के खड़े रह गए। उनकी अभिव्यक्ति है कि मुझे लगा जैसे वेल्लूर में उस प्रतिमा के साथ संवाद कर रहा हूं।

गांधीजी ने प्रकृति की सुंदरता में कला के दर्शन किए हैं। वे कहते थे कि जिस तरह प्रकृति अपने आपको सहजता से, सीधे-सीधे अभिव्यक्त करती है वैसी ही अभिव्यक्ति कला की होना चाहिए। कला को प्रकृति की तरह संप्रेषणीय होना चाहिए तथा उसकी भाषा प्रकृति की भाषा होना चाहिए। वे विशिष्टता के विरूद्ध थे। वे कहते थे कि जिस प्रकार बिना किसी विशिष्टता के प्रकृति सभी के लिए है उसी तरह कला भी सभी के लिए होना चाहिए। किसी विशिष्टता के कारण कला की परिधि सीमित नहीं होना चाहिए। उनका मानना था कि प्रकृति ने अपने आपको सभी के लिए सुलभ बनाया है और उनका प्रश्न था कि क्या कोई चित्र, तारों से भरपूर आकाश, जादुई समुद्र और महान पहाड़ों के सौन्दर्य से बेहतर हो सकता है? क्या किसी चित्रकार के चित्र की तुलना ऊषा के सिन्दूरी तथा दोपहर के स्वर्णिम रंग से की जा सकती है। उनका मानना था कि भाषा शेक्सपियर के समीक्षक जॉनसन की नहीं बल्कि डिकिन्स की वह भाषा होनी चाहिए जो सहज और संप्रेषणीय है।

गांधीजी ने कला विषयक विचारों को जानने के लिए उनका व रोम्या रोलाँ के बीच हुए संवाद को जानना महत्वपूर्ण है। रोम्या रोलाँ से जब गांधीजी मिले और रोम्या रोलाँ ने उनसे सत्य के संबंध में चर्चा की तब उन्होंने कहा कि सत का अर्थ सत्य है तथा यह सत्य उस चित्र में भी निहित है जो उसके आधार पर बनाया गया है। जैसा कि पूर्व में कहा गया गांधीजी सहजता के आराधक थे। उन्होंने एक बार कहा था कि वनस्पतियों में रंगों के सौंदर्य को क्यों नहीं देख सकते? आप सुंदरता और उपयोग को अलग-अलग क्यों देखते हैं? वास्तव में ये दोनों एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित हैं। रोम्या रोलाँ से उन्होंने कहा कि आनंद का अर्थ उसके अतीन्द्रीय होने में निहित है।

गोलमेज सम्मेलन से लंदन से लौटते हुए वे जब प्रख्यात चिंतक रोम्या रोलाँ से मिले तब उनसे उन्होंने संगीत के बारे में न केवल विस्तृत चर्चा की बल्कि उनसे बीथोवन संगीत की पांचवीं सिम्फनी सुनाने को कहा। रोम्या रोलाँ ने उन्हें बीथोवन संगीत सुनाया। फिर जब उन्होंने पूछा कि आपको यह संगीत कैसा लगा तो हास्यपूर्वक ठहाका लगाते हुए गांधीजी ने कहा कि जब सब इसे अच्छा कहते हैं तो यह अच्छा ही होगा। यह घटना रोलाँ ने अपनी डायरी में लिखी है।

संगीत के संबंध में चर्चा करते हुए उन्होंने रोम्या रोलाँ से कहा कि संगीत सच्चिदानंद है। वह जीवन की समरसता से उत्पन्न होता है लेकिन ऐसे संगीत को उत्पन्न करने की कला बहुत कम लोगों के पास होती है और जिनके पास होती है वे इस आनंद को प्राप्त कर लेते हैं अन्यथा कृत्रिम और गढ़ी हुई आवाज से भी संगीत उत्पन्न किया जा सकता है लेकिन वह संगीत सच्चा संगीत नहीं है। संगीत प्रेरणा है, वह आनंद को स्रोत है।

गांधीजी ने संगीत के बारे में कहा कि सुगंध संगीत का रूप है और सच पूछिए तो संगीत प्राचीन और पवित्र वस्तु है। हमारे सामवेद की कथाऐं संगीत की खान है तथा कुरान शरीफ की एक भी आयत ऐसी नहीं है जो बिना सुर के गाई जा सकती हो तथा इसाई धर्म के डेविड के 'साम' अथवा गीत सुनने पर तो ऐसा लगता है जैसे हम सामवेद का गान सुन रहे हों। उन्होंने कहा कि यदि हम करोड़ों घरों में संगीत का प्रवेश चाहते हैं तो हमें खादी पहननी होगी और चरखा चलाना होगा। क्योंकि चरखे का संगीत तो कामधेनु है, करोड़ों का पेट भरने का साधन है तथा चरखा चलने का संगीत ही सच्चा संगीत है।

गांधीजी ने लोक और कला को पृथक नहीं किया। वे हर प्रकार की शास्त्रीयता के विरूद्ध थे। न तो वे लोक में शास्त्रीयता के पक्षधर थे और न ही कला में वे विशिष्टता को चाहते थे। उनका यह मानना था कि लोक और कला दोनों एक-दूसरे पर आश्रित हैं।

गांधीजी का सौन्दर्य शास्त्र उन सहज सुलभ उन वस्तुओं पर आधारित था जो लोक की नैसर्गिन देन है। कमलादेवी चट्टोपाध्याय जिन्होंने बुनकरों और हस्तशिल्पियों के लिए जीवनभर कार्य किया उनके मूल में गांधीजी की प्रेरणा थी। कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने अपने संस्मरणों की पुस्तक 'इनर रेसेसेज, आउटर स्पेसेज - मेमॉयर्स' में लिखा है कि गांधीजी से मिलने के बाद ही मैं रोजमर्रा के जीवन में हस्तशिल्प के संबंधों की पहचान कर पाई और उसका परिणाम यह हुआ कि ऐसे हस्तशिल्पों के स्पर्श मात्र से ही मुझे असीम आनंद का अनुभव होने लगा। मुझे लगा जैसे उनमें संगीत की वह गूंज है जिसे आप अपने स्वयं के अंदर सुनते हैं। कमलाजी ने एक प्रसंग का वर्णन भी किया है जब एक बार गांधीजी आइरिश कवि और थियोसॉफिस्ट डॉ. जेम्स कंजिस के साथ बैठे हुए थे तथा उनके सामने कुछ हस्तशिल्प बिखरे हुए थे। उस समय गांधीजी ने जोर देकर कहा कि हमें अपने हाथों से जरूर कुछ रचना चाहिए जो हमारी रचनात्मक इच्छा को व्यक्त करेगा। वे हस्तशिल्प की हमारी विरासत के संरक्षण के प्रति भी चिंतित थे। उनकी दृष्टि में लोक कलाकार जीवन का सर्जक था और उसकी सहजता ही से पल्लवित करती थी। वे महिलाओं की

रचनात्मकता को देखकर कहते थे कि वे गोबर से, मिट्टी से आकृतियां उकेरती हैं तथा घर की दीवारों को सजाती हैं। घर में सुंदर मटकियां रखती हैं तथा ऐसे छल्लेदार साफे बनाती हैं जिस पर इन मटकियों को रखा जाता है। दो-तीन मटकियों को अपने सिर पर संभाले वह पानी भरकर लाती हैं, मनकों/कौड़ियों की माला बनाती है, जब उनके मवेशी चर रहे होते हैं तब वह किंगरी बजाती है। वे स्वयं अपना श्रृंगार कर उल्लसित होती हैं, नाचती हैं तथा अल्पना और रांगोली बनाती हैं। चौक पूरती हैं। यह नारियों की नैसर्गिक कलात्मक रचनात्मकता है। यहां वे भारतीय स्त्रियों की रचनात्मकता के माध्यम से अपनी कलादृष्टि स्पष्ट करते हैं।

गांधीजी ने, जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया गया कला को लेकर कोई अलग से विमर्श नहीं किया है। उन्होंने अपने कला संबंधी विचार यंग इंडिया, नवजीवन, हरिजन तथा इंडियन ओपिनियन जैसे पत्रों में लिखे गये लेखों तथा सम्पादकियों में व्यक्त किए हैं।

गांधीजी की कलादृष्टि का सार यही है कि लोक और कला भिन्न-भिन्न नहीं है, नैसर्गिक सौन्दर्य ही सच्चा सौन्दर्य है जिसको समझने के लिए, अनुभव करने के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं है, सम्प्रेषणीयता सर्वोपरि है तथा विशिष्टता के स्थान पर सहजता तथा सर्वसुलभता की अपेक्षा कला के स्वभाव में है।

गांधीजी का व्यक्तित्व और कृतित्व इतना प्रभावी था कि विभिन्न दृश्य और श्रव्य कलाओं के अनुशासनों ने उन्हें अभिव्यक्त किया। अजानुबाहु गांधी का तपोनिष्ठ व्यक्तित्व अद्‌भुत था। उसकी सहज गरिमा का प्रकाश इस तरह चारों ओर व्याप्त हो गया था कि जिसकी परिधि में सभी आए।

गांधीजी पर पहली फिल्म वर्ष 1963 में ब्रिटेन में 'नाइन ऑवर्स टू रामा' नाम से बनी जिसका निर्देशन मार्क रॉबसन ने किया। भारत में रिचर्ड एटनबरो की गांधी नामक फिल्म ने अपूर्व लोकप्रियता प्राप्त की। यह वर्ष 1982 में बनी। बाद में 1996 में सुप्रसिद्ध फिल्म निर्देशक श्याम बेनेगल ने 'मेकिंग ऑफ महात्मा' नामक फिल्म बनाई। 'गांधी विरुद्ध गांधी' नामक स्टेज प्रदर्शन वर्ष 1995 में हुआ तथा ललित कला अकादमी ने भी वर्ष 1996 में पपेट्री के द्वारा एक कार्यक्रम बनाकर प्रस्तुत किया। गांधी पर एक नाटक वर्ष 1997 में खेला गया जो बड़ा विवादास्पद रहा। प्रदीप दलवी के द्वारा गुजराती में लिखे इस नाटक का नाम था, 'मी नाथूराम बोलतोय'। गांधी की मृत्यु के नाम से गिरधर राठी ने हंगरी के लेखक - नाटककार नेमेथ लारली का नाटक अनुदित किया। एम.के.रैना तथा भानु भारती जैसे रंगकर्मियों की चिंता के केन्द्र में गांधी रहे।

गांधीवाद से प्रभावित फिल्में भी बनाई गईं जिनमें 'अछूत कन्या', 'दुनिया न माने' तथा 'डॉ. कोटनिस की अमर कहानी' जैसी फिल्में हैं जो चालीस के दशक में बनाई गई।

हाल ही में आशुतोष गोवरीकर ने एक फिल्म 'स्वदेश' शीर्षक से बनाई जिसका आरंभ गांधीजी के द्वारा कहे गए वाक्यों से होता है। यह कहा जाता है कि यह फिल्म रजनी बक्षी की कृति 'बापू कुटि' से प्रभावित होकर बनाई गई थी। इस फिल्म में एक प्रवासी भारतीय दम्पत्ति के द्वारा ग्रामीणजनों के उपयोग के लिए बनाए गए पैडल पॉवर जनरेटर के संबंध में कहानी को बुना गया था। वर्ष 2005 में एक फिल्म गांधीजी पर बनी 'मैंने गांधी को नहीं मारा' लेकिन गांधीवाद पर सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त करने वाली वर्ष 2006 में बनाई गई फिल्म थी, 'लगे रहो मुन्ना भाई' जिसमें गांधीगिरी को चित्रित किया गया था।

गांधीजी पर पैरोडी भी बनी। एम टी.वी. कार्टून में गांधीजी के क्लोन को मुख्य पात्र बनाया गया। इसी तरह अमेरिकन कार्टून 'टाइम स्क्वेड' में एक एपिसोड गांधीजी पर बनाया गया जिसमें वे भारत को स्वतंत्रता दिलाने वाले नेता के स्थान पर अपने जीवन यापन के लिए डांस को चुनते हैं। पश्चिम में इस तरह की कई पैरोडीज गांधी पर बनीं। उन्हें 'सिविलाईजेशन' शीर्षक से बनाए गए एक वीडियो गेम का पात्र बनाया गया जिसमें वे भारतीय सभ्यता के नेतृत्वकर्ता दर्शाए गए हैं।

महान संगीतज्ञों ने गांधीजी को अपने ढंग से याद किया। उस्ताद अलाउद्‌दीन खां ने गांधी बिलावल, पंडित रविशंकर ने मोहन कौंस, बाल मुरीलकृष्ण ने मोहन गांधी, कुमार गंधर्व ने गांधी मल्हार और उस्ताद अमजद अली खां ने बापू कौंस जैसे राग बनाए।

पश्चिम में गांधी के सत्याग्रह पर एक ओपेरा फिलिप ग्रॉस ने बनाया।

नन्दलाल बोस, रविशंकर रावल, कनु देसाई, टोपोल्स्की, धीरेन गांधी और हैदर रजा से लेकर अतुल डोडिया तक तमाम छोटे बड़े कलाकारों ने गांधीजी को रुपायित किया। बीसवीं सदी में गांधीजी सर्वाधिक चित्रित हुए। नन्दलाल बोस के बाद की पीढ़ी के कलाकारों में, के.के. हेब्बार, एम.एफ. हुसैन, के.जी. सुब्रमण्यम, गुलाब मोहम्मद शेख और नीलिमा शेख सहित सभी जाने-माने कलाकारों ने गांधीजी को चित्रित किया, रेखांकित किया। गांधीजी का जो रेखांकन उनके पीछे बैठी हुई मुद्रा का है वह उनका सर्वाधिक प्रचलित रेखांकन है।

गांधीजी के अंकनों को लेकर प्रदर्शनियां हुईं। सत्याग्रह के सौ वर्ष पूर्ण होने पर वर्ष 2006 में एक प्रदर्शनी लगी जिसमें दक्षिण अफ्रीका तथा भारत के 67 कलाकारों ने भाग लिया। इनमें के.जी. सुब्रमण्यम और गुलाम मोहम्मद शेख जैसे कलाकार शामिल थे। इस प्रदर्शनी में हाबू शाह तथा वॉल्टर डिसूजा का लकड़ी व धातु से निर्मित सत्याग्रह शीर्षक शिल्प प्रदर्शित किया गया। इसी तरह लकड़ी व रुई से कृष्णमाचारी बोस द्वारा निर्मित शिल्प भी प्रदर्शित किया गया। सहमत नामक संस्था ने 1995 में 'पोस्ट कार्ड्स ऑफ गांधी' शीर्षक से एक प्रदर्शनी अहमदाबाद, बैंगलोर, मुम्बई, कोलकाता, चैन्नई तथा देहली में लगाई जिसमें विवान सुन्दरम्, जोगेन चौधरी, सुधीर पटवर्धन और जहांगीर सबावाला जैसे चित्रकारों के कार्य सम्मिलित थे। इसी तरह एक त्रिदिवसीय प्रदर्शनी 22 से 24 अगस्त तक नई दिल्ली में आयोजित की गई। यह गांधी व पर्यावरण पर केन्द्रित थी। प्रगति मैदान में आयोजित इस प्रदर्शनी में स्मृति अरोरा का ज्वाइंट स्पिनिंग व्हील भी प्रवेश द्वार पर लगाया गया।

शिल्प और मूर्ति में गांधीजी को जो डेविडसन, देवीप्रसाद राय चौधरी तथा राम व्ही. सुतार ने ढाला। दांडी मार्च का सुंदर शिल्पांकन सरदार पटेल मार्ग, नई दिल्ली के चौराहे पर दिखाई देता है जिसे देवी प्रसाद राय चौधरी ने बनाया था। संसद भवन के सामने राम सुतार के द्वारा बनाई गई गांधीजी की भव्य कांस्य प्रतिमा उनके व्यक्तित्व को भलीभांति अभिव्यक्त करती है। गांधीजी की ऐसी आवक्ष प्रतिमाएं उनके जन्म के सौ वर्ष पूर्ण होने पर भारत के द्वारा रूस, इंग्लैण्ड, मलेशिया, फ्रांस, इटली, अर्जेन्टीना, बारबोडास और काराकस को भेंट की गई। प्रगति मैदान में इंटरनेशनल ट्रेड फेयर ऐश्विया-72 के अवसर पर इस प्रतिमा के आकार से दुगने आकार की प्रतिमा स्थापित की गई। दिव्यांग बच्चों के लिए सेन्टूर, बंगलुरु और नोएडा सहित अन्य स्थानों

में गांधीजी की सुंदर प्रतिमाएं स्थापित की गईं।

अमेरिका के विभिन्न नगरों में गांधीजी की अनेक प्रतिमाएं स्थापित की गईं जिनमें प्रमुख है यूनियन स्क्वेयर सेन्टर, न्यूयॉर्क, जूनियर सेन्टर मार्टिन लूथर किंग सहित अटलांटा, ह्यूसटन, सेन फ्रांसिस्को, सॉल्ट लेक सिटी वे सेन्ट लुईस में स्थापित प्रतिमाएं शामिल हैं। वर्ष 2000 में खड़े हुए गांधी की एक सुंदर कांस्य मूर्ति जो गौतम पॉल के द्वारा निर्मित की गई उसे स्थापित किया गया। अमेरिका में बॉब क्लायट, जोसेफ डेलेप, मार्टिन वोगेन तथा एम.एच. हॉग ने गांधीजी के अनेक मूर्तिशिल्प गढ़े। वर्ष 2003 में गांधीजी का एक शानदार कांस्य शिल्प जोहन्सबर्ग के गांधी चौराहे पर उनके जन्मदिवस 2 अक्टूबर को स्थापित किया। 2.5 मीटर लम्बे इस मूर्तिशिल्प में गांधीजी को एक युवा वकील के रूप में सूट व टाई के ऊपर पहने गाउन व हाथ में रखी पुस्तकों के साथ ढाला गया है। ऑस्ट्रेलिया के केनबरा सहित विभिन्न देशों के नगरों में गांधीजी की अनेक प्रतिमाएं लगी हैं।

गांधीजी का लेखन विपुल है। वर्ष 1884 से 1948 के बीच उन्होंने अपना यह लेखन हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती में किया तथा उन्होंने एक लाख से अधिक पत्र तथा लगभग पचास हजार पृष्ठ लिखे। जहाज में वर्ष 1909 में इंग्लैण्ड से दक्षिण अफ्रीका की समुद्री यात्रा के दौरान उन्होंने 'हिन्द स्वराज' जैसी कृति लिखी जिसमें आधुनिक सभ्यता की आलोचना है। स्टीमर पर उपलब्ध स्टेशनरी का उपयोग करते हुए वे लिखते रहे जब दाएं हाथ से लिखना कठिन हो जाता था तो वे बाएं हाथ से लिखते थे और यह कृति उन्होंने दस दिन में पूर्ण की जिसकी भूरि भूरि प्रशंसा टॉलस्टॉय ने की।

गांधीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व को लेकर प्रभूत साहित्य रचा गया। इसमें उपन्यास, कविता, कहानियां, आलेख, निबंध सभी शामिल हैं। यदि हिन्दी साहित्य की ही चर्चा करें तो गिरिराज किशोर के द्वारा वर्ष 1999 में लिखे गए 'पहला गिरमिटिया' नामक उपन्यस का नाम सामने आता है। सोहनलाल द्विवेदी ने उन पर 'युगान्तर गांधी' तथा सियाराम शरण गुप्त ने 'बापू' जैसी कविताएं उन पर लिखीं। दादा माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने अप्रितम गद्य में गांधीजी को बांधते हुए कहा कि वह ऐसा चिंतक था जो चिंतन की घड़ियों को जब क्रियाशीलता से तौलता था तब वाणी से बोलता था। उनकी वाणी देश का सुहाग और भाषा का भाग्य लिखती थी। वह काव्य मानव नहीं मानव काव्य था। गांधीजी से प्रेरित होकर प्रेमचंद ने 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि' तथा 'कर्मभूमि' जैसे उपन्यास लिखे तथा जैनेन्द्र कुमार ने 'सुनीता' तथा भगवतीचरण वर्मा ने 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' जैसी औपन्यासिक कृति लिखी।

प्रख्यात कवि भवानी प्रसाद मिश्र ने गांधी पंचशती जैसा काव्य लिखा। हिन्दी में लिखे गए विस्तृत लेखन में से कुछ चुने हुए उदाहरण ही यहां दिए गए हैं। अंग्रेजी में भी उन पर उपन्यास लिखे गए। प्रख्यात अंग्रेजी लेखक राजा राव ने 'कथनपुरा' शीर्षक उपन्यास लिखा तथा 'दि काउ ऑफ दि बेरिकेट्स' में संकलित लघुकथाओं में उनके चिंतन को स्थान दिया। यह भी कहा जाता है कि राजा राव ने महात्मा गांधी की जीवनी भी लिखी। सुधीर कक्कड़ का उपन्यास 'दि सीकर' जो वर्ष 2007 में प्रकाशित हुआ में गांधी को अलग स्वरूप में चित्रित किया गया है। यह एक विलक्षण तथ्य है कि जहां एक ओर उन्हें प्रेमचंद जैसे प्रगतिशील लेखक चित्रित करते हैं तो वहीं दूसरी ओर मैथिलीशरण गुप्त जैसे आस्थावादी कवि उन्हें अपने काव्य में बांधते हैं। गांधीजी का लेखन विपुल है। वर्ष 1884 से 1948 के बीच उन्होंने अपना यह लेखन हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती में किया तथा उन्होंने एक लाख से अधिक पत्र तथा लगभग पचास हजार पृष्ठ लिखे। जहाज में वर्ष 1909 में इंग्लैण्ड से दक्षिण अफ्रीका की समुद्री यात्रा के दौरान उन्होंने 'हिन्द स्वराज' जैसी कृति लिखी जिसमें आधुनिक सभ्यता की आलोचना है। स्टीमर पर उपलब्ध स्टेशनरी का उपयोग करते हुए वे लिखते रहे जब दाएं हाथ से लिखना कठिन हो जाता था तो वे बाएं हाथ से लिखते थे और यह कृति उन्होंने दस दिन में पूर्ण की जिसकी भूरि भूरि प्रशंसा टॉलस्टॉय ने की।

गांधीजी एक निष्णात लेखक थे तथा उनके लिखे में बहुत कम संशोधन की आवश्यकता होती थी। उनके लेखन की यह विशेषता है कि उन्होंने कभी उस कार्य को करने के लिए नहीं कहा जो कार्य उन्होंने स्वयं न किया हो। वे साहित्य में संप्रेषणीयता के पक्षधर थे। उनकी भाषा बड़ी सरल और सहज थी। हिन्दी के उन्नयन के लिए उन्होंने काफी कार्य किया तथा मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति इंदौर में वे दो बार क्रमशः वर्ष 1918 तथा वर्ष 1935 में आए। उन्होंने 'इंडियन ओपिनियन', 'यंग इंडिया', 'नवजीवन' तथा 'हरिजन' जैसे पत्रों का सम्पादन किया। गांधीजी ने अपनी मातृभाषा गुजराती में प्रभूत लेखन किया फिर चाहे वह 'हिन्द स्वराज' हो या 'सत्यानो प्रयोग' या 'दखिन अफ्रीका सत्यग्रामो इतिहास।' उन्होंने गीता पर भी कृति गुजराती में लिखी। इन सारी कृतियों में उनकी सहज और सरल भाषा के दर्शन होते हैं। अनेक समीक्षकों ने उनकी इस लेखन शैली को गांधीवादी शैली कहकर संबोधित किया है। गांधीजी ने रस्किन की 'अनटू दि लास्ट', प्लेटो की डिफेंस एण्ड डेथ ऑफ सोक्रेटीज', 'लाइफ ऑफ कमाल पाशा' तथा 'सम वर्क्स ऑफ कार्लाइल' का गुजराती में अनुवाद किया। उन्होंने कुछ मध्यकालीन अंग्रेजी कविताओं का भी अनुवाद किया था। बच्चों के लिए उन्होंने बाल पोथी तथा नीति धर्म नामक कृतियां लिखी थीं। उनका मानना था कि बच्चों का विकास नैसर्गिक वातावरण में होना चाहिए।

गांधीजी के कलात्मक स्वरूप को समेटने की यह एक छोटी सी झांकी है। इस विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि गांधीजी ने भले कला के संबंध में कोई विस्तृत विमर्श न किया हो या विशेष रूप से कला केन्द्रित कृतियां न लिखी हों लेकिन उन्होंने जो कुछ भी लिखा और कहा वह उनके कलात्मक व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचायक है।

गांधीजी विश्व के पहले ऐसे महान व्यक्तित्व हैं जिन्होंने यह कहा था कि मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। संभवतः इतना पारदर्शी व्यक्तित्व इस धरती पर इस युग में कोई दूसरा हुआ हो। अल्बर्ट आइंसटाइन का यह कहना पूरी तरह सत्य था कि आने वाली पीढ़ियां इस बात पर आश्चर्य करेंगी कि हाड़-मांस का कोई इस तरह का व्यक्ति कभी इस धरती पर हुआ करता था। गांधीजी निश्चय ही अद्वितीय थे।

वे कला की इस परिभाषा के पर्याय थे कि कला एक दृष्टि होती है तथा उस दृष्टि को जो दृष्टा आत्मसात कर लेता है वही कलाकार हो जाता है।

गांधीजी इन अर्थों में इस युग के सबसे समर्थ कलाकार थे।

-85, इंदिरा गांधी नगर, आर.टी.ओ. कार्यालय के पास,
केसरबाग रोड इंदौर-9 (म.प्र.), मोबाइल : 9425092893

■

आलेख

सत्य और अहिंसा : गांधी प्रासंगिक या अप्रसांगिक ?

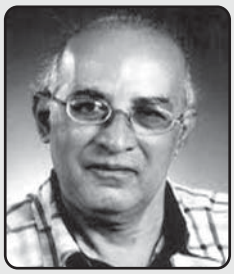

रमेश दवे

सत्य और अहिंसा भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्य हैं। सत्य सदैव सत्य ही रहता है, उसे किसी भी प्रकार के असत्य से निरस्त नहीं किया जा सकता। अहिंसा मनुष्य का जीव-मात्र या चराचर सृष्टि के प्रति व्यवहार का मार्ग है जिसमें सद्भाव, सहिष्णुता, सदाशयता, दया, क्षमा, करूणा आदि नैतिक रूप से निहित होते हैं। गांधी सत्य को ईश्वर आत्मा और परमात्मा का प्रतीक मानते थे। इसलिए यह कहा जा सकता है कि गांधी सत्य के साधक थे, सत्य के आराधक और उपासक थे और सत्य ही उनके नियम-संयम और कर्म में सतत गतिमान रहता था। गांधी-प्रार्थना में जो एकादश व्रत हैं वे अहिंसा और सत्य के साथ समर्पित हैं, समूची सृष्टि को।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह
शरीर-श्रम, अस्वाद सर्वत्र भय-वर्जन
सर्वधर्म समानत्व, स्वदेशी स्पर्श-भावना
विनम्र व्रत-निष्ठा से, ये एकादश सेव्य है।

गांधी विचार थे और उनका व्यक्तित्व विचार के व्यवहार ने गढ़ा था। आचार्य विनोबा ने गांधी में जिन तत्वों को देखा था, उन्हें देखकर कहा था-

सूक्ष्म-ब्रह्माण्डीय और स्थूल-ब्रह्माण्डीय तत्व एक
दूसरे में एकाकार है - एक तत्व जीवन-सम्बद्ध
है जिसे सत्य, आत्मा, परमात्मा भी कहा जाता है
गांधी इसी सत्य को धारण कर महात्मा बने।

आचार्य विनोबा जब तत्कालीन राजनीतिक परिदृश्य में मार्क्स का अध्ययन करते हैं तो कहते हैं 'गांधी एक महान आत्मा थे - इसलिए वे 'महात्मा' थे, मार्क्स अपने समकाल के महान चिन्तक थे इसलिए वे 'महामुनि' थे क्योंकि गांधी में सत्य और अहिंसा का जीवनगत सामंजस्य या समन्वय था और चूंकि सत्य अहिंसा का कोई द्वैत नहीं होता है इसलिए गांधी अपने विचार में अद्वैत थे।

जब वह प्रश्न उठाया जाता है कि गांधी हमारे समय में प्रासंगिक हैं या नहीं तो उत्तर दो प्रकार से दिए जा सकते हैं। जहाँ तय सत्य और अहिंसा के मूल्यों के साथ देखा जाए तो गांधी सत्य और अहिंसा के शाश्वत मूल्य हैं और शाश्वत-मूल्य कभी अप्रासंगिक नहीं होते। इसलिए गांधी इन मूल्यों में कालजयी है। गांधी ने न केवल अपने समय का अतिक्रमण किया था, बल्कि वे आज के समय से भी आगे के सत्य-निष्ठ व्यक्तित्व एवं विचारक हैं। दूसरी तरफ देखें तो गांधी-चेतना क्या हमारे समय में प्रासंगिक है ? क्या राजनीति में, धर्म में, जातिवाद में, देश-भक्ति में, सर्वधर्म-समानत्व में, स्वदेशी में गांधी प्रासंगिक कहे जा सकते हैं ? जब धर्म, राजनीति, समाज, लोकतंत्र, न्याय और यहाँ तक कि विचार पर भी अपराध और विकृत मानसिकता से ग्रस्त अपराधियों की काली छाया है तो इन प्रसंगों में गांधी कैसे प्रासंगिक हो सकते हैं, और होना भी नहीं चाहिए क्योंकि गांधी का हर प्रसंग तो सत्य और अहिंसा का ही प्रसंग है।

गांधी को हिंसा में विश्वास करने वाले यहां तक कि विदेशी वाम-विचार वादियों ने भी नकारा तो नहीं है, मगर माना भी कम ही है। बौद्धिकों ने नव-बुद्धिवाद ने मार्क्स को जिस कट्टरता से अपनाया, वह कट्टरता भी क्या किसी भी प्रकार की साम्प्रदायिकता से कम है ? शायद इसीलिए के.जी. मश्रुवाला की पुस्तक 'गांधी एण्ड मार्क्स' की भूमिका में विनोबा जी ने कहा था कि देश के कुछ वामपंथी 'इंटलेक्चुअल जान्डिस' यानी बौद्धिक पीलिया के रोग से ग्रस्त हैं। यह बौद्धिक पीलिया इस कदर व्यापक हुआ कि अब लोग तो 'कम्यूनल जान्डिस', 'क्रिमिनल जान्डिस' यानी साम्प्रदायिक और अपराधी पीलिया से ग्रस्त होते जा रहे हैं। कट्टरता किसी भी विचार या विचारधारा की हो, वह गांधी के लिए अप्रासंगिक है और गांधी उसके लिए अप्रासंगिक हैं। मार्क्स को विनोबा ने माना तो था महामुनि लेकिन शरीरश्रम के दर्शन पर विचार करते हुए कहा था कि गांधी हिंसा-रहित साम्यवादी थे।

गांधी को सत्य और अहिंसा के संदर्भ में केवल पढ़ा ही नहीं जाना चाहिए, बल्कि समझना चाहिए और समझ कर ऐसी नैतिकता का साहस अपने कर्म से दिखाना चाहिए जिससे समाज का चरित्र सत्य और अहिंसा का अपने कर्म एवं धर्म दोनों में विकसित किया जा सके। सत्य, अहिंसा महाव्रत हैं ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार बुद्ध के ये चार महावाक्य थे -

नत्थि राग समो अग्नि (प्रेम के समान आग नहीं)
नत्थि दोस समो कलिः (द्वेष के समान पाप नहीं)
नत्थि खंद समो दुक्खः (पाँच स्खंद यानी काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर के समान दुख नहीं)
नत्थि संति पर सुखम् (शांति के समान परम सुख नहीं)

गांधी को यदि विचार के रूप में देखा जाए तो राजनीति में स्वदेशी, असहयोग, सविनय-अवज्ञा उनके राजनीतिक अस्त्र-शस्त्र थे जिनकी आधारभूमि सत्य और अहिंसा थी। यदि गांधी को एक धर्म या अध्यात्म-पुरुष के रूप में देखा जाए तो वे सर्व-धर्म-समानत्व के साथ नृसिंह मेहता के भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिए' की भावना के धर्म-पुरुष थे। ईश्वरीय आस्था तो गांधी में अप्रतिम थी, प्रार्थना उनका जीवन-बल और नैतिक-बल था, सत्य उनका ईश्वर था। ईसा मसीह का क्षमा-भाव उनमें था तो अपने गुरु रायचंद (जो जैन थे) से अहिंसा में दीक्षित गांधी के लिए अहिंसा उनका धर्मयोग और कर्मयोग था। गांधी एक महाबौद्धिक थे जिन्होंने अपने बुद्धिबल से उस ब्रिटिश सरकार को भारत छोड़ कर स्वतंत्र करने के लिए बाध्य किया था जिसके बारे में कहा जाता था - The sun never sets in the British empire अर्थात ब्रिटिश-साम्राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता। गांधी ने जिस प्रकार की बौद्धिक,

वैचारिक और नैतिक पत्रकारिता की वह नवजीवन, हरिजन, यंग इण्डिया जैसे अखबारों के जरिए भारतीय पत्रकारिता का आदर्श-इतिहास बन गई। गांधी ने जो वकालत की वह सत्य के जरिए सत्य के लिए, सत्य के पक्ष में, सत्य के पक्षकार के लिए की न कि रोजी-रोटी के एकमात्र साधन के रूप में। वे ऐसे बैरिस्टर थे जिनका किसी से बैर नहीं था। दक्षिण अफ्रीका में उन्हें मारा-पीटा गया, ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया, जातिवादी श्वेतवाद का विरोध करने पर सत्ता द्वारा सताया गया, फिर भी गांधी क्षमाशील रहे, घृणारहित रहे, अहिंसक रहे और इसी वजह से वे भारत से मोहनदास बन कर गए थे, मगर महात्मा बन कर लौटे।

गांधी के विचार और विचारक के रूप में और भी कई आयाम हैं। वे शिक्षा में आचरण के नैतिक-निर्माण की बात करते थे। गांधी कहते थे कि मैंने भारत को यदि कोई नई और नायाब चीज दी है तो वह है शिक्षा जिसे हमने स्व. जाकिर हुसैन की अध्यक्षता वाली 'नई-तालीम शिक्षा प्रणाली के साथ बुनियादी शिक्षा के विचार के रूप में अपनाया तो अवश्य किन्तु गांधी के उस अहिंसक चरखे को निरस्त कर दिया, जो हर भारतीय के शरीरश्रम से उत्पन्न स्वाभिमान का प्रतीक होता।

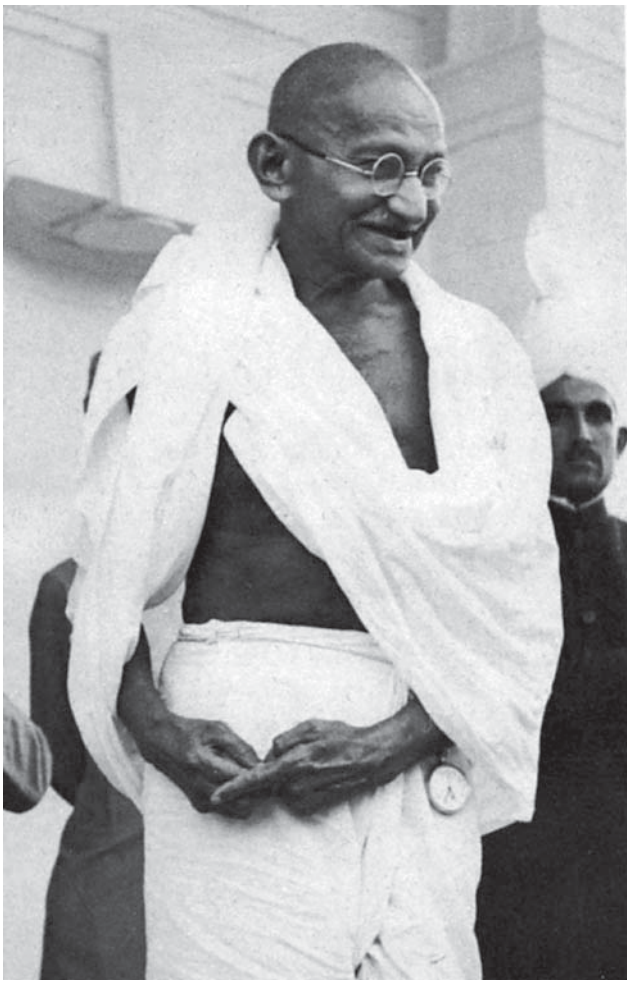

विनोबा जी की वर्ष 1969 में प्रकाशित पुस्तक 'तीसरी शक्ति' की भूमिका में लोकनायक जय प्रकाश नारायण ने लिखा था 'सर्वोदय ... गांधी विनोबा की तीसरी शक्ति है। मानव समाज के परिवर्तन, पुनर्निर्माण तथा धारण के लिए इतिहास में केवल दो ही शक्तियों का जिक्र आता है : हिंसा-शक्ति तथा दण्ड-शक्ति।... गांधी जी ने तीसरी शक्ति का समाज के स्तर पर जो व्यापक प्रयोग दक्षिण अफ्रीका तथा भारत में किया, उसने हमें महत्वपूर्ण पाठ सिखाए हैं।' गांधी ने 'हिन्द-स्वराज' लिखा तो काका कालेलकर ने कहा था 'हिन्द-स्वराज', द्वेष धर्म की नहीं बल्कि प्रेम-धर्म की पुस्तक है। राज्य-शक्ति का रूप तब प्रारंभ हुआ जब अहिंसा और सत्य के साथ लोक जीवन में प्रवेश करने वाले ही लोक-शक्ति से पृथक होकर राज-शक्ति के अंग हो गए। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रेम शक्ति पर, दण्डशक्ति, अहिंसा शक्ति पर हिंसा शक्ति तथा करुणा-शक्ति पर कानून-शक्ति हावी हो गई और मनुष्य विनायक से वानर बन गया। राज-शक्ति में जाने पर अति-सुख भी दुख को जन्म देता है और अब हम देख रहे हैं कि हम दु:ख का ही प्रतिदिन जन्मोत्सव मना रहे हैं। गांधी-विनोबा के इन विचारों को लेकर ही तो जय प्रकाश गांधी ने उस दर्शन को प्रकट करते थे जिसमें गांधी कहते थे - कांचन-मोह त्यागो और शरीर श्रम अपनाओ। क्या ऐसा नहीं लगता कि आज कांचन-मोहन ने शरीर-श्रम का अपहरण कर लिया है। शरीर श्रम को गांधी अहिंसक-स्वाभिमान और स्वालम्बन से जोड़ते थे। शरीर-श्रम के स्थान पर मशीन-श्रम पैदा हुआ उसने मनुष्य को उसकी ही प्राकृतिक शक्ति से वंचित कर दिया है। गांधी के इस अहिंसक शरीर-श्रम को अब नए परिप्रेक्ष्य में, नई चुनौतियों के साथ क्या अपनाया जा सकता है, इस पर विचार जरूरी है।

गांधी जिस सत्य के उपासक या अनुयायी थे, वह सत्य उनका परमेश्वर था। गांधी स्वयं सत्य को परिभाषित करते हुए कहते हैं -

'सत्य शब्द सत् से बना है। सत् यानी होना। सत्य यानी हस्ती। सत्य के सिवा और किसी चीज की हस्ती ही नहीं है। परमेश्वर का सही नाम ही सत् यानी सत्य है। इसलिए परमेश्वर सत्य है ऐसा कहने के बजाए सत्य ही परमेश्वर है ऐसा कहना ज्यादा ठीक है।' (मंगल प्रभात-1/3)

गांधी यह भी कहते थे कि जहां सत्य है वहां ज्ञान-शुद्ध ज्ञान है ही। जहां सत्य नहीं है वहां शुद्ध ज्ञान कभी हो नहीं सकता। इसलिए ईश्वर नाम के साथ 'चित' यानी ज्ञान, इल्म जोड़ा गया है। और जहाँ सत्य-ज्ञान है वहाँ आनंद ही होता है। सत्य से मनुष्य जिस सभ्यता का निर्माण करता है, वह सभ्यता कभी मरती या लुप्त नहीं होती क्योंकि गांधी मानते थे कि सभ्यता वह आचरण है जिसमें आदमी अपना फर्ज अदा करता है।' गांधी का विश्वास भारत में था, जिसे गांधी हिन्दुस्तान कहते थे। इसकी सभ्यता को पश्चिम की सभ्यता से अलग इसलिए देखते थे कि यूरोप ने ग्रीस और रोम की गिरी हुई सभ्यता को अपनाया था, जो हिंसा से पैदा हुई थी और इस कारण गांधी उसे चाण्डाल या शैतानी सभ्यता कहते थे। भारत की सभ्यता का जोर नीति को मजबूत करने पर रहा है इसलिए पाँच हजार वर्ष के बाद भी इस सभ्यता को याद किया जाता है। यह सत्य केवल इतिहास का सत्य नहीं बल्कि सभ्यता का सत्य है। गांधी चूंकि अहिंसा और सत्य के पोषक थे इसलिए वे दयाबल को आत्मबल मानते थे और उसे ही सत्याग्रह कहते थे। गांधी ने मीरा का उदाहरण देते हुए कहा था कि मीरा का सत्य परमेश्वर था और उसी परमेश्वर के सत्य पर वह अंत तक टिकी रही। इसलिए गांधी मीरा को विश्व की प्रथम सत्याग्रही मानते थे। सत्याग्रह को अंग्रेजी में पेसिव रेजिस्टंस कहा गया है जिसे भारत ने अपनाकर बलिदान तो

दिया लेकिन अंतत: सत्याग्रह, अहिंसा और नि:शस्त्र विरोध से स्वराज हासिल कर ही लिया। गांधी मानते थे कि गोला-बारूद काम में लाना हमारे सत्याग्रह के कानून के खिलाफ है। गांधी का सत्याग्रह मनुष्य के आत्मबल का सत्याग्रह था, इसीलिए सत्याग्रह ही उनका वह सत्य भी था जिसको आधार बनाकर उन्होंने स्वराज का मार्ग प्रशस्त किया। सत्य की आराधना यानी सत्य की भक्ति और यह भक्ति तो सिर का सौदा (शीश वणुं साटूँ) है या यह 'हरि का मार्ग होने से इसमें कायर या डरपोक के लिए स्थान नहीं है और हरि के मार्ग में हार-जीत की बात ही नहीं। यह तो मरकर जीने का मंत्र है। गांधी इसी मंत्र को अपनाकर आज मर कर भी जी रहे हैं और तमाम प्रकार से उपेक्षा के बावजूद गांधी निरस्त नहीं हो पा रहे हैं यहां तक कि उनके सत्य-अहिंसा के दर्शन के विरोधी भी उन्हें अपना रहे हैं। गांधी ने सत्य को जिया तो अहिंसा को अमृत की तरह पिया था। हिंसा को लेकर गांधी ने अपनी आत्मकथा में जो उसके व्यापक आयाम बताए हैं वे इस प्रकार हैं -

'अहिंसा व्यापक वस्तु है। हम हिंसा की होली के बीच घिरे हुए पामर प्राणी हैं। यह वाक्य गलत नहीं है कि जीव, जीव पर जीता है। मनुष्य एक क्षण के लिए भी बाह्य हिंसा के बिना जी नहीं सकता। खाते-पीते, उठते-बैठते सभी क्रियाओं में इच्छा-अनिच्छा से वह कुछ न कुछ हिंसा करता ही रहता है। यदि इस हिंसा से छूटने के लिए वह महाप्रयत्न करता है, तो उसकी भावना में केवल अनुकम्पा होती है, वह सूक्ष्म से सूक्ष्म जंतु का भी नाश नहीं चाहता और यथाशक्ति उसे बचाने का प्रयत्न करता है तो वह अहिंसा का पुजारी है .... अहिंसा की तह में ही अद्वैत भावना निहित है। मैंने बन्दूक धारियों और उनकी मदद करने वालों में अहिंसा की दृष्टि से कोई भेद नहीं माना।(आत्मकथा-305.306)

गांधी के लिए जीव-हत्या, युद्ध, अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग, परस्पर झगड़ा तो हिंसा थे ही लेकिन वे मानते थे कि मनुष्य में निहित जो पशुत्व है वह जब उत्तेजित होता है तो हिंसा पैदा होती है। अहिंसा संयम है, गांधी ने इस संयम को निभाया भले ही कर्तव्य की नैतिकता के कारण विश्वयुद्ध में भारतीय सेना का समर्थन किया हो। अहिंसा गांधी के ग्यारह व्रतों में पहला व्रत है। अहिंसा को लेकर गांधी की धारणा थी कि अहिंसा सिद्धान्त नहीं कर्म है, विचार ही नहीं मानव-धर्म है। वे अहिंसा की समझ को समझाते हुए कहते हैं-

'अहिंसा जिसे आज हम मोटे तौर पर समझते हैं, सिर्फ वही नहीं है। किसी को कभी नहीं मारना, यह तो अहिंसा है ही। तमाम खराब विचार हिंसा है। जल्दबाजी हिंसा है झूठ बोलना हिंसा है। द्वेष, बैर, डाह हिंसा है। किसी का बुरा चाहना हिंसा है। (मंगलप्रभात-9)

गांधी यह जानते थे कि सत्य का, अहिंसा का रास्ता जितना सीधा है उतना ही संकरा और तंग है - तलवार की धार पर चलने जैसा है। गांधी यह भी मानते थे कि सत्य के दर्शन तो लगभग नामुमकिन है मगर इतना जरूर जान लें कि बगैर अहिंसा के सत्य की खोज थी नामुमकिन है। अहिंसा और सत्य ऐसे ओत-प्रोत ताने बाने की तरह हैं, एक दूसरे से ऐसे मिले हुए जैसे एक ही सिक्के के दो पहलू।

किशोरी लाल मश्रुवाला ने अपनी पुस्तक 'गांधी एण्ड मार्क्स' में कहा है कि गांधीवादियों और मार्क्सवादियों में जहां तक दमित, दलित, शोषित-पीड़ित का प्रश्न है, दोनों के विचार समान है मगर गांधी और मार्क्स जहाँ अलग है वह बिन्दु है हिंसा-अहिंसा का। गांधी भी साम्यवादी कहे गए मगर माइनस-वायलंस अर्थात हिंसा-रहित साम्यवादी। गांधी स्वयं एक विचार या दर्शन थे। वे आत्मा का अध्यात्म सत्य और अहिंसा में ही जीते थे और उसके निर्वाह के लिए उनका प्रार्थना-बल था, ईश्वर के प्रति आस्था-बल था और पीड़ित-शोषित, दरिद्र में वे नारायण की छवि देखते थे इसलिए वे अन्य तमाम इंसानों या जन की तरह हरिजन यानी ईश्वर की ही समान उत्पत्ति थे। विवेकानंद ने दरिद्रनारायण का विचार देकर दरिद्र बस्ती में जो काम किया था, गांधी ने उसे व्यापक सामाजिक और राजनीतिक अर्थ दिया। गांधी स्वामी विवेकानंद के विचार से भी प्रभावित थे क्योंकि दयानंद स्वामी, अंधविश्वास और कुरीतियों के विरूद्ध खड़े आर्य-सामज को समानता के दर्शन से आजमा रहे थे। गांधी रामकृष्ण परमहंस या श्री अरविन्दो के रास्ते पर इसलिए गए कि वे तपस्या, साधना, योग, प्रयोग सबको एकान्त में न जीकर पूरी तरह मनुष्य-सृष्टि के साथ कर्म और आचरण में जीने का प्रयोग कर रहे थे जब कि गांधी का उनसे कोई मतभेद नहीं था क्योंकि उनका एकांत ही गांधी का सार्वजनिक और प्रत्यक्ष आचरण था।

गांधी आज भी इसलिए जिन्दा हैं कि परमाणु-बमों, हाइड्रोजन बमों, मिसाइलों और हिंसक जीवाणु-बमों के इस घातक युग में अभी तक सृष्टि जिन्दा है तो वह गांधी का प्रच्छन्न या अदृश्य अहिंसक प्रभाव ही है। दुनिया के कई देश आतंकवाद से घिरे तो हैं फिर भी यदि कोई महायुद्ध नहीं हो रहा है तो यह भी गांधी, लूथर, नेल्सन मंडेला की ही नैतिक ताकत का परिणाम है। गांधी के विचार में सत्य और अहिंसा केवल शाश्वत मूल्य ही नहीं थे, गांधी ने उनका सार्वजनिक प्रयोग किया और प्रयोगों से साबित किया कि सत्य और अहिंसा आचरण हैं, कर्म है, मनुष्य को जिन्दा रखने की शक्ति है, इसलिए वे कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकते। गांधी के जन्म को 150 वर्ष हो गए, उनके निधन को भी सत्तर वर्ष बीत गए। इतने वर्षों में अनेक महापुरुष भले ही अपने समकाल के महापुरुष रहे हों मगर वे केवल इतिहास के पन्नों पर एक इबारत बन कर रह गए। उनका उल्लेख कभी कभी प्रवचनों या शोधपत्रों में तो होता है मगर दैनंदिन जीवन में तो गांधी आज हर सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक या शैक्षिक विषय में संदर्भवान हैं।

गांधी ने शिक्षा में भले ही बुनियादी शिक्षा का विचार दिया मगर भारतीय लोकतंत्र को भी बुनियादी-लोकतंत्र बनाने में सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह या अपने एकादश व्रतों से जिस स्वदेशी और सर्वधर्म-समानतत्व का विचार दिया, उससे हमारे लोकतंत्र का आचरण आज भी हमें दुनिया का सबसे बड़ा और श्रेष्ठ लोकतंत्र बनाता है। माना कि विसंगतियाँ है, बुराईयाँ हैं, हिंसा है, असत्य है, अपराध है, भ्रष्टाचार है और राजनीति प्रदूषित हुई है, जातिवादी कट्टरता का प्रयोग किया जा रहा है, अगर इन तमाम कमियों या बुराईयों के बावजूद लोकतंत्र जिन्दा है और अन्य पड़ौसी देशों की तरह भारतीय लोकतंत्र फौजी तानाशाही के बूटों तले रौंदा नहीं गया है तो इसकी बुनियाद गांधी का सत्य, अहिंसा, सद्भाव और सहिष्णुता का वह लोकदर्शन है जिस पर संविधान टिका है, देश टिका है, लोकतंत्र टिका है और इसलिए गांधी थे ही नहीं, हैं भी, और रहेंगे भी और रहेंगे तो सत्य और अहिंसा भी कभी अप्रासंगिक नहीं होंगे।

एस.एच. 8/19 सहयाद्रि परिसर, भदभदा रोड, भोपाल-462003,
मो. 9406523071

■

आलेख

गांधीजी चरखों दे गया

डॉ. महेन्द्र भानावत

गांधी लोकमन का कल्प मनुष्य था। एक ऐसा कल्प जिसने न केवल आजादी ही दिलाई अपितु अपाहिजों, अन्त्यजों और आततायियों को एक भरोसा, संबल, सहारा, सब्र, सांत्वना और वह सब कुछ दिया जिसकी उन्हें चाह थी। क्या कारण है कि कोई भी महापुरुष लोकमन में उतना गहरा नहीं पैठ पाया जितना गांधी बाबा पैठा। क्यों गांधी इन सबका एक ही विकल्प बना! इन सबका ही नहीं आज पूरे राष्ट्र की हर हालत, हालाता और हवालात का विकल्प भी एक ही गांधी दिखाई दे रहा है।

गांधी ने कभी अपने को महान नहीं बताया। न वे अपने मन में इस बात की गठरी बांधे चले कि लोग उन्हें महामानव कहें और उन्हें ईश्वर स्वीकारें। उन्होंने अपने को सदा सहज मानव ही बनाये रखा। इसीलिये वे सबके मन में सहजतापूर्वक पैठ गये। गांधी कहां-कहां नहीं पहुंचा। मैंने एक गड़रिये से पूछा – 'गांधी कौन था।' नाम सुना? उसने कहा – नाम खूब सुना। वह बकरियां चराता था। मैंने एक हरिजन बालिका से पूछा – 'गांधीजी का नाम सुना! वे कौन थे?' उस बालिका ने अपनी आधी मुस्कान में अपने पास पड़ा झाड़ू छूते हुए कहा – गांधीजी झाड़ू लगाते थे। सड़क पर जूते गांठने वाले मोची से पूछा – गांधी का नाम सुना! कौन थे वे? उसने कहा – वे बहुत बड़े आदमी थे। उन्होंने जीवों की रक्षा की।

आजादी के इतने बरस बाद भी गांधी की गध किन-किन रंगों में कितने अच्छे रूप में गंधिया रही है। जीवन का मूल मंत्र तो कर्म है और कोई भी कर्म किया जाये उसके साथ सद्निष्ठा का भाव आवश्यक है। गांधी ने कर्म के प्रति यह जो भाव दिया वही किसी के जीवन की सबसे बड़ी कमाई है। गड़रिये ने गांधी को गड़रिया माना। गांधी उसके लिए अपने काम और कमाई के प्रति समर्पण भाव का प्रतीक हो गया।

हरिजन बालिका के लिये तो झाड़ू ही परमेश्वर है। गांधी ने उस बालिका को झाड़ू की चिंतना में न केवल उसकी आजीविकामय जीवनी दी अपितु कर्ममय जीवन का ईश्वरत्व दे दिया। मोची को जूतों की हर गठान में एक सबक दिया कि जान सभी को प्यारी है। किसी भी जान को बेजान बनाना अपराध है पर यदि कोई बेजान हो गया तो उसके द्वारा यदि कोई जानदार कृति-कर्म किया जाता है तो वही जीवन की सार्थक गठान है।

गांधी ने चरखा दिया जैसे जीवन दिया। चर-चर कर खाने का यह अमोध मंत्र जीवन में पुरुषार्थ और स्वावलंबन के माध्यम से स्वाधीन चेतना को जन्म देता है। चरखे का तार-तार जीवन की सार-सार डोरी है। रुई धुनती है। अच्छी धुनी हुई रुई से अच्छा तार निकलता है उसी तरह कर्म-कसौटी पर जीवन कसता है तब पसीना-पसीना तार-तार निकलता है। उधर तार-तार की कुकड़ी तैयार होती है। इधर पुरुषार्थ का पौरूष पराक्रम जीवन को नाना ज्ञान-विज्ञानादि अनुभवों की कुकड़ी में बुनता चलता है। यही सच्चा जीवन है। इसी जीवन में ताल है, लय है, गति प्रगति और मति रति है।

चरखे ने कितनी असहायों विधवाओं को जीवन दिया। बुझते मन को जलती ज्योति दी। अविराम आराम दिया है। मेरे गांव कानोड़ में ही मैं अपने बचपन से देखता आ रहा हूं – हर महिला ने चरखा काता है। कई विधवाओं का तो चरखा जीवन का आधार बना और आज भी बना हुआ है। कई माताओं ने चरखे की कमाई में अपने बच्चों को पढ़ाया-लिखाया है। मेरी मां ने भी हम दोनों भाइयों को चरखा कात कर पढ़ाया। यदि वह चरखा घर-घर प्रवेश नहीं करता तो कितनों का जीवन अंधेरा ले डूबता।

गांधीजी दरसण दे गया
घणा दनां में आया गांधीजी आया गांधीजी
घर-घर चरखा चलाया।।गांधीजी ...।।
रेंट्यो तो है रंगरंगीलो रंगरंगीलो
ताण्या है लाल गुलाल।।गांधीजी ...।।
वायल मुलमुल छोड़ दो
गांधीजी छोड़ दो गांधीजी
करलोनी खादी रो वेपार।।गांधीजी....।।

गांधीजी के संबंध का यह गीत ब्याह शादियों में मेरी मां ने बहुत गाया है। पुरानी महिलाएं आज भी गा लेती हैं पर जब मैं अपनी मां को पूछता कि ये गांधीजी कौन थे तो वह उत्तर नहीं दे पाती पर यह जरूरी कहती कि उनके चरखे ने मेरी मां को और उसके दोनों बच्चों को अनाथपन से उबारा है। उन

घड़ियों को जब मां याद करती तो मुझे लगता उसके रेंटिये (चरखे) का एक-एक तार उसके डड़वे-डड़वे आंसू से भीगकर भारी होता जाता।

तेलगु में भी यह गांधी-चरखा और पूनी इसी प्रकार प्रत्येक घर की शोभा बन गई। उधर प्रचलित एक लोकगीत में कहा गया, हे पुत्रियों! चरखा कातो। गांधी की जयकार करते हुए सूत के तार निकालो। पूनी और चरखा तो घर की शोभा है -

राटमु ओडकारम्मा ओ अम्मालारा
गांधी की जय अंचु दारामु तीयारे
एकुलु राममु इन्टिकन्दम्भू
महात्मा गांधी प्रजल कन्दम्मू।

तमिल के एक लोकगीत में तो गांधीजी को एक रक्षक बताया और उन्हें ऋषि महाऋषि से सम्बोधित किया - गांधी ऋषि काप्पात्लुं महाऋषि गांधी ऋषि। गांधी ने कहा - मैं भारत के अनाथ बच्चों के लिए चरखा कातता हूं। राजस्थान में तो अकेले चरखे को लेकर कई लोकगीत सुनने को मिलते हैं। एक गीत में तो चरखे को कातने वाले गांधी बाबा का उल्लेख तक आ गया है जो खद्दर पहन बैठे हैं और महीन-महीन पूनी का लम्बा-लम्बा तार निकाल रहे हैं।

चाल रे चरखला हाल रे चारखला
ताकू तेरी सोवणो लाल गुलाबी माला
चरकूं मरकूं फिरै घेरणी मधरो मधरो चाल ...
गड्डी तेरी रंगरंगीली तकली चक्करदार
चोखो बरायो दमकड़ो तेरो कूकड़िये री लार ...
कातणवाले गांधीबाबा बैठे खद्दर धार
महीं-महीं वी पूणी कातै लंबो काढ़ै तार ...

उधर बाडमेर-जैसलमेर के रेतीले अंचल में तो चरखा पूरे परिवार को ढकेलने वाला बन गया है। लंगों-मांगणियारों के इस लोकगीत में -

घूम रे चरखा घूम
म्हारो अंग ढकेला थूं
म्यारी नथड़ी रो मोती थूं

को लंगा गायक नूर मोहम्मद ने इतना प्रचारित किया और प्रियता प्राप्ति की कि जहां-जहां भी उन्हें गाना होता, इस गीत को बड़ी तबीयत से गाते और सर्वाधिक फरमाइश भी इसी गीत की होती। अपने विदेश प्रवास में भी उन्होंने इस गीत के पीछे बड़ा यश-सम्मान अर्जित किया। राजस्थान के इन गीतों में चरखे को लेकर जो नखशिख और उसकी आत्मरंगीनी व्यक्त की गई वैसी अन्य प्रान्तों में देखने-सुनने को नहीं मिलेगी।

लंगा बंधु इस चरखे गीत में इतने तन्मय हो जाते कि एक शाश्वत संगीत और स्वर्गीय आनंद की साक्षात् अनुभूति होने लगती। गांधी के चरखे की कितनी महिमा है। कितना माहात्म्य है। कितनी महक, कितना ममत्व और मोल है।

लोकमन कितना बली और आत्मविश्वासी होता है। इसके बल के आगे सारे के सारे भौतिक बल कुछ नहीं है। यहां के समग्र लोग ने तो गांधीजी की स्वतंत्रता की लड़ाई की बहुत पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी कि चाहे कितना ही कोई उपाय किया जाये अंग्रेज कभी जीत नहीं पायेंगे। हम तो चरखा चला-चलाकर स्वराज्य लेंगे, हमारा कोई क्या कर लेगा।

गांधी की लड़ड्या में जीते न फिरंगिया
चाहे कर केतनो उपाउ
हम तो चरखा से लेवैं सुराज
हमार कोई का करिहे!

कितना दमखम है इस लोकशक्ति में! कितना जोश है इस लोकचेतना में! कितनी आग है और जाग है इस लोकमनसा में! गांधीबाबा का हुकम होना चाहिये। उसके हुकम में दुनियां चलती है। नवा रे घर को नवा रे थुनिया। गांधीबाबा के हुकम में चले रे दुनियां। छत्तीसगढ़ी लोकगीत की यह पंक्ति टंच है।

हरियाणा, पंजाब, भोजपुर, संथाल, मणिपुर जहां भी चले जायें गांधी की मनसा को इन लोकगीतों ने विविध भावों में उगेरा है। उनके स्वराज्य आन्दोलन की पूरी पीठिका को अभिव्यक्त किया है। उनके सपनों का सही चितराम दिया है और इन गीतों से जो वातावरण गांव-गांव घर-घर बना उसी ने गांधीजी के आंदोलन को अग्नि की तेज धार दी और अंग्रेजों को भारत छोड़ने को विवश किया।

एक भोजपुरी लोकगीत में तो कृष्ण और गांधीजी की बड़ी ही सुंदर तुलना की गई है। उसमें कहा गया है कि कृष्ण तो जेल में पैदा हुए मगर गांधी का तो घर ही जेल हो गया। कृष्ण ने मधुर मुरली बजाई तो गांधी ने मस्ताना चरखा चलाया।

कृष्ण माखन चोर कहाये तो गांधी नमक चोर। गांधी और कृष्ण के युग में जितनी दूरी है उतना ही फर्क उनके कर्म-उपादानों में है। ये उपादन अपने-अपने युग के असल सत्य को प्रकट करने वाले इतिहास प्रकरण हैं।

गांधीजी शान्ति की खोज में कभी हिमालय नहीं भटके। वे सारे देश में पूरे लोक में शांति चाहते थे। अपनी मृत्यु के एक दिन पूर्व 29 जनवरी 1948 की प्रार्थना सभा में उन्होंने कहा था - मैं शान्ति तो चाहता हूं मगर हिमालय जाकर नहीं। मेरा हिमालय यहां है। मैं अशान्ति में शान्ति चाहता हूं। नहीं तो उस अशान्ति में मर जाना चाहता हूं। सत्य भी है, महत्व भी उसी शान्ति का है जो अशान्ति के बीच प्राप्त होती है। जब सारा देश अशान्ति में हो तब उसे छोड़कर कहीं दूर शान्त जगह जाकर शान्ति पाने वाला क्या उपलब्धि देगा।

गांधी समग्र मानवता का मसीहा था। उसकी समग्र लड़ाई मानवता की लड़ाई थी। उनका लक्ष्य हिन्दुस्तान की आजादी ही नहीं था। वे तो विश्व बन्धुत्व की भावना को अपने जीवन का चरम लक्ष्य मानते थे। देश की स्वतंत्रता के बाद गांधीजी हमारे जितने आदर्श होने चाहिये थे हमने उतना ही उनको विस्मृत कर दिया। इसलिए हम भटकते रहे और जो सुन्दर कल्पना हमारी अपने देश के प्रति थी वह धूमिल होती गई।

यही कारण है कि आज हर क्षेत्र में, चाहे वह परिवार का हो, व्यक्ति का हो, समाज या राष्ट्र का हो गांधी कहा, किया, बताया ही हमें एकमात्र विकल्प लगता है और यही विकल्प हमारा कल्प भी है। अब हमारे लिए गांधी व्यक्ति नहीं, विकल्प है। गांधीजी हमारे लिए ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए सदा सदैव ही प्रासंगिक बने रहेंगे।

पता: 352, श्रीकृष्णपुरा, सेंट पॉल स्कूल के पास, उदयपुर (रज़)
मो. 9351609040

■

हमारी भूमिका

न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

गांधी रिसर्च फाउण्डेशन का लक्ष्य, संकल्प व भावना को दिशा निर्देश देने के कार्य में न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी जी की भूमिका महत्वपूर्ण बनी है। वे आज हमारे बीच नहीं है, किन्तु उनके विचार गांधी विचारधारा की धरोहर को प्रस्तुत करते हैं। हम गर्व महसूस कर रहे हैं कि आप गाँधी रिसर्च फाण्डेशन के पहले अध्यक्ष थे। फाउण्डेशन की संकल्पना के प्रति आपके विचार स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आते हैं। श्रद्धेय भवरलाल जी जैन द्वारा मानवता को अर्पित 'गाँधी तीर्थ' का निर्माण किया गया उस दौरान आपके द्वारा लिखी गई भूमिका हमारे पाठकों के साथ साझा कर रहे हैं।

- संपादक

महात्मा गाँधी को मैंने सर्वप्रथम 1936 में सेवाग्राम में देखा। उस समय वहाँ कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक चल रही थी। सारे नेता शरीरश्रम में लगे हुए थे। जमनालाल बजाज चक्की पर कुछ पीस रहे थे। उस समय मुझे लगा कि गांधीजी का सिर तो नहीं फिर गया है। क्योंकि उन्होंने ऐसे बड़े-बड़े नेताओं को इतने छोटे हलके काम करने को कहा। इसलिए मैंने आश्रम के संचालक से पूछ लिया कि, ऐसा काम तो हमारे घर में नौकरानी करती है, परंतु यहाँ तो आप विश्वप्रसिद्ध नेताओं और कार्यकर्ताओं से यह काम करवा रहे हैं; ऐसा करना क्या शोभनीय है ? उस दिन रसोई में बहुत बड़े तथा श्रेष्ठ नेता की ड्यूटी लगी थी। उन्हें देखकर ही मैंने यह प्रश्न किया था। संचालक ने मुझसे पूँछा कि, 'सब्जी अच्छी नहीं लगती क्या ?' लगती है तब उन्होंने फिर पूछा, 'जिस चीज को खाने में शर्म नहीं आती, उसे छीलने, साफ करने, खाने योग्य बनाने में शर्म क्यों आती है ?' उस दिन मुझे उत्पादक शरीरश्रम की प्रतिष्ठा का, महत्ता का नया सूत्र मिला। जिस देश तथा समाज में शरीर श्रम की प्रतिष्ठा नहीं होती, वहाँ केवल बेश्रम यानी बेशर्मी की प्रतिष्ठा रहती है। गाँधीजी ने चरखे को क्रांति का प्रतीक माना था। हम लोगों ने गाँधीजी के साथ वर्धा की भंगी वाली बस्ती में संडास सफाई से लेकर सारे काम किए। क्योंकि उनकी दृष्टि में झाडू क्रांति का प्रतीक था। ब्राह्मण के हाथ में झाडू और वाल्मीकि के हाथ में भगवद्गीता आ जाए, तो जाति-पाति मिटेगी और जन्माधिष्ठित प्रतिष्ठा समाप्त हो जाएगी। इसी कारण चरखा आर्थिक विषमता खत्म करने का प्रतीक था और झाडू सामाजिक विषमता दूर करने का प्रतीक था। इन सबका मन पर अनजाने में ही इतना प्रभाव व असर हुआ कि, हमने किसी की जाति नहीं पूछी, किसी के वेतन के बारे में नहीं पूछा। क्योंकि इन सब बातों पर मनुष्य का मूल्य अवलंबित नहीं है। 'काते सो पहने और पहने सो काते' इस एक वाक्य में क्रांति का मूल्य समाहित था। व्यक्तिगत पूजा या उपासना स्वत: तक सीमित रहती है, सामूहिक प्रार्थना पारस्परिक भलाई के लिए की जाती है। इसी स्नेह-सहयोग में से मानवनिष्ठ भारतीयता पैदा होगी, यह ज्ञात हुआ।

मेरा भाग्य यह था कि, गाँधी जी का हाथ अपने कंधे पर रखकर मैं उनके साथ घूमने जा सका। जिस दिन उनकी हत्या हुई, उस दिन हम जोर-जोर से रोने लगे थे। यह दुख तो मानो पिता की मृत्यु से भी तीव्र था, क्योंकि वह तो राष्ट्रपिता की मृत्यु थी। मेरा जीवन ही मेरा संदेश है, यह गाँधीजी ने कहा था। उसका अर्थ न समझने के कारण कुछ लोगों ने उनके जीवन की गलत नकल की और संदेश भूल गए। जिन्होंने संदेश को समझने का प्रयत्न किया, वे उनके जीवन को भूल गए। जिससे अनेक गफलतें पैदा हो गईं।

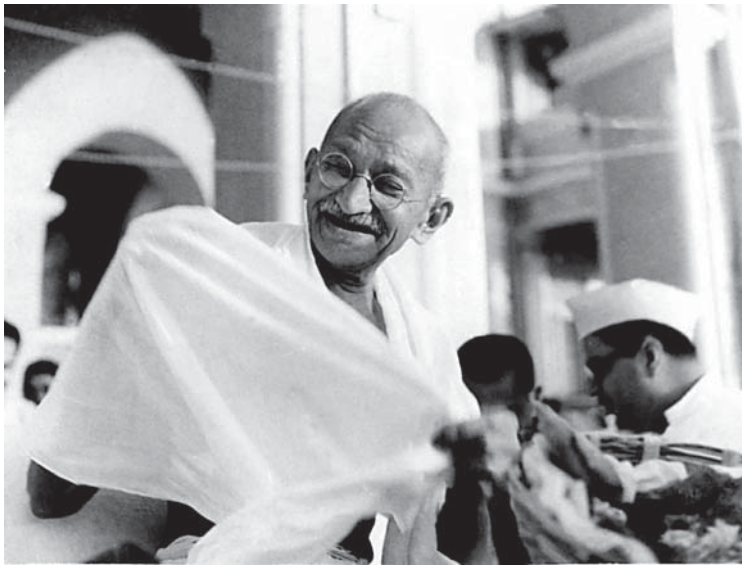

मैं पूरे भारत में बहुधा युवकों और विद्यार्थियों के बीच घूमता हूँ, इन युवकों में गाँधी को मूलत: समझने की आकांक्षा, इच्छा और प्यास है। अणुशास्त्र बढ़ाने की होड़ आज भी जारी है। सभी यह दावा करते हैं कि, यह शक्ति हम शांति और संरक्षण स्थापित करने के लिए बढ़ा रहे हैं। अमेरिका का अर्थशास्त्र शस्त्र निर्माण पर ही अवलम्बित है। आचार्य विनोबा ने इसका वर्णन अपनी विशिष्ट शैली में किया है। वे इस भावना को उष्णशांति कहते हैं। वे आगे कहते हैं कि, आज विचारों का, भाषणों का ब्राडकास्ट होता है। परन्तु डीपकास्ट यानी उसमें गहराई नहीं होती है। वह सब ऊपरी झलक है। युद्ध के समय शास्त्रों का उत्पादन होता है। सेना खड़ी की जाती है। जप शांति का और काम शस्त्र उत्पादन बढ़ाने का। ऐसी दोहरी नीति है।

विज्ञान ने मनुष्य को एक-दूसरे का पड़ोसी बना दिया है, परंतु विज्ञान उन्हें मित्र या साथी नहीं बना सकता। यह काम संस्कृति करती है। अत: शांति की संस्कृति की प्रतिस्थापना करनी है, तो गाँधी विचारों के अलावा और कोई विकल्प व उपाय नहीं है। अहिंसा क्रांतिकारी मूल्य है। जैसे वह सामाजिक और क्रांतिकारी मूल्य है, वैसे वह सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य भी है। अत: उनमें वीरवृत्ति द्वारा प्रतिकार व मानवोचित पुरुषार्थ का सर्वाधिक महत्व है। किन्तु समाज में असमानता, अशांति व सामाजिक अव्यवस्था के रहते शांति-संस्कृति की स्थापना संभव नहीं है।

किसी भी परिस्थिति में कानून को हाथ में न लिया जाए, यह जो स्वर्ण नियम है, उसका अपवाद सम्भव नहीं है। यह विचार है, उस महात्मा का, जिसने पराधीनता के विरुद्ध आंदोलन में सविनय कानून भंग का ही आंदोलन चलाया था। गाँधीजी का आंदोलन ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध था। उन्हें जो कायदे-कानून अनैतिक और पराधीनता बढ़ाने वाले प्रतीत हुए, उने विरुद्ध उन्होंने सविनय कानून भंग का आंदोलन चलाया। वह अविनय कानून भंग का आंदोलन नहीं था। वह पूरी तरह शांतिपूर्ण और अहिंसक था।

आज समाज में किसी की हत्या कर देना साधारण सी बात है। मूल प्रश्न यह है कि, हम कानून का राज्य चाहते हैं। किसी भी स्थिति में खून या हत्या का उदात्तीकरण गलत ही नहीं, निन्दनीय भी है। यदि हमें कानून का राज्य अपेक्षित है, मारा गया व्यक्ति राक्षस है, इस प्रकार उसका खून करने का अधिकार मनमाने कायदे के अनुसार तय करने का अधिकार न्यायालय का है और राक्षसी कृत्य के लिए न्यायालय ही सदा दे सकता है।

आज दुर्भाग्य से हम दोहरा जीवन जी रहे हैं। चारित्र्य के हमने दो भाग कर दिये हैं - एक वैयक्तिक जीवन और दूसरा सार्वजनिक जीवन। जब कोई सार्वजनिक जीवन के बारे में या सार्वजनिक चरित्र के बारें आक्षेप करता है। तब वह कह देता है कि, उसका वैयक्तिक चारित्र्य देखिये। अर्थात नहीं देखिये, जो सुविधाजनक है, यही उसका तात्पर्य है। क्योंकि चारित्र्य और साधन-शुचिता संदर्भरहित हो जाते हैं। हम यह भूल ही जाते हैं कि, संकल्प, सिद्धांत, ध्येय और साधन एकरूप और समरस नहीं होंगे, तो ध्येय ही कलुषित, विकृत हो जाता है।

साध्य के अनुरूप साधन और जीवन नहीं रहेगा, तो उसका जनमानस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा और यही समझा जाएगा कि, सब ढोंग या पाखण्ड है। अत: साधन और साध्य में समन्वय अत्यंत आवश्यक है, समग्रता भी आवश्यक है। यही सिद्धांत और व्यवहार का समन्वय है। चित्त शुद्धि और साधन शुचिता उसका अधिष्ठान है। इसी के लिए गाँधीजी ने ग्यारह व्रत बताये हैं। व्रत मनुष्य के मोह-माया से मुक्त होने में सहायक होते हैं। स्वतंत्रता तथा ध्येय सिद्धि के लिए व्रत महत्वपूर्ण माने गए हैं। इनसे जीवन में शुचिता आती है। गाँधीजी की प्रार्थना में वे नियमित रूप से बोले जाते थे।

नये युग में लोकतंत्र प्रणाली हमारा ध्येय है और चुनाव साधन है। इसलिए आग्रह रहता है कि, उम्मीदवार चरित्रवान हो। हमें लगता है और चाहते हैं कि, हमारा जनप्रतिनिधि चारित्र्यशील हो। इसलिए अब उम्मीदवार को अपने शपथ-पत्र में अपने चारित्र्य, संपत्ति आदि का ब्योरा देने का प्रावधान जोड़ा गया है। क्या वह फौजदारी अपराध में शामिल था या है, यह जानकारी देनी होती है। अपनी पत्नी की, बच्चों की संपूर्ण चल-अचल संपत्ति घोषित करनी होती है। कर्ज आदि का ब्योरा आदि देना भी जरूरी है। शैक्षणिक योग्यता आदि का उल्लेख आदि नियम जोड़े गए हैं। इन बंधनों के बिना जन प्रतिनिधित्व का ध्येय सिद्ध नहीं हो सकता। इसका आशय यह है कि, लोकतंत्र का ध्येय चुनाव पद्धति से दूषित या कलुषित न हो। अत: उम्मीदवार के लिए जैसी आचार संहिता आवश्यक है, वैसे ही लोकतंत्र के साध्य तक पहुंचने के लिए साधन भी शुद्ध, पवित्र होने चाहिए। अवैध और दूषित साधनों से लोकतंत्र की पवित्रता, स्वच्छता की हिफाजत या रक्षा नहीं की जा सकती। इसी तरह नागरिकों को भी कुछ परहेज करना होगा। चुनाव प्रक्रिया शुद्ध-साफ रहे, यह वर्तमान युग की आवश्यकता है। मतदान का अधिकार नागरिक का सतीत्व है। मत दक्षिणा नहीं है, गोग्रास नहीं है। भिक्षा नहीं है और नैवेद्य भी नहीं है। मतदान मेहरबानी के कारण नहीं दिया जाता है। मत बेचना या खरीदना, धर्म, जाति या पंथ के नाम पर हड़पना भी महापाप है। इसलिए मतदान के अंतिम क्षण तक निर्णय करने की स्वतंत्रता किसी तरह के आश्वासन से खोना नहीं चाहिए। मतों को नीलाम करके लोकतंत्र को बाजारू बनाने का पाप न किया जाए। धन के लोभ से, लाठी के भय से, सत्ता के आतंक से मतदान न किया जाए। ऐसा करना लोकद्रोह या आत्मवंचना है। सम्प्रदाय, जात-पात, अस्पृश्यता मानने वालों को मत न दिया जाए। व्यसनी, दुराचारी को अथवा सत्ता द्वारा जिसने नागरिकों के मूलभूत अधिकारों का हनन किया है, उसे मत देना लोकतंत्र की हत्या है। उम्मीदवार मतदाताओं से आश्वासन न चाहें, भय-प्रलोभन न दिखायें। शुचिता के ये मूल्य सिर्फ राजनीतिक चुनावों पर ही लागू नहीं होते। बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्रों के साथ-साथ चुनाव में सभी क्षेत्रों पर पूरे अर्थों में लागू होने चाहिए। दादा धर्माधिकारी के शब्दों में कहा जाए तो, 'गाँधी की विचार और आचार प्रणाली अत्यंत उदात्त, शास्त्रशुद्ध और वस्तुनिष्ठ है।

दुनिया में सब जगह जातिवाद और संप्रदायवाद का बोलबाला हो, चारों तरफ तलवार और शस्त्रास्त्रों की भाषा सुनाई दे रही हो मानव, मानव का वैरी बनने में ही जीवन को सार्थक मान रहा हो, ऐसे में जो महामानव उच्च स्वर में, मुझे मेरी अहिंसा की शर्म महसूस नहीं होती-ऐसा नम्र आत्मप्रत्यय के साथ कहता था।

मानव विद्रोह के विषैले झंझावात में जिसकी मानव निष्ठा बुझने के बदले और अधिक प्रज्ज्वलित होती थी। उसका चरित्र और चारित्र्य, उसका तत्व ज्ञान और नीति सागर के समान व्यापक है, गंगा की तरह पवित्र है और गौरीशंकर सदृश उज्ज्वल और उत्तुंग है। महाकवि कालिदास का देवात्मा हिमालय पृथ्वी का मापदंड है। महामानव आत्मा गाँधी अखिल मानवता का मापदंड है। उसकी वृत्ति से, उक्ति से और कृति से मानवता की लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई और गहराई मापी जा सकती है। ऐसे महामानव आत्मा को, उसकी अकुंठित निष्ठा को, उसके असीम पौरुष को, उसके अनंत वीर्य और अपराजेय पराक्रम को शतश: प्रणाम। यही मानव का भव्य, पुण्यकारी और कल्याणमय विश्वदर्शन है' और यही गाँधी तीर्थ और गाँधी रिसर्च फाउंडेशन की भूमिका है। यह संशोधन केन्द्र और गाँधी तीर्थ, गाँधी विचारों और उनके आचारों का प्रक्षेपण केन्द्र और श्वसन केन्द्र बने यही हमारी आकांक्षा है।

खोज गांधी जी की

स्त्रोत: गांधी रिसर्च फाउंडेशन, जलगांव, महाराष्ट्र

■

आलेख

गांधी व्यक्ति नहीं विचार है

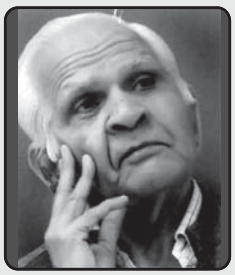

युगेश शर्मा

मेरी सात दशक से कुछ अधिक की जीवन-यात्रा स्वतंत्रता संग्राम के महानायक, सत्य-अहिंसा के पुजारी और कथनी एवं करनी के बीच शत्-प्रतिशत तालमेल के पक्षधर महात्मा गांधी के विचारों और उन पर आचरण की छाया में पूरी हुई है। मेरे निवास के पूजा घर में मैं चौबीसों घंटे भारतमाता के इस महान सुपुत्र की उपस्थिति को अनुभव करता हूँ। उनके साथ मेरा तादात्म्य भंग न हो, उसके लिए मेरे पूजा घर में देवी-देवताओं और अपने आराध्यों के चित्रों के साथ एक बड़ा चित्र राष्ट्रपिता बापू का भी मौजूद है। इसके अलावा वहां बा-बापू दोनों एक संयुक्त चित्र भी है। यह उल्लेख मैं स्वयं को कोई बड़ा गांधी भक्त अथवा गांधीवादी साबित करने के लिए नहीं, अपितु यह जाहिर करने के लिए कर रहा हूं कि गांधी भी ईश्वरीय शक्ति से परिपूर्ण शख्सियत हैं। वे केवल जल्सों में लंबे-लंबे भाषण के विषय मात्र हैं। वे हम भारतीयों के लिए प्रात: स्मरणीय और अनुकरणीय हैं। महापुरुष तालस्ताम ने ठीक ही कहा था कि आने वाले समय में लोगों को विश्वास नहीं होगा कि गांधी जैसा साधारण सा हाड़-मांस वाला महापुरुष भारत की धरती पर पैदा हुआ था। बा-बापू 150 अर्थात गांधीजी और कस्तूरबा के 150 वें जन्म वर्ष के अवसर पर दुनिया भर में स्मरण कार्यक्रम हुए हैं और अब भी हो रहे हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने तो 150 वे वर्ष को अहिंसा वर्ष के रूप में विश्व भर में मनाया है। दुनिया की महाशक्तियां भी गांधी और उनके सत्य-अहिंसा के सिद्धांतों की तरफ तेजी से मुड़ रही है। विश्व भर में गांधी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विश्व विद्यालयों में शोध और अध्ययन हो रहे हैं। अभिप्राय यह कि दुनिया तेजी से गांधी की तरफ उन्मुख हो रही है।

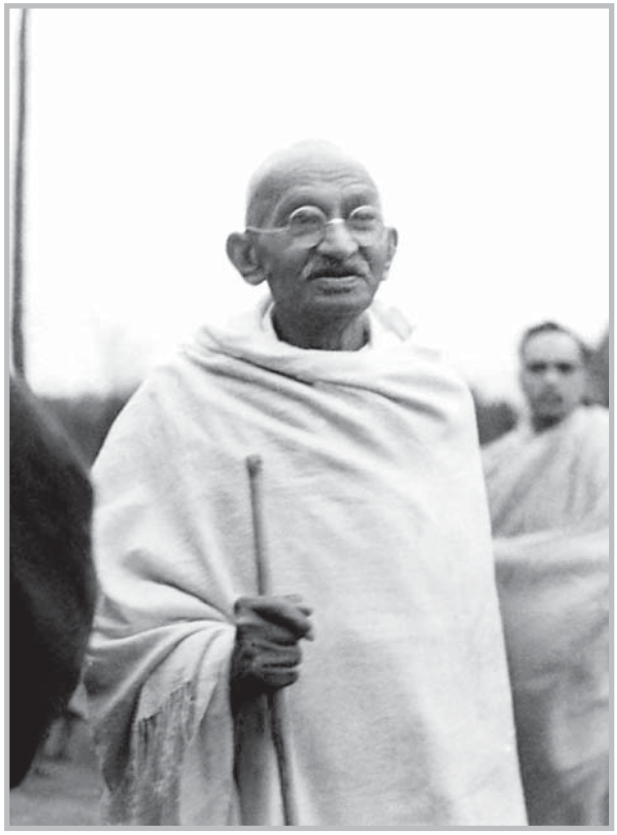

फरवरी 2020 के अंतिम सप्ताह में अमेरिका के राष्ट्रपति श्री डोनाल्ड ट्रंप भारत यात्रा पर आये थे। इस यात्रा के दौरान वे गांधी के विश्व विख्यात साबरमती आश्रम भी गए थे और उनके चित्र पर सूत की माला भी चढ़ाई थी, चरखा चलाया था और गांधीजी के प्रिय तीन बंदरों के बारे में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से जानकारी भी ली थी। श्री ट्रंप और उनकी पत्नी जब बापू के कक्ष से बाहर निकले, तो वे उनकी महानता और त्याग में भी जीवन शैली से काफी अभिभूत नजर आए रहे थे। जितने भी राष्ट्राध्यक्ष भारत की यात्रा पर आते हैं, वे राष्ट्रपिता गांधी की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित कर स्वयं को धन्य अनुभव करते हैं। भारत का जन-मन जिन महात्मा गांधी को अपार श्रद्धा के साथ 'राष्ट्रपिता' कहता मानता है। यदि पिछले 15-20 वर्षों पर नजर डाली जाए तो यह बात उभर कर सामने आती है कि महात्मा गांधी ने भारत को आजादी दिलवाने के लिए जो त्याग, तपस्या और साहस से परिपूर्ण अद्भुत भूमिका निभायी है। दरअसल भारत के लिए गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम और देश की बेहरी के लिए जो सोचा, कहा और किया है।

मैं एक साहित्यकार, पत्रकार और स्तंभकार होने के कारण मैं गांधी के विचार और उनके कृतित्व से इतना प्रभावित हूं। इस प्रभाव की शुरुआत छात्र जीवन से ही हो गई थी। हुआ यह था कि गांधीजी की पौत्री मनु बेन गांधी हमारे शिवाजीराव उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (इंदौर) में हम छात्रों को संबोधित करने पधारी थीं। उनके उस उद्बोधन से प्रभावित होकर मैंने तब ही गांधी पथ पर चलने का संकल्प कर लिया था। जब लेखन की शुरुआत की और बाद में शासकीय सेवा में आया तो लेखन का काम आगे बढ़ा। गांधी जन्म शताब्दी वर्ष 1969 में म.प्र. शासन ने दिल्ली में आयोजित हुई गांधी दर्शन प्रदर्शनी में 15 दिन के लिए मुझे गाइड बनाकर भेजा था। तब शासकीय सेवा में आये मुझे बमुश्किल तीन साल ही हुए थे। उस समय मैंने गांधीजी से संबंधित पुस्तकें खूब पढ़ीं। मैंने उसी वर्ष गांधी विचारों पर केन्द्रित नाट्य कृति 'ढहतीं दीवारें' लिखी जिसको म.प्र. शासन ने पुरस्कृत किया था और म.प्र. हरिजन सेवक संघ, इंदौर ने उसको पुस्तक के रूप में प्रकाशित भी किया। भोपाल के रवीन्द्र भवन में वह मंचित हुआ तथा मराठी में 'गेले ते दिवस' के नाम से अनुदित यह नाटक महाराष्ट्र में अब भी मंचित होता है।

आकाशवाणी ने उसको अपने स्थायी अभिलेखागार में शामिल

किया है। इसके अलावा बा–बापू 150 के प्रसंग में गांधी विचारों पर केन्द्रित नाटक, रूपक और आलेखों की मेरी कृति 'गांधी पथ' का लोकार्पण 12 दिसम्बर 2019 को गांधी भवन, भोपाल में प्रख्यात गांधीवादी चिंतक द्वय डॉ. एस.एन. शुब्बाराव और श्री रघु ठाकुर ने किया है। यह कृति इन दिनों चर्चा में है। यह विवरण मैंने इस उद्देश्य से दिया है, जिससे कि इस बात की पुष्टि हो सके कि मैंने किस सीमा तक गांधी और उनके विचारों और कृतित्व पर कुछ कहने का अधिकारी हूँ। मैंने अब तक गांधी को जितना जाना, समझा और जिया है, उसके आधार पर विनम्रता तथा आत्म विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि गांधी ने भारत के लिए जो कठिन तपस्या की है, स्वयं को बार–बार गंभीर खतरों में डाला है और उसके एवज में देश से कुछ नहीं लिया, उसके दम पर उनकी जड़ें भारत की धरती में बहुत गहरी उतर चुकी हैं। गांधी रूपी वटवृक्ष को कभी सुखा नहीं पाएंगी। दूसरी बात गांधी ने अब तो आम भारतीयों के दिलों में अपना स्थायी मुकाम बना लिया है। क्योंकि भारत कृतज्ञता भाव से संस्कारित लोगों का देश है। यहां के लोग जिस पर जब एक बार आस्था और विश्वास कर लेते हैं, उसको कभी खारिज नहीं करते। राम, कृष्ण, बुद्ध और नानक आदि महापुरुषों की इस धरती की यह स्थायी प्रकृति और महानता है।

गांधी ने स्वतंत्र भारत का जो मार्ग बताया था, गांधी ने देश की प्रगति के लिए सत्य और अहिंसा के दो आधार दिये हैं। गांधी सबको साथ लेकर चलने के पक्षधर थे। उन्होंने बाँटने की बजाय जोड़ने का रास्ता बताया था, क्योंकि वे मानते थे कि स्वतंत्रता को बनाये रखने के लिए भारत को इसी रास्ते पर चलना होगा। वे किसी भी वर्ग जाति और धर्म को अविश्वास की दृष्टि से नहीं देखते थे। उन्होंने नोआखाली की अपनी निर्णायक ऐतिहासिक यात्रा के दौरान एक पत्रकार के प्रश्न के उत्तर में कहा था कि 'दुनिया को बता दो कि गांधी अंग्रेजी भूल गया है।' हमें लौटकर फिर गांधी पथ पर आना ही होगा। यह वक्त की जरूरत भी है।

गांधी एक व्यक्ति नहीं, विचार है और यह सर्वमान्य विश्वास है कि विचार कभी मरा नहीं करते। वे सदा जीवित रहते हैं और जन–मानस को प्रभावित और प्रेरित करते रहते हैं। गांधी ने इसी कारण अपने जीवनकाल में कोई वाद नहीं चलाया। उन्होंने तो अपने जीवन में देश के कल्याण के लिए कई प्रयोग करके बताया था कि उन प्रयोगों के आधार पर देश चलेगा तो वह लोक भावनाओं का सम्मान करते हुए चौमुखी विकास कर सकेगा। और विषमाताओं की जो दीवार खड़ी हो गई हैं, उनको जमींदोज किया जा सकता है। वस्तुत: गांधी तो भाषणों में नहीं, आचरण में है। जब राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, नानक आदि विभूतियां विचार रूप में शताब्दियों तक लोगों के दिलो दिमाग में जीवित रह सकती हैं, तो गांधी क्यों नहीं ? गांधी कल भी हम भारतीयों की आशा के केन्द्र थे और भविष्य में भी रहेंगे। सौ बात की एक बात तो यह है कि गांधी के बिना भारत का उद्धार और विकास न वर्तमान में संभव है एवं न भविष्य में संभव होगा।

व्यंकटेश कीर्ति 11, सौम्या एन्क्लेव एक्सटेंशन चूना भट्टी, भोपाल–462016,
मो. 9407278965

■

आज अगर गांधी होते

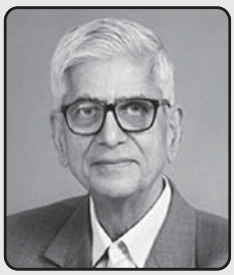

डॉ. डी.आर. मेहता

जयपुर फुट संस्था के व्यवस्थापक के रूप में डॉ. डी.आर. मेहता का जन्म 25 जून 1937 को राजस्थान के जोधपुर जिले में हुआ था। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से स्नातक और लंदन से लोक प्रशासन विषय में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। आपका चयन 1961 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में हुआ। अवकाश प्राप्त करने के बाद आपने 1975 में 'भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति' की स्थापना की और विकलांगों की सेवा में खुद को समर्पित कर दिया। आपके इस प्रयास की सराहना करते हुए कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया। गांधी रिसर्च फाण्डेशन के संचालक के रूप में आरंभ से ही अपनी भूमिका अदा कर रहे है। गाँधी विचार के प्रति आपका नजरिया एक नए दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। गाँधी तीर्थ के उद्घाटन के दौरान आपके द्वारा लिखा यह लेख हमारे पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

– संपादक

गांधीजी हमेशा खोज में लगे रहते थे। प्रयोग करते रहते थे। अपनी आत्मकथा का शीर्षक भी उन्होंने सत्य के प्रयोग – रखा। सत्याग्रह का विचार और क्रियान्वयन, जिसमें उन्होंने कई बार परिवर्तन किए, यह उनके प्रयोगात्मक या खोजी मानस का ही परिणाम था। दक्षिण अफ्रीका के शुरुआती आंदोलन से भारत में स्वतंत्रता संग्राम के अलग-अलग पहलुओं का विश्लेषण करें तो यह स्पष्ट दिखाई देता है कि वह परिस्थितियों का गहराई से अध्ययन कर, आंदोलन का कार्यक्रम निश्चित कर, सफलता या असफलता के आधार पर अगले कार्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन करते थे। परंतु गाँधीजी के जाने के बाद उनके खोज या प्रयोग का यह पहलू, उनके अनुयायियों ने नजरअंदाज कर दिया। गाँधीजी के हर शब्द को उनके कुछ अनुयायियों ने वेद वाक्य मान लिया। इससे गाँधीवाद में बहुत कुछ ठहराव आ गया।

उदाहरण के लिए खादी पर विचार करें। गाँधीजी खादी द्वारा बेरोजगारी की समस्या का समाधान करना चाहते थे। वे यह भी चाहते थे कि खादी गरीब का पहनावा बने। यह बहुत ही आवश्यक या सुंदर भाव था। यह गाँधीजी की तह तक जाने के प्रयास का फल था। पर आज खादी संस्थाओं की आर्थिक सुदृढ़ नहीं है। अधिकतर संस्थाएं घाटे में हैं। खादी का कपड़ा मंहगा भी हो गया है। इसे कातने-बुनने वाले को कम मजदूरी मिलती है। इसे बहुत कम लोग पहनते हैं। युवा पीढ़ी तो शायद ही खादी का प्रयोग करती हैं। खादी के मूल विचार को अक्षुण्य रखते हुए खादी को वापस कैसे प्रोत्साहित किया जाए? गाँधीवाद में सामान्यत: विश्वास रखने वाले इस पर सोचते ही नहीं। कुछ लोगों ने सोचा। अंबर चरखा आया। पोलिस्टर खादी आई। कुछ अन्य प्रयोग हुए। पर इन पर पूर्ण सहमति नहीं बन पाई।

यदि गाँधीजी आज होते तो उनका क्या मत होता और वह क्या परिवर्तन करते? वे निश्चित रूप से आज के विज्ञान को खादी से जोड़ते। आज के जो प्रबंधन या विक्रय के सिद्धांत हैं, उन पर भी सोचते और जनहित में यथा संभव उनका उपयोग करते। सौर ऊर्जा का भी प्रयोग करते। शायद खादी के उत्पादन और वितरण की व्यवस्था, अवश्य मूल भाव से खंडित किए बिना परिवर्तन होता।

दूसरा उदाहरण सत्याग्रह का लें। सत्याग्रह एक नैतिक प्रणाली है। इसका आधार है सत्य। जब भी उनको लगा कि सत्याग्रह सत्य के साथ नहीं है तो उन्होंने सत्याग्रह बंद कर दिया। पर आज कई बार सत्याग्रह का स्थान दुराग्रह ने ले लिया है। अपनी गलत माँगों को भी मनवाने के लिए संख्या के आधार पर आंदोलन चलाये जाते हैं और उन्हें सत्याग्रह कहा जाता है।

गाँधीजी यदि आज होते तो इस प्रकार के आंदोलनों का अनुमोदन वे नहीं करते। उनका प्रयास यह होता कि आंदोलन में आध्यात्मिकता का अंश आए। गाँधीजी दरिद्र नारायण की बात करते थे। वही उनका केन्द्र बिन्दु था। गरीबी मिटाने के लिए उनके कुछ प्रयोग थे। वे विकेन्द्रिकरण चाहते थे। ग्राम संस्थाओं को सशक्त बनाना चाहते थे। उन्हीं के विचारों का सम्मान करते हुए

भारतीय संविधान में भी इस पर बल दिया गया। सन् 1993 में ग्राम संस्थाओं को और सशक्त बनाने के लिए भारतीय संविधान में संशोधन भी किया गया। पर आज कई ग्राम संस्थाएं अच्छा कार्य नहीं कर रही हैं। आर्थिक अनियमितताएं, जातिवाद, संकीर्णता आदि बिन्दु उठाये जाते हैं। आज अगर गाँधीजी होते तो वे सिर्फ आकृति से ही संतुष्ट नहीं होते, अपितु उनको फल से आंकते। वे उन्हें शुद्ध और जीवंत बनाते।

सारांश यह है कि गाँधीजी के सिद्धांतों के क्रियान्वयन में जो ठहराव व खिसकाव आया है, उसको चलायमान बनाने का एक तरीका है, उन पर चिंतन और प्रयोग।

स्त्रोत: गांधी रिसर्च फाउंडेशन, जलगांव, महाराष्ट्र

आलेख

महिला सशक्तिकरण में गांधीजी का योगदान

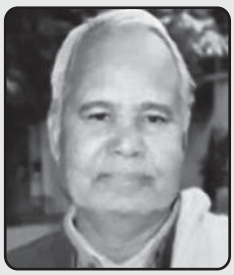

दयाराम नामदेव

गांधीजी ने एक आदर्श समाज की कल्पना की थी। ऐसा समाज जहाँ भाईचारा, सत्य, अहिंसा और प्रेम का वास हो। जहाँ सबकी उन्नति की बात कही गई है। एक स्वस्थ और सुव्यवस्थित समाज के लिए उस समाज में रहने वाले प्रत्येक स्त्री और पुरुष का अपना-अपना दायित्व एवं कर्तव्य है जो उस समाज को दृढ़ बनाता है। किन्तु इतिहास साक्षी है कि भारतीय समाज हजार वर्षों से बहुत भीषण एवं अनगिनत कुरीतियों से जकड़ा पड़ा है। ये सामाजिक कुरीतियां जनता को अपने चुंगल में जकड़े हुए है। पुरुष प्रधान समाज में नारी के व्यक्तित्व को बहुत सीमित कर दिया है। नारी को देवी मानकर उसकी आराधना तो की जाती है पर उसकी स्वतंत्रता के विषय पर एक प्रश्न चिन्ह लगा दिया जाता है। गांधीजी कहते है कि समस्त रूढ़ियाँ और सामाजिक नियम केवल पुरुषों द्वारा बनाए गए हैं और वे सभी स्त्रियों के विरूद्ध हैं। मगर, लंबी गुलामी एवं प्रताड़ना की वजह से स्त्रियाँ हीन भावना से ग्रासित हो गई हैं। उसने भी पुरुषों को अपने से श्रेष्ठ एवं अपना स्वामी मान लिया है और अपने आपको उसके रहमोकरम पर छोड़ दिया है। गांधी जी स्त्री एवं पुरुष को समान अवसर के पक्ष में थे। उन्होंने लिखा है मैं स्त्री पुरुष की समानता में विश्वास रखता हूं। इसलिए स्त्रियों के लिए उन्हीं अधिकारों की कल्पना कर सकता हूं जो पुरुषों को प्राप्त है।

परन्तु पुरुष प्रधान समाज सदा स्त्रियों पर अत्याचार करता आया है। उसे अबला कहकर उसका अपमान करता है आज भी पुरुष अपने को स्त्री से श्रेष्ठ समझता है। उस पर अपना अधिकार जमाता है, अपनी संपत्ति समझता है। यही भावना स्त्री-वर्ग में विद्रोह ला देती है। गांधीजी इस परिस्थिति से दु:खी थे। उन्होंने कहा कि पुरुष और स्त्री में आत्मा तो एक है, दोनों का दर्जा समान है, पर वे एक नहीं है। वे ऐसी अनुपम जोड़ी है जिसमें प्रत्येक एक दूसरे का पूरक है। वे एक दूसरे के लिए आश्रयरूप है। यहाँ तक कि एक के बिना दूसरे की हस्ती की कल्पना ही नहीं की जा सकती। इन तथ्यों से यह जरूरी निष्कर्ष निकलता है कि जिस बात से दोनों में से एक का भी दर्जा घटेगा उससे दोनों की बराबर बरबादी होगी।

किसी भी सुदृढ़ एवं स्वस्थ समाज के लिए यह महत्वपूर्ण होता है कि उसमें स्त्रियों की सामान्य स्थिति क्या है ? वे समाज की विभिन्न समस्याओं एवं अपने कर्तव्य तथा दायित्व के प्रति कितनी जागरूक है। क्योंकि एक समाज को स्त्री और पुरुष दोनों मिलकर ही पूर्ण बनाते हैं। गांधीजी एक सफल द्रष्टा होने के कारण उन्होंने नारी की समस्या को समझा और इसके समाधान के सरल मार्ग निकाले। नारी की समस्या के संदर्भ में गांधीजी के विचारों एवं कार्यों को दो स्तर पर रखकर देखा जा सकता है - (1) स्त्रियों के प्रति परम्परागत समस्याओं के संबंध में उनके विचार और (2) राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में एवं राष्ट्रीय विकास के कार्यों में स्त्रियों की सहभागी बनाने की दिशा में उनके प्रयास।

गांधीजी ने अपने आंदोलन को सक्रिय और सफल बनाने के लिए स्त्री शक्ति को भी साथ मिलाया। 6 अप्रैल 1930 को गांधीजी ने दांडी में नमक कानून तोड़कर सत्याग्रह आरंभ किया। महिलाओं के लिए संदेश में उन्होंने कहा मेरा विश्वास दिन-प्रतिदिन दृढ़ होता जा रहा है कि स्वाधीनता की प्राप्ति में स्त्रियां पुरुषों से अधिक सहायक हो सकती हैं, क्योंकि अहिंसा का अर्थ वे पुरुषों से अधिक समझती हैं। यह इसलिए नहीं कि वे अबला हैं बल्कि इसलिए कि सच्चे त्याग और साहस की भावना उनमें पुरुषों से कहीं अधिक हैं उन्होंने एक सफल द्रष्ट और व्यवहारिक होने के कारण राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से कहीं अधिक स्वतंत्रता संग्राम में एवं राष्ट्रीय विकास के कार्यों में स्त्रियों को सहभागी बनाने की दिशा में जो प्रयास किये, वे अनुपम हैं।

महात्मा गांधी ने देश की स्वतंत्रता के लिए स्त्री शक्ति का आहवान किया तो हजारों की संख्या में अमीर-गरीब, साक्षर-निरक्षर स्त्रियां देश के काम के लिए घरों से बाहर निकल पड़ी। जो स्त्रियां कभी चौके, चूल्हे से बाहर नहीं निकली थीं, वे पुरानी मर्यादाओं पर विश्वास रखने वाली बूढ़ी स्त्रियां सभी के सभी शक्ति और साहस लेकर अपार जन समुद्र में कूद पड़ीं। वे अनपढ़ होते हुए भी सत्याग्रहियों के बड़े-बड़े दल की कप्तानी करती थीं।

जयजगत।

- सचिव, गांधी भवन न्यास, भोपाल

गांधी तीर्थ से ...

गांधी तीर्थ का निर्माण! यही मेरी अंतरात्मा की आवाज है: बड़े भाऊ

डॉ. भवरलाल जैन

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक डॉ. भवरलालजी जैन एक उमदा सामाजिक व्यवसायकर्ता थे। प्यार से सभी लोग आपको बड़े भाऊ कहते थे। अपने जीवन के दौरान भाऊ ने जिन अप्रतिम संस्थाओं का निर्माण किया है उनमें से एक है, 'गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन'। किसी एक व्यक्ति के सम्मान में समर्पित ऐसी विश्व की यह सबसे विशाल संस्था है। यहाँ गाँधीजी एवं उनके जीवन को सुसंवादात्मक संग्रहालय के रूप में प्रदर्शित करने के अलावा यहाँ आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण वर्गों में छात्रों पर गाँधीजी के अहिंसा, स्वावलंबी, आत्मोद्धारक ग्रामविकास ऐसे जीवन मूल्यों के संस्कार किए जाते हैं। बा-बापू 150 के अंतर्गत संस्था के क्रियाकलाप देहातों में भी प्रसारित किए जाते हैं। विशेष ध्यान देने लायक बात यह है कि आजादी के बाद किसी भी एक व्यक्ति ने गाँधीजी पर इतनी विराट परियोजना कार्यान्वित नहीं की है जो उनके विचारों और सपनों को भविष्य की कई पीढ़ियों तक ले जा सके। ऐसी क्या प्रेरणा रही की बड़े भाऊ ने विराट गाँधी तीर्थ स्मारक का निर्माण कर दिया? आइए उनके द्वारा लिखी गई भूमिका को देखें।

- संपादक

भगवान को किसी ने नहीं देखा है। परंतु उनके सितारे अलग-अलग समय पर जरूर दिखते हैं। यह भी कहा जाता है कि जब-जब अन्याय, अत्याचार का अतिरेक हो जाता है, तब-तब ऐसा कोई देवदूत आता है, जो अन्याय का निवारण करने में अपने आपको झोक देता है। जब पूर्वी संस्कृति व सभ्यता का अंत और पश्चिमी संस्कृति का उदय हो रहा था, ऐसे समय में समाज, संस्कृति, सभ्यता का सही मार्ग बताने वाला मार्गदर्शक गाँधीजी के रूप में इस दुनिया को मिला। अपने जीवन का आरंभ गाँधीजी ने इंग्लैंड में उच्च शिक्षा प्राप्त करने तथा उसके बाद अफ्रीका में भारतीयों पर होने वाले अत्याचारों को मिटाने के लिए किया। ठीक वहीं संस्कृति, जिसने भारत पर कब्जा किया था, दक्षिण अफ्रीका में भी मौजूद थी और जैसे भारत में अन्याय, अपहरण का सिलसिला जारी था, उससे भी कहीं अधिक मात्रा में दक्षिण अफ्रीका में चल रहा था। इसलिए गाँधीजी ने अपने जीवन के करीब 21 साल दक्षिण अफ्रीका में लगाए। यहीं पर उन्होंने अपने जीवन का मूलभूत दृष्टिकोण हासिल किया। हम अन्याय का निवारण कर सकते हैं और साथ में अन्यायी के प्रति प्रेमभाव भी रख सकते हैं, इस बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत को दुनिया के सामने रखा।

मेरा अपना जीवन, पहले से ही गाँधी विचारों, उनके कामों और तौर-तरीकों से प्रभावित रहा है। वैसे जैन धर्म में जन्म लेने के कारण सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अनेकांत सिद्धांत, यह सब मुझे वसीयत के रूप में मिले थे। गाँधीजी पर भी भगवान महावीर का व्यापक प्रभाव था। खान-पान, आध्यात्मिक, प्रेम-भावना, मीठी बोली, जैसे वाणी वैसी करनी जैसे व्यक्तित्व वाले महापुरूष को मैं खोज रहा था। जब इन सब गुणों का एक सागर सा संचय एक जगह दिखा, तो मैं और भी भाव-विभोर हो गया।

बहुत वर्षों से एक धुंधली सी तीव्र इच्छा थी कि, मैं गाँधीजी की स्मृति में कुछ ऐसा काम करूँ, जिससे उनके जीवन, विचारों और कार्यों की स्मृति को चिरंतन कर सकूँ। यह करने में संपत्ति का उपयोग तो होना ही था। तीन-चार दशकों से प्रामाणिकता के साथ मैं संपत्ति जोड़ता रहा और साथ-साथ अपनी इस अभिलाषा को खाद-पानी देता रहा। जब भी जीवन में कठिन मोड़ पर अपने आप को खड़ा पाता, गाँधीजी के जीवन में झाँक कर देखने की कोशिश करता। सिलसिला बहुत लंबा चला और छः-सात साल पहले मणिभवन में ऐसी प्रेरणा हुई कि, इस काम को अब मूर्त रूप प्रदान करना जरूरी है। मैं देश के कुछ प्रमुख शहरों में, जहाँ गाँधीजी की साहित्य सामग्री का संचय था, भंडार था, वहाँ जाकर उनसे अपना संबंध जोड़ा, कुछ अनुभव हुआ। उसी वक्त मैंने गांधीजी के साहित्य को संकलित करने का दृढ़ निश्चय किया।

साबरमती, वर्धा, दिल्ली, आदि जगहों पर गया, जो गाँधीजी के पवित्र स्पर्श से पुनीत हुई थी। 2004 की शुरूआत में महात्मा गाँधी राष्ट्रीय संग्रहालय में जितना महत्वपूर्ण साहित्य गाँधीजी द्वारा या गाँधीजी पर लिखा गया था, वहाँ मौजूद था, उसे खरीदने का सिलसिला शुरू किया। उसके पश्चात जैसे-जैसे धुन मिलती गई, प्रभु की प्रेरणा से नये-नये विचार, इस संकल्प को कार्यान्वित करने के लिए आते गए, वैसे-वैसे मैं आगे बढ़ता गया।

यहाँ आते वक्त दिल में कुछ लेकर मत आइए। यहाँ आकर जो कुछ आप अनुभव करें, वह ले जाइए। इतना ही वह प्रसाद है। इसके अलावा यहाँ कुछ नहीं है। यहाँ पक्षी होंगे, एक शांत वातावरण होगा और यहाँ बैठने के बाद आपके मन में जो भी विचार होंगे, वे शुद्ध ही हो जाएँगे।

पर सभी के मन में एक प्रश्न सताता है, विशेष करके गाँधीवादियों के मन में, कि इस व्यापारी या उद्योगपति को गाँधीजी का ऐसा स्मारक बनाने की कल्पना कैसे सूझी? क्या कारण है? कुछ तो होना चाहिए? मतलब उनके मन में शंका है कि, इसके पीछे कुछ तो होना चाहिए? मतलब इसको बाजारी रूप मिलेग! ऐसे अनेक प्रश्न लोगों के मनों में होते हैं। वे प्रश्न लोग मुझसे नहीं पूछते हैं। पर वो होता है सभी के दिल में, इस बारे में मुझे कोई शंका नहीं होती। मेरा यही कहना है कि, आदमी की तरफ क्या देखते हो, उसके काम की तरफ देखो।

गाँधीजी ने आदमियों की तरफ देखकर यह आंदोलन चलाने का ठहराया होता, तो कुछ नहीं हो पाता। जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल को देखिए - एक दक्षिणी ध्रुव और दूसरा उत्तरी ध्रुव। ऐसी परिस्थिति थी। अपने जीवन में हर पल इस तरह के व्यक्तियों से काम लेने का संदर्भ गाँधीजी के जीवन में आया। उन्होंने स्वयं के आचरण से, स्वयं के चरित्र

से, सभी के दिल जीत लिए। इस मंदिर में पुजारी नियुक्त करने के लिए किसी प्रकार का कोई स्पष्टीकरण न देते हुए न्यायमूर्ति के पास चले गए, उनसे कहा साहब, आप इस गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के चेयरमैन का पद स्वीकारें, यह हमारी दिली इच्छा है और यही विनती आपसे मैं करने आया हूँ। अंततः उन्होंने मेरे निवेदन को स्वीकार कर लिया।

कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि, गाँधीजी को पैसों से क्या मतलब, वे तो महात्मा थे। पर मुझे लगता है कि, पैसों से जितना गाँधीजी का संबंध आया, उतना किसी अन्य नेता का संबंध नहीं आया। अन्य किसी नेता को इतने पैसे मिलते ही नहीं, पर गाँधीजी को मिले। वे पैसे इकट्ठा करने के लिए अपने चश्मों की नीलामी करते, अपनी चप्पलों की नीलामी करते, मिलने वाली भेंट वस्तुओं की नीलामी करते रहते थे। एक बार गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर को अपने आश्रम की व्यवस्था के लिए पैसों की ज़रूरत महसूस हुई, तो वे दिल्ली आये और पैसो के इंतजाम के लिए खुद नाटक करना चाहते थे। यह बात जब गाँधीजी को पता चली, तो उन्हें बहुत दुःख हुआ।

इतने बड़े आदमी को पचास हजार रूपये के लिए दिल्ली नाटक करने आना पड़ रहा है। गाँधीजी जैसे व्यक्ति को यह बात नहीं जंची। उन्होंने अपने सेक्रेटरी को बुलाया और कहा कि, गुरुदेव को पैसों के इंतजाम के लिये यहाँ आना पड़ रहा है। क्या तुम पचास हजार रूपये का इंतजाम नहीं कर सकते हो। उन्होंने बिरला जी को फोन किया और बिरला जी ने पचास हजार का ड्राफ्ट भेज दिया। इन सबका रिकार्ड है। मारवाड़ी के यहाँ पैसों का रिकार्ड रखना बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस प्रकार गाँधीजी ने पैसे भेज दिये और टैगोर को दिल्ली आने और खुद नाटक करने की जरूरत नहीं पड़ी।

उन्होंने इतनी बड़ी क्रांति की। उसे करने में पैसों की जरूरत तो पड़ी ही होगी और उन्होंने बहुत सा पैसा आम जनता से इकट्ठा किया होगा। आँखों में आँसू आ जाएँ, ऐसे प्रसंग हैं। वह फंड उन्होंने कैसे खड़े किए। कोई छोटी लड़की, कोई विधवा औरत अपने शरीर पर रहने वाले गहने हँसते-हँसते गाँधीजी को सौंप दिये। ऐसी अनेक घटनायें हैं। इसलिए यह एक स्वतंत्र संशोधन का विषय है। इस आदमी को पैसा खड़ा करने में कितनी दिक्कत आई होगी? उन्होंने कैसे पैसा खड़ा किया होगा, किसी को नहीं मालूम। उन्हें न धनवानों से प्रेम था और न पैसों में आसक्ति थी। सितम्बर 1944 में गाँधी-जिन्ना वार्ता के समय उन्होंने साध्वी उज्ज्वला जी महाराज से भी लगातार 19 दिनों तक विचार-विमर्श किया। गाँधीजी ने साध्वी जी से एक प्रश्न किया कि, आपको हमारे हाथ का अन्न चलेगा? साध्वी जी ने कहा कि, आप ऐसा क्यों सोच रहे हैं? जो शाकाहारी है, जिसे कोई लालच नहीं है। उसके हाथ का खाने में कोई मनाही नहीं है। बिरला जी भी वहीं खड़े थे। उन्होंने दूसरा प्रश्न किया कि, धन और धनवान में कौन बुरा है? गाँधीजी ने उत्तर दिया कि, धनवान को बुरा तो कह ही नहीं सकते। धनवान के घर में ही रह रहा हूँ और साध्वी जी आप भी किसी धनवान के घर में ही रह रही हैं। धन तो लक्ष्मी है, वो तो देवी है। उनको बुरा कह कर कैसे चलेगा? धन तो बुरा हो ही नहीं सकता। बशर्ते धन के प्रति किसी प्रकार की आसक्ति न हो। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि, गाँधीजी ने इतना पैसा खड़ा किया, किंतु उनको धन से किसी प्रकार की आसक्ति नहीं थी।

मुझे ऐसा लगता है कि, गाँधीजी ने जीवन की हर छोटी-मोटी प्रवृत्तियों का किसी न किसी रूप में प्रयोग किया है। देश के लिए उनका उपयोग होना चाहिए। मेरी तो यही अपेक्षा है कि, गाँधीजी की प्रवृत्तियों के माध्यम से देश और समाज का कल्याण करूँ। मुझे ऐसा भी लगता है कि, सिर्फ मानवों के लिए ही नहीं, पशु-पक्षियों के लिए बहुत कुछ करूँ। इसके लिए मेरे परिवार के हर सदस्य का पूरा सहयोग मिलता है। अब यहाँ हम जो निर्माण कर रहे हैं, वे सब हमारे लड़के देख रहे हैं। मेरे नाती-पोते भी देख रहे हैं। वे मुझे देखकर और इस तीर्थ को देखकर गाँधीजी के बारे में पूँछते भी रहते हैं। इनमें गाँधी दर्शन का प्रभाव पड़े, यही मेरी इच्छा है।

मुझे यह सब विरासत में मिला है। माता-पिता पढ़े-लिखे नहीं थे। इसीलिए कोई आधुनिक शौक भी उनमें नहीं था। वो पुराने खयालों के ही रहे। इसलिए उनके विचारों से हमें कुछ मिल पाया। जो कुछ मिला, उनके आचारों से मिला। आचारों से जो संस्कार मिलते हैं, वे बहुत गहराई तक जाते हैं। इसी प्रकार के संस्कार गाँधीजी को भी उनके माता-पिता से मिले थे। उनके जीवन में अनेक अवसर आए, जब इन संस्कारों ने उनकी मदद की।

विश्व में जैसे-जैसे हिंसा, तानाशाही, लालच और भौतिकता की तरफ खिंचाव बढ़ता रहेगा, उसी तरह और ठीक उनसे भी ज्यादा, विश्व में गाँधीजी के विचार, काम तथा संदेश युवाओं में और भी उभर कर उठेगा। इस विश्वास के साथ एक विश्वस्तरीय स्मारक का निर्माण हो, इस भावना की चपेट में आया। उसका ही फलस्वरूप है, गांधी तीर्थ निर्माण। बस आप सबकी मदद, गाँधीजी की प्रेरणा से उनका संदेश जरूरतमंदों तक पहुँचा सकूँ, यही एक भावना है। जीवन के इस संध्याकाल में मेरे अपने दिल की यही भूमिका है। इसके साथ अपने अनुरोध है, हो सके जहाँ तक, इस मंगल रचना में, आप भी सहयोगी बनें, यही मेरी अंतरात्मा की आवाज है।

स्त्रोतः गांधी रिसर्च फाउंडेशन, जलगांव, महाराष्ट्र

■

समीक्षा

मोनिया दि ग्रेट : महात्मा गांधी के बचपन पर आधारित महत्वपूर्ण नाट्य कृति

संदीप राशिनकर

महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती पर देश में लेखन से जुड़े जो भी दिलचस्प काम किये हुए हैं, उनमें शकील अख्तर के शोध आधारित नाटक – 'मोनिया दि ग्रेट' (मोनिया से महात्मा) एक महत्वपूर्ण नाट्य कृति है। नाटक के 2019 में नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में 2 शोज हुए हैं। बड़ोदरा में इस नाटक के मंचन के बाद अब ग्वालियर के 35 बाल और युवा कलाकारों ने 3 शोज किये हैं। नाटक का पहला संस्करण बिक चुका है और अब दूसरा संस्करण ऑन लाइन उपलब्ध है।

नाटक न सिर्फ महात्मा गांधी के 7 साल से लेकर 18 साल तक के बाल जीवन से परिचित कराता है बल्कि वो गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता की ओर भी ध्यान आकर्षित करता है। यही वजह है कि देश के दूसरे रंगमंच से जुड़े निर्देशकों और संस्थाओं में इसके मंचन को लेकर दिलचस्पी बनी हुई है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली में हुए नाटक के पहले दो शोज चिल्ड्रन वर्कशॉप के 25 बाल कलाकारों ने भाग लिया था। पहले दो शोज का निर्देशन थिएटर इन एजुकेशन, (टीआईई, एनएसडी, दिल्ली) के संस्थापक सदस्य और वरिष्ठ बाल रंगमंच विशेषज्ञ हफीज़ खान ने किया। जबकि ग्वालियर में आर्टिस्ट कंबाइन के रवि आफले ने निर्देशन किया।

नाटक में 1876 से 1887 तक की कहानी

'मोनिया दि ग्रेट' एक तरह से पीरियड ड्रामा है। इसमें बापू के बपचन के 1876 से 1887 के प्रसंगों को नाट्य रूपातंरण के रूप में बेहद दिलचस्प तरीके से प्रस्तुत किया गया है। नाटक पांच अंकों का है। हर दृश्य में एक ऐसी बात है जो बच्चों को संस्कारित करती है। नाटक देखते हुए बाल और युवा दर्शक अपने जीवन को भी साथ-साथ देखने और समझने लगते हैं। वे अपनी गलतियों और भूलों को भी विश्लेषित करते हैं। अब तक आजादी के आंदोलन से जुड़े गांधीजी के जीवन पर तो बहुत काम हुआ है लेकिन उनके बचपन पर समग्र रूप से कम ही काम हुआ है। इस दृष्टि से यह नाटक 150 वीं जयंती पर एक महत्वपूर्ण कृति है। नाटक में उन प्रसंगों को जीवंत किया गया है जिनका महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में उल्लो किया है। लेखक ने उन प्रसंगों से जुड़ी शोध सामग्री गांधी स्मृति दर्शन केंद्र राजघाट, दिल्ली और अन्य प्रकाशनों के माध्यम से जुटाई है। नाटक की बहुत बड़ी खूबी इसका गीत संगीत है। नाटक में गीत नाटक को जोड़ने, किसी खास बात को उभारने और नाटक को गति देने का काम का काम करते हैं।

बच्चों के लिए नाटकों का लेखन

नाटक – 'मोनिया दि ग्रेट' के अलावा शकील अख्तर नाटक 'ब्लू व्हेल: एक खतरनाक खेल' नाम का एक और बाल नाटक लिख चुके हैं। इस नाटक का मंचन भी राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में हो चुका है। यह नाटक मोबाइल गेमिंग और गजेट्स के खतरों पर आधारित है। जो बेहद प्रासंगिक विषय है। इस नाटक का किंडल एडिशन 'किलर गेम' के नाम से एमेजॉन पर पढ़ा जा सकता है। जबकि नाटक – मोनिका दि ग्रेट, इंडिया इंक ने प्रकाशित किया है। अब इसका दूसरा संस्करण एमेजान के साथ अनूठा डॉट कॉम (anootha.com) पर उपलब्ध है। इसके अलावा शकील अख्तर कॉमेडी प्ले 'ये फिल्म है जरा हटके' और शेक्सिपयर की प्रमुख ट्रैजिडीज पर एक एक्सपेरिमेंटल प्ले 'हैलो शेक्सपियर' भी लिख चुके हैं। नाटक – ये फिल्म है जरा हटके के अब तक 15 शोज हो चुके हैं। डॉ. राहत इंदौरी प्रेरित उनका कविता संग्रह – 'दिल ही तो है' भी स्टोरी मिरर, मुंबई से प्रकाशित हुआ है।

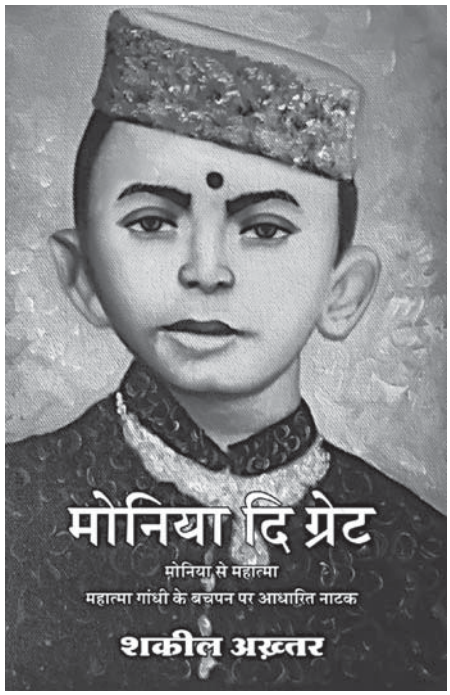

इंदौर और ग्वालियर से जुड़ा है रंगमंच का सफर

शकील अख्तर की रंगमंच और संगीत के प्रति दिलचस्पी बचपन से ही रही है। स्कूल के दिनों से ही उन्होंने नाटकों में भाग लेना शुरू कर दिया था। यद्धपि रंगमंच से उनका नाता 1982 में तब जुड़ा जब इंदौर के ब्रॉन्सन हॉल में स्व. रंग निर्देशक संजीव दीक्षित के निर्देशन में उन्होंने मौलियर के लिखे नाटक – 'वुड बी जेंटलमैन' और प्रो. विनोद डेविड के लिये नाटक – 'सड़क गूंगी है' में एक अभिनेता के रूप में काम किया। इसके बाद प्रख्यात अभिनेता राजेन्द्र गुप्त के निर्देशन में उन्हें – 'बांझ रात' में काम करने का मौका मिला। इन तीन नाटकों ने उनकी रंगमंच के प्रति ऐसी रूचि पैदा कि वे अगले 10 सालों तक शौकिया रंगमंच का हिस्सा बने रहे। इस दौरान उन्होंने इंदौर और ग्वालियर के विभिन्न नाट्य समूहों के साथ 'इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर, जात ना पूछो साधू की, थैंक यू मिस्टर ग्लाड, आखिरी सवाल, जो राम रचि राखा, वैदिकी हिंसा हिंसा ना भवति, आषाढ़ का एक दिन, बलदेव खटिक, आपके कर कमलों से, गज फुट इंच, अपहरण भाईचारे का जैसे नाटकों में काम किया। इन नाटकों के इंदौर, ग्वालियर के अलावा भोपाल, रायपुर, नागपुर, मुंबई और दिल्ली में 20

से अधिक प्रदर्शनों में शामिल हुए। आप आकाशवाणी इंदौर और ग्वालियर के भी आर्टिस्ट रहे। दोनों ही स्टेशनों से प्रसारित 50 से अधिक नाटकों, धारावाहिकों में वाचिक अभिनय किया।

मंच पर सामाजिक दायित्व का निर्वहन

लेखक शकील अख्तर पेशे से पत्रकार और संपादक हैं। उन्होंने हिंदी बेल्ट के 7 प्रमुख पत्रों नई दुनिया, राज्य की नई दुनिया, दैनिक भास्कर, चौथा संसार, फ्री प्रेस जर्नल, महामेधा में करीब 15 साल और देश के अग्रणी न्यूज चैनल इंडिया टीवी में 14 साल तक विभिन्न पदों पर रहते हुए सेवाएं दी हैं। देश की कई पत्र-पत्रिकाओं के लिये लेखन-संपादन किया है। 90 के दशक में पत्रकारिता के पेशे में आने के बाद शकील अख्तर ने रंगमंच के लिये लिखना शुरू किया। अखबारों में कला समीक्षाओं और दूसरी कवरेज को अपनी लेखनी के दम पर जगह दिलाई। कलाकारों और कला गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से उन्होंने indorestudio.com की स्थापना की है। इसके माध्यम से भी वे कलाकारों और कला गतिविधियों पर अक्सर लिखते रहते हैं। एक अभिनेता के रूप में वे पार्लियामेंट अटैक पर बनी फिल्म '13 दिसम्बर' और 'व्हेन मेल गॉट रेप्ड' जैसी फिल्मों और कई डाक्युमेंट्रीज तथा नाट्क रूपांतरों में काम कर चुके हैं। एक गीतकार के रूप में शकील अख्तर के लिखे कई गीत विभिन्न ऑडियो-वीडियो और स्टेज प्रोग्राम्स के लिये रिकॉड हुए हैं।

11 बी, राजेन्द्र नगर, इंदौर- 452012 (म.प्र.) मो.: 8085359770

मोनिया दि ग्रेट : नाटक

मोनिया से महात्मा
महात्मा गांधी के बचपन पर आधारित नाटक

शकील अख्तर

महात्मा गांधी के बाल जीवन पर आधारित नाटक 'मोनिया दि ग्रेट' को लेखक शकील अख्तर ने तथ्य और सत्य को बिना छेड़े उद्देश्यपूर्ण नाटक लिखने पर गांधी को और करीब से जानने में यह नाटक रंगमंच का शाश्वत उदाहरण है। बात जब बचपन की हो तो नाटक के पात्र हमउम्र बाल कलाकारों का प्रदर्शन नाटक को जीवटता प्रदान करता है। मोनिया दि ग्रेड नाटक दरअसल मोनिया से महात्मा तक के सफर और संघर्ष को उजागर करता है। यह नाटक पांच अंकों में जिसमें अलग-अलग दृश्य हैं। प्रस्तुत नाटक का आंशिक भाग यहां पहला अंक के पांच दृश्य दिये हैं शेष चार अंकों हेतु पुस्तक मोनिया दि ग्रेट पढ़ना चाहेंगे।

- संपादक

पात्र-परिचय

(गांधीजी के बचपन पर आधारित इस नाटक में 1876 से 1887 तक के प्रमुख प्रसंग हैं। अधिकतम प्रसंगों का गाँधीजी की आत्मकथा में उल्लेख है। इस दौरान उनकी उम्र करीब 7 से 18 साल रही। अधिकांश पात्र, स्थान, काल वास्तविक हैं। कुछ पात्र मूल प्रसंगों के आधार पर जोड़े गये हैं। सुविधा के लिये महात्मा गांधी के बचपन के पात्र को मंच पर अलग-अलग उम्र के बाल और व्यस्क कलाकार अभिनीत कर सकते हैं। मोनिया की भूमिकाओं के लिये 2 या 3 बाल कलाकार चुन सकते हैं।)

मुख्य पात्र

मोनिया 1 - (7-8 साल का बाल कलाकार)

मोनिया 2 - (8 से 10 साल का बाल कलाकार)

मोनिया 3 - (10-13 साल का कलाकार)

मोनिया उर्फ मोहन गाँधी - (14 से 18 साल का कलाकार)

महात्मा गाँधी - प्रौढ़ गाँधी

नंदू, चंदू, केशू, भैयू, राजू, और ऊका - मोनिया के साथी बच्चे
नंदू सबसे बड़ा, उससे छोटा चंदू

पुतलीबाई - मोनिया की माँ, जिन्हें घर में सब बा कहते हैं ...

करमचंद उत्तमचंद उर्फ कबागांधी - मोनिया के पिता, पेशे से दीवान

कस्तूरबाई मकनजी कपाड़िया उर्फ कस्तूरबा - गांधी जी की पत्नी

रलियतबेन उर्फ गोकी बेन - मोनिया से 7 साल बड़ी बहन, **लक्ष्मीदास उर्फ काला**-मोनिया के बड़े या जेठा भाई, **करसनदास गांधी** - मोनिया के मंझले भाई।

रंभा काकी - मोनिया के घर की देखभाल करने वाली दाई, जिनका गाँधीजी पर गहरा प्रभाव पड़ा।

रिश्तेदार भाई - मोनिया का एक हम उम्र भाई

मिस्टर जाइल्स - शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर

मास्टरजी - राजकोट के अल्फ्रेड हाई स्कूल के अध्यापक

शेख मेहताब - मोहनदास उर्फ मोनिया का हाईस्कूल का दोस्त

ब्राह्मण मावजी दवे - गांधी जी के पिता के पारिवारिक मित्र

अन्य पात्र

सरपंच, नौकर, काका, डोम, श्रवण कुमार और उसके माता-पिता, राजा हरिश्चन्द्र, उनकी पत्नी, भाभी, पंडितजी, खान साहब, लाघा महाराज, विद्यार्थी, आंदोलनकारी।

पहला अंक

दृश्य - 1

(पोरबंदर (सुदामापुरी) में मोनिया का घर। आंगन में मोनिया के दोस्त नंदू, चंदू, छोटू, भय्यू, राजू, केशू एक-दो और बच्चे खेलते-खेलते मोटर गीत गा रहे हैं।)

(दृश्य में अन्य पात्र : पिता करमचंद उर्फ कबा गांधी, बा पतुलीबाई, बहन गोकी बेन, मोनिया का मंझला भाई करसन, मोनिया का जेठा भाई लक्ष्मीचंद गांधी उर्फ कालीदास उर्फ काला।)

गीत -

दौड़ती दौड़ती आई छे
दौड़ती दौड़ी जाई छे
धूल उड़ाती आई छे
धूल उड़ाती जाई छे
पों पों करती आई छे
पों पों करती जाई छे
सबको लेके आई छे
सबको छोड़के जाई छे
बोले ये सू छे
मोटर छे मोटर छे

(इसी बीच केशू आता है।)

मोनिया - केशू.... केम छो ....
केशू - मजा मा ....
नंदू - तुम्हें पता, आज सुबह कुएं पर नहाते वक्त चंदू ने केशू के कपड़े छुपा दिये थे ....
केशू - लेकिन ये अच्छी बात नहीं है .....
मोनिया - हां, जेठा भाई ये ठीक नहीं है ....
केशू - मुझे तो सबसे ज्यादा मजा बगीचे में आता है ....
चंदू - हां पेड़ पर लटकने और झूलने में ना ....
छोटू - कभी लंगूर की तरह .... कभी चमगादड़ जैसे ....
भय्यू - मैं तो एक हाथ से ही आजकल लटक जाता हूं
छोटू - तू ऽऽऽ लो सुन लो .... सूरत देखी है कभी आईने में ... पिद्दी चूहा ...
भय्यू - अच्छा ... सच कह दूंगा तो बुरा लग जायेगा ....
छोटू - कह दे ... क्या बोलेगा ..
भय्यू - तू है असल पिद्दी चूहा, देखने का हाथी ... अंदर है भूसा ...
छोटू - ले आ जा फिर ... लडले ... अभी पता चल जायेगा ... कौन हाथी ... कौन चूहा ...

(छोटू अब ताल ठोंक कर दंगल लड़ने की मुद्रा में आ जाता है। सामने भय्यू भी तैयार हो जाता है। सब घेरा बना लेते हैं। दर्शक की तरह ताली बजा कर दंगल देखने लगते हैं।)

नंदू - देखो रे देखो .... पोरबंदर का सबसे बड़ा दंगल ....
चंदू - सुदामापुरी में सबसे मशहूर कुश्ती ... दो बड़े पहलवानों की टक्कर!!

दूसरे बच्चे (एक साथ) छोटू ... भय्यू ... छोटू ... भय्यू ... छोटू .. भय्यू ....(हट्टे-कट्टे छोटू के आगे बढ़ते ही दुबला-पतला भय्यू लंगड़ी दांव लगा कर उसे गिराता है। सारे बच्चे हैरानी से ताली बजाते हैं।)

मोनिया - अरे ये तो कमाल हो गया ...
चंदू - असली हाथी ...
नंदू - असली हाथी नहीं असली शेर
बाकी सारे बच्चे - जीत गया भई जीत गया ... अपना भय्यू जीत गया ....
छोटू (गुस्से में) - अच्छा ये बात तो अब ले ....

(छोटू भय्यू को मारने बढ़ता है। उनके बीच मोनिया आ जाता है। छोटू का तमाचा मोनिया को लग जाता है। मोनिया और सारे बच्चे अब चुप हैं। तभी उसके पिता के साथ बड़ा बेटा लक्ष्मीदास आता है। छोटा बेटा करसन पिता के आते ही उनके हाथ से बैग और सामान लेता है।)

मोनिया (पिता से) - देखो बापू ... इसने मुझे मारा ....
कबा गांधी - क्यों ... कुछ बात हो गई ...
मोनिया - छोटू ने पहले भय्यू को चिढ़ाया ... भय्यू ने जवाब दिया .... तब ये लड़ने लगा ... भय्यू ने इसे पटक दिया .... पर अब ये उसे फिर से मार रहा था ...
कबा गांधी - बेटा ... खेल-खेल में लड़ाई नहीं .. और किसी को चोट पहंचाना ... ये तो बहुत खराब बात है ... किसी पर भी हाथ उठाना एक तरह की हिंसा है ...
मोनिया - लेकिन बापू इस बात को ये समझता ही नहीं है .... पहले भी ऐसे ही किया था इसने ...
कबा गांधी - बेटा, दोस्तों पर गुस्सा नहीं करते ... प्यार करते है ... और जीवन हो या खेल .... जीत-हार तो चलती रहती है ... चलो हाथ मिलाओ ....

(छोटू भय्यू से हाथ मिलाता है। कबा गांधी मुस्कुराते हैं। घर के अंदर चले जाते हैं।)

लक्ष्मीदास उर्फ काला (सभी बच्चों से) - एक बात बताओ, तुम लोग ऐसा

खेल ही क्यों खेलते हो जिसमें रोज रोज झगड़ा हो ?

करसन – हां जेठा भाई सच में .. ये लोग रोज ही लड़ते हैं ...

छोटू – (क्षमा की मुद्रा में) मोनिया ! मैंने तुम्हें मारा ना ... अब तुम भी अपना बदला ले लो ...

मोनिया – नहीं छोटू, तुमने अपनी गलती समझी, इतना ही बहुत है, बा कहती है बदला लेने से बात बिगड़ जाती है ...

(मोनिया अब छोटू के गले से लिपट जाता है। सारे बच्चे यह देख कर तालियां बजाते हैं। नंदू-चंदू गाते हैं। बाकी स्वर मिलाते हैं।)

गीत –

दोस्ती में मत लड़ो
आपस में मत भिड़ो
झगड़ा-लड़ाई छोड़ो
आओ प्यार से गले मिलो
हो जाये गर भूल तो
दिल पर अपने हाथ रखो
मांग लो झट से माफी
मन को अपने साफ करो
दोस्ती में मत लड़ो ...

नंदू – चलो, चलो ... लड़ाई ... लड़ाई माफ .. खेलेंगे पिट्ठू आज ...

सारे बच्चे – लेकिन गंधा तुम ही बनोगे ...

नंदू – अच्छा ... सोच लो ... मैं कद में सबसे ऊंचा हूं ... मेरी पीठ के ऊपर से कूद सकोगे ?

सारे बच्चे – हां ...

(नंदू घुटनों के बल बैठ जाता है। दौड़ कर बच्चे उसकी पीठ से कूद-कूद कर जाते हैं। कुछ गिरते भी हैं। तभी बा, पुतलीबाई के साथ हाथ में दीये की थाली लेकर गोकी बेन आती है। वो हाथ जोड़ कर पूजा करती है। प्रतिदिन की तरह दोनों भजन गाना शुरू करती हैं। भजन शुरू होते ही मोनिया और बाकी बच्चे भी बा के पास आ जाते हैं। सभी भजन गाते हैं।)

भजन –

जिने आंगनिये तुलसी नो प्यारो
त्या बसे म्हारो नंदनों दुलारो ...
थ्या कीर्तन जे घेर
त्या प्रभु जी ने मेर
कभी ना आवे दुखनो वारो
त्या बसे म्हारो नंदनों दुलारो।

(भजन खत्म होने पर बा यानी पुतलीबाई और गोकी बेन वापस जाते हैं। मोनिया, गोकी बेन का हाथ पकड़कर जाता है। दूसरे बच्चे भी धीरे-धीरे अपने घरों को चले जाते हैं।)

प्रस्थान....

पहला अंक

दृश्य 2

(बगीचा। पेड़ पर मोनिया। मोनिया का एक दोस्त। लक्ष्मीदास उर्फ काला। करसन। पुतलीबाई। कबा गांधी।)

काला – मोनिया, नीचे आ।

मोनिया – क्यों ?

लक्ष्मीदास – तुझे बा ने, बापू ने कितनी बार समझाया ... पेड़ पर मत चढ़ा कर।

करसन – तू नहीं मानेगा ... जेठा भाई लगा इसको ...

लक्ष्मीदास – तू पेड़ से उतरता है कि नहीं ?

मोनिया – नहीं ... मुझे फल तोड़ना है ... घर पर दूंगा ...

लक्ष्मीदास – तू ऐसे नहीं मानेगा (मोनिया को खींच कर गिराता है। पीठ पर लात मारता है।) अब ले ...

(मोनिया रोने लगता है। लक्ष्मीदास और करसन चले जाते हैं।)

मोनिया – बा ... बा .... (रोते हुए घर की तरफ जाता है।)

पुतलीबाई – क्या हुआ ? क्यों रो रहा है ....

मेनिया – बा ... काला ने मुझे मारा ...

पुतलीबाई – अच्छा ... कहां है वो ...

मोनिया – वो मार कर चला गया ...

पुतलीबाई – अच्छा आये तो तू भी उसे देना एक मिला के ...

(मोनिया का रोना एकदम बंद हो जाता है)

मोनिया – बा .. वो बड़ा भाई है ... बड़े भाई को कैसे मार सकता हूं ...

पुतलीबाई – बड़ा है तो क्या हुआ .... उसने गलती की है ...

मोनिया – गलती उसकी है ... मैं क्यों गलती करूं ... आपको उसे डांटना चाहिये ... उलटे आप मुझे उसे मारने को क्यों कह रही हो ? वैसे भी बापू कहते हैं किसी को मारना पाप है ... हिंसा है ...

(पुतलीबाई कुछ कह नहीं पाती। गीत शुरू होता है। गोकी बेन आती है। वो मोनिया के साथ लंगड़ी का खेल खेलती है। मोनिया उसे चिढ़ा कर आसपास भागता है। मां उसे देख कर खुश होती है।)

गीत –

वो पारा था इक तारा था
सबका बड़ा दुलारा था
बात पते की करता था

सच का वो रखवाला था
नाम था उसका मोहन
सबका प्यारा मोहन
बा और बापू कहते थे
ये है अपना मोनिया
मोनिया ... रे मोनिया .... सबका प्यारा .. मोनिया ...

(गीत के बीच में कबा गांधी घर के अंदर से आते हैं। उनके हाथ में दफ्तर की एक फाइल और बैग है।)

कबा गांधी – भागवान ... तेरी गोद में मोनिया आया कैसे ... इस बच्चे को तो किसी संत ... महात्मा के घर आना चाहिये था ...

पुतलीबाई – हां ... उसकी बातें सुन कर हैरानी होती है ... छोटा है ... पर बातें बड़ों जैसी करता है ...

कबा गांधी – दूसरे बच्चों से कुछ अलग सोचता है ... ठाकुरजी उसका भाग बड़ा करे।

प्रस्थान

पहला अंक

दृश्य 3

(बगीचे में मोनिया और उसके दोस्त लुका-छिपी का खेल खेल रहे हैं। तभी पोरबंदर में साफ-सफाई करने वाला लड़का ऊका वहां आता है।

मोनिया – ऊका ... ऊका ... तू आ गया ... वहां दूर क्यों खड़ा है ... आ ... तू भी हमारे साथ खेल ना ...

ऊका – (हिचकते हुए) नहीं-नहीं ... मैं बस .... यहीं से ...

मोनिया – दो दिन से बोल रहा हूं ... अब जा कर आया ... चल आ ...

ऊका – नहीं ... मैं यही पर ठीक हूं ...

मोनिया – अरे नहीं ... चलो तुम भी खेलो हमारे साथ ....

ऊका – मैं सबके साथ ... नहीं ...

मोनिया – (सभी दोस्तो से) सुनो ... ऊका आज से हमारे साथ ही खेलेगा ...

(बच्चे सोच में पड़ जाते हैं।)

सभी बच्चे – (आंख-मुंह भींच कर) कौन ? ये ऽऽऽ ?

मोनिया – हां ... मैंने इसे बुलाया .... ये किसी के साथ खेलता ही नहीं ...

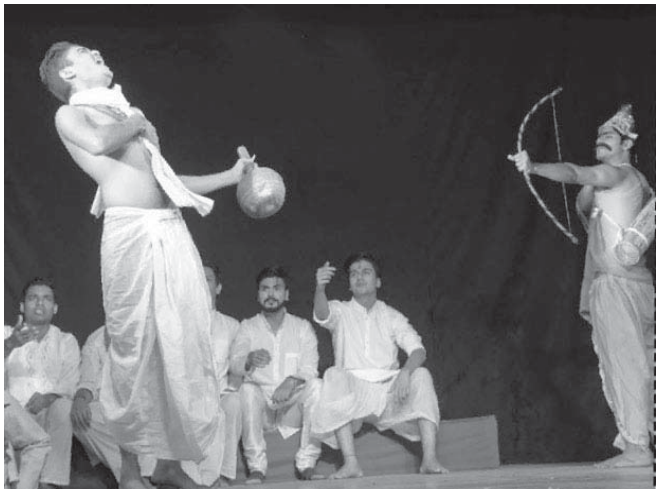

बस सबके घरों की सफाई में लगा रहता है ....

छोटू – (अचानक बहाना बना कर) लेकिन अब तो मुझे घर जाना है ....

केशू – (एकदम से) हां, मुझे भी देर हो रही है ...

दो बच्चे – हां, हां ...देर हो गई है ....

मोनिया – अरे अभी तो सूरज भी नहीं डूबा ... और अभी तो तुम सब खेल रहे थे .... एक गेम तो खेलो ...

नंदू – (सभी से) अच्छा, ठीक है .... चलो फिर से शुरू करो ...

(मोनिया के दोस्त ऊका से दूर रहते हुए बेमन से खेलने लगते हैं। ऊका भी सबके बीच आने से हिचकता है। वो दूर ही रहता है। खेल में मोनिया पकड़ा जाता है। उसे आंख पर पट्टी बांध दी जाती है। अब वो उसी दिशा में जाता है, जहां पर ऊका खड़ा है। मोनिया उसे पकड़ लेता है।)

मोनिया – ऊका तुम पकड़े गये !! अब तुम्हारी बारी ... हो हो हो ...

(मोनिया अब ऊका की आँख पर पट्टी बांधता है। ऊका एक ही जगह पर दोनों हाथ फैलाये गोल-गोल घूमने लगता है। मोनिया के सारे दोस्त एक तरफ खड़े हो जाते हैं। पकड़े जाने के डर से वे पकड़ो – पकड़ो की आवाज लगाना बंद कर देते हैं। मोनिया अकेला ही चिल्लाता है।)

मोनिया – मैं यहां पर हूं ऊका ... पकड़ो .. पकड़ो ना... (बाकी बच्चों से) तुम सब खेल क्यों नहीं रहे ... वहां एक तरफ क्यों चले गये ... केशू .... चंदू ... क्या हुआ ... छोटे आओ ना ...

छोटू – (धीरे से) ऊका के साथ खेलने के लिये घर पर पूछना होगा ...

चंदू – हां ... हां ...

मोनिया – क्यों ....

(बच्चे बिना जवाब दिये चले जाते हैं। मोनिया ऊका के पास लौट कर खुद ही पकड़ा जाता है।)

मोनिया – ओह ... तुमने मुझे पकड़ लिया ....

ऊका – हां ... लेकिन बाकी बच्चे ....

मोनिया – (परेशान होकर) हां आज थोड़ी देर हो गई ... इसलिये सब चले गये .. (जेब से कंचे निकाल कर) चलो कोई बात नहीं मेरे पास कंचे हैं ... चलो खेलते हैं ....

ऊका – (खुश होकर) अच्छा वाह ... चलो ....

(दोनों खेलने लगते हैं। पीछे से काला और करसन आ जाते हैं।)

लक्ष्मीदास – (गुस्से में) मोनिया इधर आओ ....

करसन – (जोर से) चलो घर ...

मोनिया – क्यों ? क्या हुआ जेठा भाई ...

लक्ष्मीदास – बस चलो हमारे साथ ... लेकिन हमें छूना नहीं ... दूर से ...

(ऊका सकपकाता है। वो घबरा कर चला जाता है। परेशान मोनिया दोनों भाईयों पीछे-पीछे जाता है। तभी मोनिया के साथ खेलने वाले बच्चे आ जाते हैं। गीत गाते हैं।)

गीत –

देखो देखो देखो
ऊका को इसने छू लिया, अब तो इसको राम बचाये,
बा थप्पड़ से मारेगी, छुआछूत समझायेगी,
थर-थर कांपेगा सर्दी में, जब इसको नहलायेगी,
चलो शिकायत करते हैं हम, तभी हंसी हमें आयेगी।

(सारे बच्चे अब काला, करसन और मोनिया की पीछे गाते-गाते उसके घर पहुंच जाते हैं।)

लक्ष्मीदास – (जोर से आवाज देकर) बा...बा...

करसन – बा जल्दी आ ...

(गोकी और बा आते हैं।)

पुतलीबाई – क्या हुआ ....

लक्ष्मीदास – सुनो बा, पता आज इसने क्या किया ?

करसन – बा ये ऊका के साथ खेल रहा था ...

पुतलीबाई – ऊका के साथ ....

सभी बच्चे (एक साथ) हां ऊका के साथ

लक्ष्मीदास – इसने उसे छुआ भी ....

पुतलीबाई – क्या ... हे राम।

सभी बच्चे – (एक साथ) हां ऽऽऽ... हे राम ऽऽऽ....

गोकी – तुझे पता नहीं है .... ऊका के साथ नहीं खेलते ...

सभी बच्चे (एक साथ) हां ऊका के साथ नहीं खेलते

मोनिया – पर बा ऐसा क्यों ....

गोकी – बा से सवाल-जवाब नहीं ...

सभी बच्चे – (एक साथ) हां.... बा से सवाल-जबाव नहीं ...

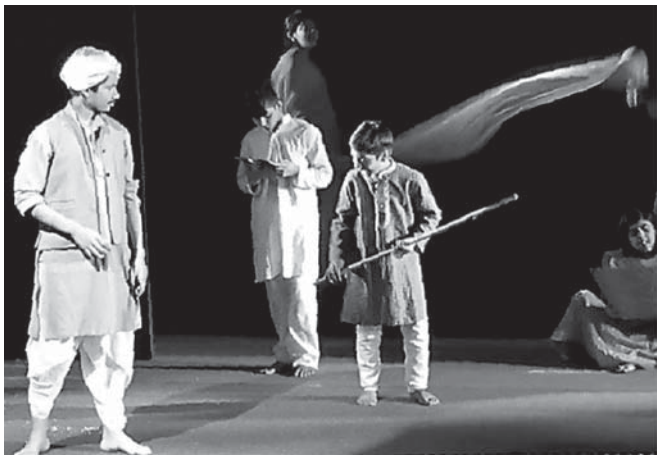

(गोकी बच्चों के नमक-मिर्च लगाने पर चिढ़ जाती है। अब वो शिकायत लेकर आये बच्चों को डपटती है।)

गोकी – तुम लोगों के पास कोई काम नहीं है .... आ जाते हैं दूसरों के घरों पर शिकायतें करने .... निकालों यहां हसे ...

सभी बच्चे – (एक साथ) अरे हां ... जाते हैं .... चलो

पुतलीबाई – मोनिया चल नहाने जा ....

मोनिया – बा मैं सुबह ही नहा चुका हूं ....

गोकी – बा जो कह रही है सुन ले ....

पुतलीबाई – गोकी इसे अंगोछा दे ... इसके कपड़े निकाल ....

(मोनिया एक तरफ चला जाता है)

लक्ष्मीदास– पता बा ... ये ऊका के साथ खेलने लगा ... तब सारे बच्चे भी खेलना छोड़ कर चले गये ...

करसन – फिर भी इसे समझ नहीं आया ...

पुतलीबाई – छोटा है बेटा ... जाने दो ....

गोकी – पर सब बातें बनाएंगे ....

(तभी मोनिया कांपता हुआ आता है। गोकी उसका सिर पोंछने लगती है।)

मोनिया– बा मुझे अभी नहाने को क्यों कहा...

पुतलीबाई– तुने उसे छुआ क्यों ? वो गंदगी साफ करता है...

मोनिया – हां, लेकिन वो तो हमारे घर की गंदगी साफ करता है ... पर खुद बड़ा साफ रहता है ...

पुतलीबाई – तू समझा नहीं ... उसे छूने से पाप लगा तो ...

मोनिया – अच्छा बा ... मतलब आपने पाप को धोने के लिये मुझे नहलाया।

गोकी – (हँसने लगी) ये भी न ... तूने मंदिर में पुजारी जी की बात नहीं सुनी ... ऊंच-नीच ... जात-पात भी देखना पड़ता है....

मोनिया – बा .. ऊंच-नीच और जात-पात क्या होती है .... बापू कहते हैं ... भगवान की नजर में सब बराबर है ... सब का खून एक जैसा है ... फिर ऊका अलग कैसे हो गया ....

पुतलीबाई – गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं .... वृक्षों में मैं पीपल हूं, गायों में कपिला और वर्णों में ब्राह्मण हूं ... इसलिये हम उनकी पूजा करते हैं ... ऐसे ही ...

मोनिया – बा... पंडित जी उन दिन बोल रहे थे। भगवान रामजी ने चांडाल

को गले लगाया था। क्या तब भी उनको नहलाया गया था ?

(काला और करसन हंसते हैं।)

गोकी – ये नहीं समझेगा...

मोनिया – चलो, अगर भगवान ये कहते कि मैं वर्णों में ऊका की जात वाला हूं ... वैष्णव या बड़ी जात का नहीं हूं .. तब तो आप ऊका के साथ खेलने देते ....

(सभी कुछ देर तक कुछ बोल नहीं पाते)

पुतलीबाई – (समझाते हुए) मोनिया ... तेरे ऊका के साथ खेलने को लेकर मुझे कोई परेशानी नहीं है .... लेकिन छोटी जाति .... छुआछूत .... ऊंच-नीच ... सब मानते हैं .... मैं नहीं चाहती लोग कुछ कहें या तुझे पाप लगे ....

मोनिया – जब भगवान ने सबको एक सा बनाया .. उसकी नजर में सब बराबर है तब भला पाप कैसे लगेगा ... और बा अगर पाप लगेगा तो मैं आज की तरह हर दिन नहा लूंगा ... बस .... और ऊका को भी कह दूंगा .... तू भी नहा लिया कर .... उसे भी तो मुझे छूने से पाप लग रहा होगा ....

(सभी मोनिया को हैरानी से देख रहे हैं। सामने से एक मंडली भजन गाते हुए निकल जाती है। भजन की कुछ पंक्तियां पार्श्व से भी सुनाई दे सकती हैं।)

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावनव सीताराम
सीताराम सीताराम
भज प्यारे तू सीताराम
ईश्वर अल्लाह तेरो नाम
सब को सन्मति दे भगवान
राम रहीम करीम समान
हम सब हैं उनकी संतान
सब मिला मांगे यह वरदान
हमारा रहे मानव का ज्ञान
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम

प्रस्थान

पहला अंक

दृश्य 4

(आंगन से दूर मोनिया। दाई रंभा काकी का प्रवेश)

मोनिया – काकी मां ... काकी मां ...

रंभा काकी – क्या है बेटू ...

मोनिया – मुझे अंदर तक छोड़ दो ... बहुत डर लग रहा है ...

रंभा काकी – तू अंधेरे में क्या कर रहा था ...

(काकी लालटेन लेकर आती है।)

रंभा काकी – चलो ... आ जाओ ...

(घर के दरवाजे तक छोड़ देती है।)

रंभा काकी – अच्छा बेटा ... मैं चलती हूं ...

मोनिया – काकी मां .. तुम मत जाओ ...

रंभा काकी – क्यों .... बहुत से काम निपटाने हैं, रात हो गई है ...

मोनिया – मुझे अंधेरे में डर लगता है ...

रंभा काकी – तो अंदर चले जाओ ... अच्छा अंधेरे में डर क्यों लग रहा है ...

मोनिया – मुझे .... भूत से ... वहां खड़ा था ... लगा कोई है

रंभा काकी – कोई नहीं है ...

मोनिया – और अंधेरे में सांप भी तो निकल सकता है ... चोर भी ...

रंभा काकी – तो फिर राम का नाम लिया करो ... तुम्हें डर नहीं लगेगा

मोनिया – अच्छा ....

रंभा काकी – हां ... मैं भी राम का नाम लेती हूं, राम रक्षा स्त्रोत पढ़ती हूं ....

राम राम की गर्जना, भव भय नाश कराय,
भय खाय यमदूत भी, पास पिशाच ना आय,
श्री राम, श्री राम, श्री राम, श्री राम, श्री राम।

मोनिया – ये पाठ तो बड़े काका के बेटे भी पढ़ते हैं ... मुझसे भी सीखने को कहते हैं ....

रंभा काकी – हां ये राम रक्षा सूत्र है ... लेकिन तुम राम-राम ... सीताराम भी जपोगे तो भी सारे भूत-पिशाच भाग जायेंगे ...

मोनिया – अच्छा ... राम राम ... सीता राम .... राम राम राम राम ... श्री राम श्री राम .. सीता राम ...

(पुतलीबाई आती हैं।)

पुतलीबाई – मोनिया बेटा ... तुम अभी तक सोये नहीं ... चलो सोने ....

रंभा काकी – अंधेरे से मोनिया को डर लग रहा था ....

पुतलीबाई – इसका डर तो बस ! चलो मेरे साथ अंदर ले चलती हूं ....

मोनिया – राम-राम, सीताराम ..... श्रीराम ... श्रीराम ... राम ... राम ...

(मोनिया दोहराता हुआ बा के साथ घर में चला जाता है।)

प्रस्थान

पहला अंक

दृश्य 5

(मोनिया का घर। सुबह का वक्त। घर में मोनिया, रंभा काकी, श्याम काका। ऊका का प्रवेश।)

गोकी – (मोनिया के पीछे भागते हुए) मोनिया ... तुझे सुबह से ही भूख लग गई ... पहले दांत साफ करो ... फिर कुछ खाना ....

(मोहन हंसता है। फाफड़ा लेकर भागता है।)

पुतलीबाई – क्या हो रहा है ....

मोनिया – बा देखो तो ... मुझे मालूम है ... बिना मंजन किये कुछ नहीं खाना चाहिये .... पर दीदी समझ रही हैं मैं खा रहा हूं ... दीदी को भी मैं झूठ-झूठ चिढ़ा रहा हूं ....

गोकी – अच्छा !!! अभी बताती हूं ... मुझे बुद्धू बना रहा है ....

रंभा काकी – लो .... सुबह-सुबह भाई-बहन का खेल शुरू ....

(ऊका आता है।)

ऊका – प्रणाम काकी मां ....

पुतलीबाई – अच्छा हुआ तुम आ गये ऊका ... आज पूजा है ... तुम पहले पूजा घर की सफाई में मदद कर दो ....

रंभा काकी – ये पूजा घर की सफाई करेगा ?

मोनिया – (एकदम से खुश होकर) बा .. ऊका पूजा घर साफ करेगा ... मैं ठाकुर जी की मूर्ति को ...

पुतलीबाई – लेकिन चौकी पर तू मत बैठ जाना ... कृष्ण कन्हैया बन कर .. (सब हँसते हैं।)

नौकर काका – ये इसका सबसे प्यारा खेल है ...

रंभा काकी – मोनिया, पूजा घर का काम मुझ पर ही छोड़ दो ... ऊका तुम बाहर के कमरों की सफाई करो ...

गोकी – हां मोनिया, काकी मां ठीक कह रही हैं ...

मोनिया – नहीं काकी मां .... ने कह दिया ना ... पूजा घर में हम दोनों ही सफाई करेंगे ....

पुतलीबाई – कर लेने दो ... ऊका पूजा घर की बाहर से सफाई कर देगा ... बाकी चीजें रंभा काकी और मोनिया संभाल लेंगे ... और हां, ऊका जाते वक्त प्रसाद लेकर जाना ....

(पुतलीबाई अंदर चली जाती है। एक-एक कर गोकी, मोनिया, रंभा काकी और सबसे आखिर में ऊका जाता है। तभी लक्ष्मीदास उर्फ काला और करसन अंदर से आते हैं। दोनों ऊका को अंदर जाते देखते हैं। भजन सुनाई देता है।)

भजन –

वैष्णव जन तो तेने कहिये जे, पीड पराई जाणे रे,
पर दु:खे उपकार करे तोये मन अभिमान न आणे रे।।
सकल लोकमां सहुने बंदे निंदा न करे केनी रे,
बाच काछ मन निश्चल राखे धन धन जननी तेनी रे।।

प्रस्थान.....

Ganesh Graphics

designing | printing | illustration | web services

OFFSET PRINTING
Books, Magazine, Brochure, Poster,
Leaflet, CD/ DVD Cover, T-Shirt, Cap

FLEX PRINTING
Flex Banner, Vinyl, Acrylic

DESIGNING
Logo, Books, Magazine, Brochure,
Poster, Leaflet, CD/ DVD Cover

ILLUSTRATION
Books, Magazine and other

Office Address

26-B, 1st Floor,
Deshbandhu Parisar,
Press Complex, M.P. Nagar, Zone-I,
Bhopal (M.P.)
Ph.:0755-4940788, Mob.:9981984888
e-mail: ganeshgroupbpl@gmail.com

कला समय के संबंध में स्वामित्व तथा अन्य विवरण विषयक
घोषणा पत्र
फार्म-IV

1.	प्रकाशन का स्थान	– जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
2.	प्रकाशन की अवधि	– द्वैमासिक
3.	मुद्रक का नाम	– भँवरलाल श्रीवास
	राष्ट्रीयता	– भारतीय।
	पता	– जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
4.	प्रकाशक का नाम	– भँवरलाल श्रीवास
	राष्ट्रीयता	– भारतीय।
	पता	– जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
5.	संपादक का नाम	– भँवरलाल श्रीवास
	राष्ट्रीयता	– भारतीय।
	पता	– जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	– भँवरलाल श्रीवास
	राष्ट्रीयता	– भारतीय।
	पता	– जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016

मैं भँवरलाल श्रीवास घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टयाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के साथ सही हैं।

तारीख- 1 मार्च 2020

भँवरलाल श्रीवास
प्रकाशक के हस्ताक्षर

आलेख

अहिंसा और सत्याग्रह: महात्मा के दो अस्त्र

डॉ. विभा सिंह

'सुख भोग खोजने आते सब,
आए तुम करने सत्य खोज।
जग की मिट्टी के पुतले जन,
तुम आत्मा के मन में मनोज!'

- सुमित्रानंदन पंत

दुनिया में कई जन-आंदोलन हुए हैं। भारत में भी स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े कई किस्से हैं। अक्सर गांधी जी का स्मरण स्वतंत्रता की लड़ाई को अंजाम तक पहुंचाने के लिए किया जाता है। लेकिन स्वतंत्रता संग्राम में गांधी जी की भूमिका, गांधीवादी संघर्ष को; जो सबसे अलग करता वह है उनका अहिंसक प्रतिरोध। उन्होंने सत्य अहिंसा को अपना हथियार बनाया और भारतीय संस्कृति-परम्परा से अपने शाश्वत मूल्य को स्थापित किया, जो उदात्त भारतीय आध्यात्मिकता से प्रेरित था। भारत की स्वतंत्रता विश्व-इतिहास की एक महान घटना है। जिस प्रचंड ब्रिटिश साम्राज्य का सूर्य एक जमाने में कहीं नहीं अस्त हुआ करता था उसके विरूद्ध महात्मा गांधी ने अहिंसात्मक प्रतिरोध को अपनाकर, 'अहिंसा और सत्याग्रह' - ये दो नैतिक अस्त्रों का प्रयोग कर भारतीय स्वाधीनता को स्थापित किया।

आज जब विश्व में कई हजार गुना अधिक हिंसा, अशान्ति, असुरक्षा अस्थिरता व्याप्त है और मानव मशीन का दास बन चुका है; मानव समाज में फैलती हिंसा से दुनिया भर में बुद्धिजीवी ग्रस्त एवं चिंतित है। ऐसी स्थिति में एक बार फिर से गांधी की कर्म यात्रा को समझने की जरूरत है। 2 अक्टूबर 1869 को जन्मे मोहनदास कर्मचंद गांधी को 'बापू', 'राष्ट्रपिता' और महात्मा गांधी के नाम से सम्बोधित किया जाता है। कोई भी व्यक्ति जन्म से ही न तो किसी 'राष्ट्र का पिता' न ही 'महान आत्मा' होता है और न ही प्रेम, स्नेह एवं आदर का सम्मान सूचक 'बापू' के सम्बोधन से समादृत होता है। नि:संदेह किसी व्यक्ति द्वारा किये गये सर्वोत्तम कर्म ही उसे इन सम्बोधनों से सुशोभित करता है। गांधी जी ने भी अपने कर्म द्वारा वर्षों से गुलामी की जंजीर में जकड़े हुए भारत देश को आजादी दिलाई थी। उन्होंने अपने अहिंसात्मक नैतिक अस्त्रों द्वारा भारतीय समाज को भयरहित कर अंग्रेजों के दमन का सामना करने का अद्‌भुत साहस दिया था।

गांधी जी ने दुनिया को दिखाया कि सत्याग्रह और अहिंसा इतने ताकतवर हथियार बन सकते हैं कि परम्परागत शस्त्र उनके सामने निरस्त हो गए। सूट-बूट और ठाठ-बाट से रहने वाले अंग्रेजों को भगाने के लिए दुबले-पतले गांधी जी ने आजादी के लिए भारतीय जनमानस के अन्दर को जुनून पैदा किया वह सामान्य बात नहीं थी। सत्य से हिंसा विहीन होकर जुड़ना, अत्याचार के विरूद्ध अहिंसक प्रतिरोध करते हुए अथक संघर्ष करना, जनहित, देशहित के लिए नि:स्वार्थ शांतिमय अभियान चलाना, गांधी जी के सत्याग्रह का यही अभिप्राय था।

समय और परिस्थितियां नायक को जन्म देती हैं और वह उसमें गुणात्मक परिवर्तन लाता है। 1915 से 46 वर्ष की उम्र में भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी का आगमन होता है। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के अहिंसक प्रयोग कर वे भारत लौटते हैं। वहां लगभग 21 वर्ष नस्लभेदी पाबंदियों के खिलाफ उन्होंने आंदोलन चलाया था। इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी अच्छी मान्यता थी और सभी तरह के भारतीयों से मिलने-जुलने का अनुभव था फिर भी स्वदेश लौटने के बाद यहां की राजनीति में सीधे हस्तक्षेप न करके भारत और भारतवासियों को भली-भांति जानने पहचानने के लिए, लोगों से घुलने-मिलने के लिए उन्होंने ट्रेन के तीसरे दर्जे में सफर किया। उनका यह कदम उनके लिए कारगार सिद्ध हुआ। उसके बाद यहां के किसानों, मजदूरों और शहरी श्रमिकों को एक जुट कर उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के आवाज उठाने के लिए पूरे देश में जलूस और हड़ताल का आयोजन किया।

गांधी जी ने अपने जीवन में जो संघर्ष किया उसका प्रभाव भारत की जनता पर भी पड़ा। उनका विश्वास था कि जनता सत्य और अहिंसा के उच्च आदर्शों का पालन करते हुए एक न एक दिन भारत को स्वाधीन करायेगी ही। इसलिए उन्होंने स्वयं को जनता का बना लिया। साबरमती आश्रम में रहते, नंगे पैर चलते, एक धोती व सूत से बनी चादर पहनते, जिसे चरखे पर स्वयं कातकर बनाते थे। शुद्ध-शाकाहारी भोजन करते और आत्मशुद्धि के लिए लम्बे-लम्बे उपवास करते। कहने का आशय यह है कि स्वयं को उन्होंने भारत के लिए आम जनता के रूप में ढाल लिया।

गांधी जी ने अहिंसा को व्यक्तिगत साधन की चार दिवारी से मुक्त कर उसे सामूहिक संघर्ष का साधन बना दिया। भारतीयों के दिल से अंग्रेजी राज का रौब व डर समाप्त कर दिया। 1917 में बिहार के चम्पारण में 'नील की खेती' का विरोध, 1918 में अहमदाबाद में 'मिल मजदूर' के साथ भूख हड़ताल,

गुजरात के खेड़ा में 'कर नहीं आंदोलन', 1920 में 'असहयोग' और 1930 का 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' जिसे 'नमक आंदोलन' के नाम से भी जाना जाता है – उनके ये सभी आंदोलन सफल रहे। गांधी जी ने हमेशा यही माना कि अहिंसा शूरवीरों का भूषण है। अहिंसा को मानने वाला, उसका आचरण करने वाला कभी किसी से नहीं डरता है।

आज हमारा देश जिस सामाजिक-सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों की दौर से गुजर रहा है, ऐसे समय में गांधी जी के सिद्धान्त एवं दर्शन हमारे लिए आत्मबल और प्रेरणा के स्रोत हैं। तेज रफ्तार, गतिशील सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था के बावजूद गांधी जी द्वारा दिखाये गए रास्ते, उद्देश्य और कर्म आज भी प्राणवान हैं, प्रासंगिक हैं।

आज उनकी अनुपस्थिति में भी उनके विचार, उनके मत को भारत सहित विश्व के अन्य देशों में प्रतिदिन किसी न किसी रूप में सम्मान के साथ याद किया जाता है। अल्बर्ट आइंस्टीन का यह कहना है कि – 'आने वाली पीढ़ियां इस बात पर मुश्किल से विश्वास करेंगी कि कभी हाड़-मांस और खून वाला कोई ऐसा शख्स इस धरती पर चलता था।' कोई अतिश्योक्ति नहीं है। आज गांधी जी के विचारों को समझने और समझाने की आवश्यकता है। उनके द्वारा रचित पुस्तक 'हिन्दू स्वराज' पढ़कर उनके विचारों से लाभान्वित हो सकते हैं जो लगभग सौ वर्षों बाद में भी हमें राह दिखाती है। हम भाग्यशाली हैं कि हमें राह नहीं खोजना है, बस उनके पद्चिन्हों पर चलना है।

एस.-119, विवेकानंद अपार्टमेंट, प्लाट-2,
सेक्टर-5, द्वारका, नई दिल्ली-110075,
मो. 9910152771

सेवक की प्रार्थना

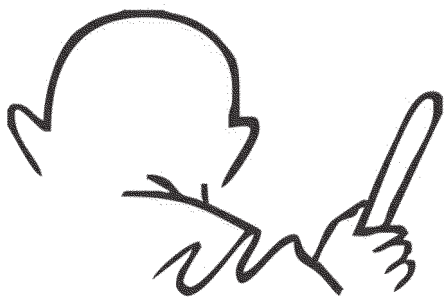

हे नम्रता के सागर!
दीन भंगी की हीन कुटिया के निवासी!
गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र के जलों से सिंचित, इस सुंदर देश में
तुझे सब जगह खोजने में हमें मदद दे!
हमें ग्रहणशीलता और खुला दिल दे
तू अपनी नम्रता दे
हिन्दुस्तान की जनता से
एकरूप होने की शक्ति और उत्कंठा दे!
हे भगवान!
तू तभी मदद के लिए आता है,
जब मनुष्य शून्य बनकर,
तेरी शरण लेता है!
हमें वरदान दें,
कि सेवक और मित्र के नाते,
जिस जनता की हम सेवा करना चाहते हैं,
उससे कभी अलग न पड़ जाएँ।
हमें त्याग, भक्ति और नम्रता की मूर्ति बना,
ताकि,
इस देश को हम ज्यादा समझें
और ज्यादा चाहें!

-महात्मा गांधी

मदनोत्सव की गुदगुदाईयाँ

तुम बड़े कौतुकी हो

फूल गयीं साखें सभी नई कोपलें आय।
ठूँठ गये हरियाय फागुन को सुख पाय।।
वो तो निपट अजान है कहा कहि कें बतराय।
बाजे के सुर जानि के ढोलक सुर मिलि जाय।।
तबला ढोलक ढोल की कसी डोर भये तंग।
मन मृदंग फागुन बजै बिना थापके चंग।।
होली होकर हो गयी रंग न परी फुहार।
गोलिनु को भो दीखतो गालिनु की बौछार।
केसर चंदन हल्दि का रंग टुसेन के लाल।
सब वैकुठी है गये नेह मिलन सुरताल।।
हूक उठे सुनि कोकिला तेरे मादक बोल।
आम मंजरी झूलती पौन बाँह में डोल।।
महुआ सब मादक भये आम गये बौराया।
ठूँठ कोपलनु से लदे फागुन अंग लगाय।।
कचनार नार सी सजिऐं उत साज सजे पलास।
सरसों अलसी देखकर गेंदा भये अइयास।।
मन आवारा भ्रमर सा उड़ता कलियनु पास।
गन्ध सहेली न भई डलवा मालिन पास।।
महावर बेंदी बिछिया यह सुहाग सिंगार।
ये तन तेरे लागते उन तन लगो संभार।।
गेहुन बिल सरसों खड़ी कैसी सीनातान।
मन में खोट न होत कछु कैसो है संज्ञान।।
झीनी चूनर घूँघट, नैनन डोरा लाल।
मन पंखी फडफड़ा उड़ै मगर फसै या जाल।।
हला औरु आहाँ करो! अबकी रहंगे संग।
तुम मन मृदंग बजइयो हम थाप दंगे चंग।।
कहाँ से लाहई रंग जे गोरी हमें बताय।
जहाँ डरे ओ ना डरे सब पै ही चढ़ जाय।।

-उमेश कुमार पाठक

इब्तिसात बरकत की कविताएँ

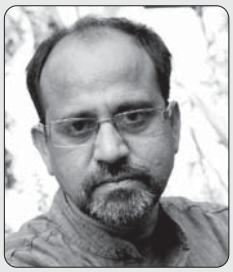

अनुवाद : मणि मोहन

प्रो. मणि मोहन अनुवाद के क्षेत्र में लंबे समय से सक्रिय हैं। अनुवाद के अलावा वे समकालीन हिंदी कविता के समर्थ कवि भी है। अनुवाद के माध्यम से वे हमें विश्व साहित्य की विरासत और हलचल से अवगत कराते रहते हैं।
सम्प्रतिः शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय गंज बासौदा में अंग्रेजी के प्राध्यापक। मो.- 09425150346

इब्तिसात बरकत का जन्म 2 अक्टूबर, 1963 को बैत हनिना फिलिस्तीन में हुआ था। वे सक्रिय मानव अधिकार कार्यकर्ता रचनाकार और पत्रकार हैं। विस्थापन के चलते 1986 से अमेरिका में निवासरत है।

कर्फ्यू

हमारा शहर किसी कैदखाने की कोठरी है
बच्चों के चेहरे
गुलदान की जगह ले रहे हैं
खिड़की की चौखटों पर
और हम इंतजार कर रहे हैं
अपनी बोरियत के
कारागार से निकलकर
हम शामिल होते हैं
थूकने की स्पर्धा में
जिसकी थूक
सबसे आगे जायेगी
वो उतना ज्यादा स्वतंत्र
हम आसमान की तरफ देखते हैं
अधखुली आँखों में प्रश्न लिए
हम सूरज को
एक पतंग में बदलते हैं
और थामे रहते हैं एक किरण के सहारे
जब तक कि वो क्षितिज के भीतर

तार-तार नहीं हो जाती
और रौशनी के छिलके
जमीन पर गिरते हैं
विश्राम के वक्त की कहानी का एक पन्ना
जो हमारी समझ से बाहर है
हमारे प्रश्न बचे रहते हैं
खमीर की तरह
हमारी छाती के भीतर
बढ़ते हुए।

मैं लिखती हूँ

मैं लिखती हूँ
क्योंकि मेरा दिल
एक मुल्क बन चुका है
और मैं चाहती हूँ कि तमाम लोग
इसमें आकर रहें।
मैं जगह बनाती हूँ
सारे कोनों को
खाली करती हूँ भय से।
मैं सुकून बनाती हूँ
बनाती हूँ
एक कप चाय
अपनी और तुम्हारी कहानी के लिए।
एक कप चाय
हमारे विलगित इतिहासों के लिए
जो आते हैं
एक ही परिवार से
परन्तु एक दूसरे से
बातचीत नहीं करते।
गर्म चाय और मिंट
मेरी इच्छा है
कि तुम्हें आमंत्रित करूँ
अपने दिल में।
क्या आप चाय में
शक्कर लेना पसन्द करेंगे ?

पैंसिल

पत्थर से बनी यह मस्जिद
एक पैंसिल की तरह खड़ी हुई है
यूकेलिप्टस के दरख्तों से भी ऊँची
हमारे गाँव के ठीक बीचों बीच
मस्जिद की मीनार गाती है
आकाश के कानों में
जब तक कि लोग उत्तर नहीं देते
हम नंगे पैर
प्रार्थना के लिए पंक्तिबद्ध शामिल होते हैं
हम गुजारिश करते हैं
कि आप मिटा दें
तमाम युद्ध मिटा दें
हम गुजारिश करते हैं
कि आप मिटा दें
तमाम डर
इरेज ! इरेज़ !
हमारे मस्तक झुके हुए हैं
धरती की तरफ
रोज एक ही कागज
हम लिखते और दोहराते हैं
हर आदमी के जीवन में सुकून हो।

■

गीत

डॉ. कृपा शंकर शर्मा 'अचूक' के गीत

डॉ. कृपा शंकर शर्मा 'अचूक'

जन्म : 1949
प्रकाशन :
पगडंडी काव्य भारती, प्रेमांजलि, श्रद्धा सुमन गीत, झरोखा, 17 हजार रचनाओं का पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन।
पुस्तके सम्पादित -
1. मन मंदिर में दीप, 2. मेर सतगुरू, 3. प्रीत के पात इत्यादि।
पता : 38-ए, विजय नगर, करतार पुरा, जयपुर- 302006 (राज.)
संपर्क - 09983811506

(1)

शब्दों की बरसात हो रही,
शब्द नहीं बांटो खानों में
कुंठाओं संग जीवन बैठा,
कबसे देखो खदानों में
धर्म धुजाएं ले निज हाथों
यह विघटन बौछारें कैसी ?
चिन्तन कम उन्माद अधिकता
सौंगातें संज्ञाओं जैसी
गली गली अरमान घूमते,
गुमसुम जैसे वह खानों में
शब्दों की बरसात हो रही,
शब्द नहीं बांटों खानों में
बातों को बेबातें कहते
होनी भी अनहोनी होती
लोभ द्वेष चढ़कर मीनारें
अश्रु भरी मालाएं पोती
हिंसा की क्यों डोरी तानों,

भारत के इन मस्तानों में
शब्दों की बरसात हो रही,
शब्द नहीं बांटों खानों में
आपस कैसी सीना जोरी
अग्नि परीक्षा रोजाना ही
सृजन सकल जगत का भूले
अर्थहीन अब समझाना ही
साँसों का भोलापन लुटता,
यहाँ 'अचूक' दोहराने में
शब्दों की बरसात हो रही,
शब्द नहीं बांटों खानों में

(2)

ठिठुरे ठिठुरे नदी किनारे,
यात्रा लंबी करके आए
द्वीप द्वीप दोस्ती कल्पना,
अपने उर में भरके लाए
गीत जागरण पथ में गाते
सुनकर झरने मोद मनाते
समय माँग सामायिक होती
अपनी अपनी विथा सुनाते
धूप धरा पर सिमटी सिमटी,
सूरज थका हुआ अलसाए
ठिठुरे ठिठुरे नदी किनारे,
यात्रा लंबी करके आए
मौसम बैठा धूनी पर है
दिखे कमंडल गुमसुम चिमटी
बहुत दिनों से नहीं कुछ मिला
इस दुनियाँ से कहाँ कब पटी
नगर ढिढोरा रोज पिट रहा,
कितने भूखे कितने खाए
ठिठुरे ठिठुरे नदी किनारे,
यात्रा लंबी करके आए
जोरा जोरी जादू टोना
चलते आए यह सदियों से
नेह निमंत्रण आया मिलता
सदा सर्वदा ही नदियों से
सब कुछ न्यौछावर कर डाला,
जो भी इस धरती से पाए
ठिठुरे ठिठुरे नदी किनारे,
यात्रा लंबी करके आए
जन्म जन्म से चार मैली
कब धोते बस करते बदला
दस्तक देते देते हारा
कहके थका 'अचूक' मनचला
घुट-घुट के इस मलिन घुटन से,
खुद से ही खुद को भरमाए
ठिठुरे ठिठुरे नदी किनारे,
यात्रा लंबी करके आए

■

कविता

धर्मपाल महेन्द्र जैन की कविताएँ

धर्मपाल महेन्द्र जैन

जन्म - 1952, रानापुर, जिला झाबुआ (म.प्र.)
प्रकाशन - पाँच सौ से अधिक कविताएँ व हास्य -व्यंग्य, प्रमुख पत्र- पत्रिकाओं में प्रकाशित 'दिमाग वालों सावधान' एवं 'सर क्यों दाँत फाड़ रहा है?' व्यंग्य संकलन एवं 'इस समय तक' कविता संकलन प्रकाशित।
संपर्क : 1512-17 एनडेल ड्राइव, कनाडा
फोन - 4162252415

बादलों को चखने का समय

जब बारिश में भीगना चुनता हूँ
बेपरवाह हो जाता हूँ
नहीं देखता तब
कि कितना भरा है बादल
कितनी तीखी हैं बौंछारें
कितनी तेज है हवा।
अभिषेक की धार देखने के लिए
ध्यानमग्न हो जाती हैं आँखें
मुँह अपने विस्तार में होता है
दाँतों का व्यूह तोड़ जीभ
बूंदों को गटक लेती है
बादलों को चखने का यही समय है।
जब बारिश में भीगना चुनता हूँ
बड़भैया सड़क पर नाचता होता है
छोटू ऊँगली छुड़ा कर भाग जाता है
गुड़िया अपनी गुड्डी को दबाए
देहरी के भीतर चली जाती है
पिता डाँटना भूलकर हँसने लगते हैं
माँ का आँचल मेरा सिर ढाँपने लगता है।
कोई भी हो जगह देस-परदेस में
आँगन-सी दिखने लगती है
जब भी बारिश में भीगना चुनता हूँ
बचपन में लौटना चुनता हूँ मैं।

(2)

बारिश की इबारत में अब तुम शामिल हो
रिमझिम के मायने बदल गए हैं
फुहारें मुझे छू कर बिखरती हैं तो लगता है
अपनी बहुत-सी कलाएँ,
तुमने सिखा दी हैं इन्हें।
तुम भीगो तो भीगने को करता है मन
तुम भीगो तो हँसी तैर आती है
तुम भीगो तो धरती गोल-गोल घूमती है
तुम भीगो तो मौसम गीत बुनता है।
तुम्हारे साथ
जब बारिश में भीगना चुनता हूँ
युवा होकर फिर से जीना चुनता हूँ मैं।

बंद आँखों के नीचे

तुम्हारी बंद आँखों में
बहुत भीतर तक झाँक आया हूँ
अनगिनत बातें हैं वहाँ
कुछ सपने बड़े बन रहे हैं
और कुछ हकीकतें हैं
अपने छोटे पैरों से
चहलकदमी करतीं।
तुम्हारी बंद आँखों के पीछे
बड़ा-सा आकाश है
चमकीले सुर्ख रंग
उभरते-मिटते हैं वहाँ
मैं उन्हें पकड़ना चाहता हूँ
पर वे फिसल कर
भाग जाते हैं तुम्हारी तरह।
तुम्हारी बंद आँखों के ऊपर
पतली-सी नदी है एक
वेग से बहती
यह दुर्गम पहाड़ी पर भी चढ़ जाती है
वाह ऐसा भी मुमकिन है।
तुम्हारी बंद आँखों के नीचे
कुछ ज्यादा नीचे, कुछ और बाँयें
इतने जटिल, उबड़-खाबड़ रास्ते हैं
और ये धड़क रहे हैं
तेज-तेज और कभी धीमें भी
मुझे मालूम है
कि मुहब्बत का खजाना
तुमने यहीं कहीं छुपा रखा है
जान गया हूँ
कहाँ से आती है
प्यार भरी इतनी सारी बातें।

■

महेश अग्रवाल की चार ग़ज़लें

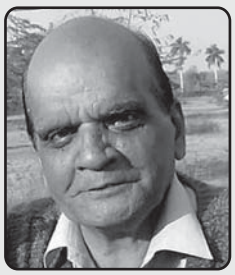

महेश अग्रवाल

जन्म - 1946
प्रकाशन -
''और कब तक चुप रहें'', ''जो कहूँगा सच कहूँगा'' ''पेड़ फिर होगा हरा'', ग़ज़ल संग्रह मेरे साथ कबीर और एक अनाम गीत संग्रह प्रकाशनाधीन देश की अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में निरतंर प्रकाशन।
पता - 71, लक्ष्मी नगर, रायसेन रोड, भोपाल-462022, मो. 9229112607
मो.- 09229112607

(3)

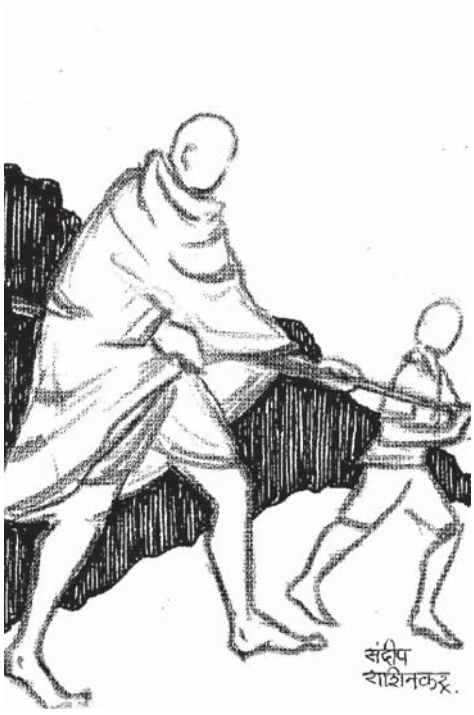

तन पिंजर-सा आँखें भीगी चेहरे झुर्रीदार मिले
नंगे-भूखों की बस्ती में दु:ख के कारोबार मिले
सबकी झोली खाली-खाली किसकी झोली में डालें
एक अशर्फी है खुशियों की ढेरों दावेदार मिले
हमकों दोपहरी में झुलसे जाने का अफसोस नहीं
किन्तु हमें शबनम के घर से भी जलते अंगार मिले
हमको सूरज के होने का था विश्वास जहाँ ज्यादा
ठीक वहीं हमको कुछ ज्यादा ही गहरे अंधियार मिले
यूँ तो चुप्पी की सांकल है हर घर के दरवाजे पर
किन्तु घरों के भीतर हमको अनगिन हाहाकार मिले
साफ-खुले मौसम की खबरे रोज सुनाई जाती हैं
किन्तु समुन्दर के तट पर ही तूफां के आसार मिले
बिक जाते हैं लोग जहाँ इन चाँदी के कुछ सिक्कों में
खिदमतगाहों के पिछवाड़े ऐसे ही बाजार मिले

(1)

हैं नहीं यह हाथ केवल हाथ मलने के लिये
तू इन्हें मुट्‌ठी बना दुनिया बदलने के लिये
चाहता हूँ मैं करूँ कुछ इस तरह की कोशिशें
हो सके मजबूर हर पत्थर पिघटने के लिये
रोशनी यूँ ही मेहरबानी नहीं करती कभी
इन दियों में खून अपना डाल जलने के लिये
रास्ते चिकने बहुत हैं हर कदम पर तू संभल
कुछ ढलाने तो बनी ही हैं फिसलने के लिये
सिर्फ जज़्बा ही न रख बर्दाश्त का दिल में कही
जिस्म में कुछ खून भी रख तू उबलने के लिये
दिल बहुत कुछ माँगता है सब किसे मिलता यहाँ
पर निगोड़ा दिल बना ही है मचलने के लिये
लिख मगर हर शब्द को इतना तपा तू आग में
जिस तरह फौलाद हो तैयार ढलने के लिये

(2)

उसकी तेज हवाओं से जब यारी होती है
शीलों में तब्दील यहाँ चिंगारी होती है
सम्बन्धों में कुछ ऐसे परिवर्तन भी होते
मीठी नदिया सागर से मिल खारी होती है
लोग विधर्मी को नफरत की नजरों से देखे
ऐसी धर्मपरायणता मक्कारी होती है
पेड़ धरा पर आँसू से अपनी पीड़ा लिखते
जब-जब 'माली' के हाथों में आरी होती है
वो क्या समझे आहो और कराहो की कीमत
वो जो चुटकी भर राहत सरकारी होती है
आ ही जाता है इसका कालापन जीवन में
आँख सियासत की ज्यादा कजरारी होती है
शब्दों को नतमस्तक होना कब मंजूर हुआ
सच्चे शब्दों में ऐसी खुद्‌दारी होती है

(4)

पौधा बनकर हर मौसम से लड़ता भी हूँ मैं
पेड़ हुआ तो पत्ता-पत्ता झड़ता भी हूँ मैं
रोज किया करता हूँ मैं साँसो की तुरपाई
रोज न जाने कितनी बार उधड़ता भी हूँ मैं
सीख रहा हूँ मैं खुद से समझौता करना भी
किन्तु अभी तो खुद से रोज झगड़ता भी हूँ मैं
डर है पीछे छूट न जाऊँ जीवन के पथ पर
हाथ समय का कसकर रोज पकड़ता भी हूँ मैं
मैं विखराता हूँ अपने संबंधों की खुश्बू
किन्तु किसी को काँटे जैसा गड़ता भी हूँ मैं
पल दो पल मुझमें खुशियों का मेला लगता है
लेकिन पल दो पल के बाद उजड़ता भी हूँ मैं
यों तो मिट्‌टी का एक खिलौना हूँ केवल
बनता हूँ बन बनकर रोज बिगड़ता भी हूँ मैं

एकादश व्रत

1. **सत्य**–सत्य ही परमेश्वर है। सत्य आग्रह, सत्य विचार, सत्य–वाणी और सत्य कर्म ये सब उसके अंग है। जहाँ सत्य है, वहाँ शुद्ध ज्ञान है, जहाँ ज्ञान है, वहाँ आनन्द ही हो सकता है।
2. **अहिंसा**–सत्य ही एक परमेश्वर है। उसके साक्षात्कार का एक ही मार्ग, एक ही साधन, अहिंसा है। बगैर अहिंसा के सत्य की खोज असंभव है।
3. **ब्रह्मचर्य**–ब्रह्मचर्य का अर्थ है, ब्रह्म की सत्य की खोज में चर्या, अर्थात उससे संबंध रखने वाला आचार। इस मूल अर्थ में से सर्वेन्द्रिय संयम का विशेष अर्थ निकलता है। केवल जननेन्द्रिय–संयम के अधूरे अर्थ को तो हमें भूल जाना चाहिए।
4. **अस्वाद** – मनुष्य जब तक जीभ से रसों को न जीते, तब तक ब्रह्मचर्य का पालन अति कठिन है। भोजन केवल शरीर–पोषण के लिए हो, स्वाद या भोग के लिए नहीं।
5. **अस्तेय (चोरी न करना)**– दूसरे की चीज को उसकी इजाजत के बिना लेना तो चोरी है ही, लेकिन मनुष्य अपनी कम से कम जरूरत के अलावा जो कुछ लेता है या संग्रह करता है, वह भी चोरी ही है।
6. **अपरिग्रह** – सच्चे सुधार की निशानी परिग्रह वृद्धि नहीं, बल्कि विचार और इच्छापूर्वक परिग्रह कम करना उनकी निशानी है। ज्यों–ज्यों परिग्रह कम होता है, सुख और सच्चा संतोष बढ़ता है, सेवा शक्ति बढ़ती है।
7. **अभय** – जो सत्यपरायण रहना चाहे, वह न तो जात बिरादरी से डरे, न सरकार से डरे, न चोर से डरे, न बीमारी या मौत से डरे, न किसी के बुरा मानने से डरे।
8. **अस्पृश्यता निवारण**– छुआछूत हिन्दू धर्म का अंग नहीं है, इतना ही नहीं, बल्कि उसमें घुसी हुई सड़न है, वहम है, पाप है और उसका निवारण करना प्रत्येक हिन्दू का धर्म है, कर्तव्य है।
9. **शरीर श्रम**– जो खुद मेहनत न करें, उन्हें खाने का हक ही क्या है। जिनका शरीर काम कर सकता है, उन स्त्री–पुरुषों को अपना रोजमर्रा का सभी काम, जो खुद करने लायक हो, खुद ही कर लेना चाहिए और बिना कारण दूसरों से सेवा न लेनी चाहिए।
10. **सर्वधर्म समभाव**– जितनी इज्जत हम अपने धर्म की करते हैं, उतनी ही इज्जत हमें दूसरों के धर्म की करनी चाहिए। जहाँ यह वृत्ति है, वहाँ एक दूसरे से धर्म का विरोध हो ही नहीं सकता, न परधर्मी को अपने धर्म में लाने की कोशिश ही हो सकती है, बल्कि हमेशा प्रार्थना यही की जानी चाहिए कि सब धर्मों में पाये जाने वाले दोष दूर हों।
11. **स्वदेशी** – अपने आस–पास रहने वालों की सेवा में ओतप्रोत हो जाना स्वदेशी धर्म है। जो निकटवालों की सेवा छोड़कर दूर वालों की सेवा करने को दौड़ता है, वह स्वेदशी को भंग करता है।

रचनात्मक कार्यक्रम (गांधी के शब्दों में)

रचनात्मक कार्यक्रम को सत्य और अहिंसा साधनों द्वारा पूर्ण करना स्वराज्य की रचना कहा जा सकता है।..उसके एक–एक अंग पर विचार करें –

1. **कौमी एकता**–एकता का मतलब सिर्फ राजनैतिक एकता नहीं है। सच्चे मानी तो हैं वह दिली दोस्ती, जो तोड़े न टूटे। इस तरह की एकता पैदा करने के लिए सबसे पहली जरूरत इस बात की है कि कांग्रेसजन, वे किसी भी धर्म के मानने वाले हों, अपने को हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी–सभी कौमों को नुमाइंदा समझें।
2. **अस्पृश्यता निवारण**– हरिजनों के मामले में तो हरेक हिन्दू को यह समझना चाहिए कि हरिजनों का काम उसका अपना काम है।
3. **मद्य–निषेध** – अफीम, शराब, गांजा वगैरा चीजों के व्यसन में फँसे हुए अपने करोड़ों भाई–बहनों के भविष्य को सरकार की मेहरबानी या मरजी पर झूलता नहीं छोड़ सकते। इन व्यसनों के पंजे में फँसे हुए लोगों को छुड़ाने के उपाय निकालने होंगे।
4. **खादी**– खादी का मतलब है देश के सभी लोगों की आर्थिक स्वतंत्रता और महानता का आरंभ। खादी में जो चीजें समाई हुई है, उन सबके साथ खादी को अपनाना चाहिए। खादी का एक मतलब यह है कि हममें से हरेक को संपूर्ण स्वदेशी की भावना बढ़ानी और टिकानी चाहिए।
5. **दूसरे ग्रामोद्योग** – हाथ से पीसना, हाथ से कूटना और पछोरना, साबुन बनाना, कागज बनाना, दियासलाई बनाना, चमड़ा बनाना, तेल पेरना और इस तरह के दूसरे सामाजिक जीवन के लिए जरूरी और महत्व के धंधों बिना गांवों की आर्थिक रचना संपूर्ण नहीं हो सकती।
6. **गांवों की सफाई**– देश में जगह–जगह सुहावने और मनभावने छोटे–छोटे गांवों के बदले हमें घूरे जैसे गांव देखने को मिलते हैं। हमारा फर्ज हो जाता है कि गांवों को सब तरह से सफाई के नमूने बनावें।
7. **बुनियादी तालीम** – बुनयादी तालीम हिन्दुस्तान के तमाम बच्चों को, वे गांवों में रहने बाले हों या शहरों के, हिन्दुस्तान के सभी श्रेष्ठ तत्वों के साथ जोड़ देती है। यह तालीम बालक के मन और शरीर दोनों का विकास करती है।
8. **प्रौढ़ शिक्षा** – बड़ी उम्र के अपने देशवासियों को जबानी, यानी सीधी बातचीत द्वारा सच्ची राजनैतिक शिक्षा दी जाये।
9. **आरोग्य के नियमों की शिक्षा** – हमारे देश की दूसरे देशों से बढ़ी–चढ़ी मृत्यु संख्या का ज्यादातर कारण निश्चय ही वह गरीबी है, जो देशवासियों के शरीर को कुरेदकर खा रही है; लेकिन अगर उनको

तन्दुरस्ती के नियमों की ठीक-ठीक तालीम दी जाये, तो उसमें बहुत कमी की जा सकती है। जब बीमार पड़े सब अच्छे होने के लिए अपने साधनों की मर्यादा के अनुसार प्राकृतिक चिकित्सा करें।

10. **प्रांतीय भाषाएं** – हिन्दुस्तान की महान भाषाओं की अवगणना की वजह से हिन्दुस्तान को बेहद नुकसान हुआ है। उसका कोई अंदाजा नहीं कर सकते। जब तक जनसाधारण को अपनी बोली में लड़ाई के हर पहलू और कदम को अच्छी तरह से नहीं समझाया जाता, तब तक उनसे यह उम्मीद कैसे की जा सकती है कि वे उसमें हाथ बंटायेंगे।

11. **राष्ट्रभाषा** – समूचे हिन्दुस्तान के साथ व्यवहार करने के लिए आपको भारतीय भाषाओं में से एक ऐसी भाषा की जरूरत है, जिसे आज ज्यादा से ज्यादा तादाद में लोग जानते और समझते हों, बाकी के लोग जिसे झट सीख सकें और वह भाषा हिन्दी (हिन्दुस्तानी) ही हो सकती है।

12. **आर्थिक समानता** – आर्थिक समानता के लिए काम करने का मतलब है पूंजी और मजदूरों के बीच के झगड़ों को हमेशा के लिए मिटा देना। अगर धनवान लोग अपने धन को और उसके कारण मिलने वाली सत्ता को खुद राजी खुशी से छोड़कर और सबके कल्याण के लिए सबों के साथ मिलकर बरतने को तैयार न होंगे, तो यह सच समझिए कि हमारे मुल्क में हिंसक और खूंखार क्रांति हुए बिना नहीं रहेगी।

13. **किसान** – स्वराज्य की इमारत एक जबरदस्त चीज है, जिसे बनाने में अस्सी हजार करोड़ हाथों का काम है। इन बनाने वालों में किसानों की तादाद सबसे बड़ी है। सच तो यह है कि स्वराज्य की इमारत बनाने वालों में ज्यादातर (करीब 80 फीसदी) वे ही लोग हैं, इसलिए किसान ही कांग्रेस है, ऐसी हालात पैदा होनी चाहिए।

14. **मजदूर**– अहमदाबाद के मजदूर संघ का नाम समूचे हिन्दुस्तान के लिए अनुकरणीय हैं, क्योंकि वह शुद्ध अहिंसा की बुनियादी पर खड़ा है। मेरा बस चले तो हिन्दुस्तान की सब मजदूर संस्थाओं का संचालन अहमदाबाद के मजदूर संघ की नीति पर करूँ।

15. **आदिवासी** – आदिवासियों की सेवा भी रचनात्मक कार्यक्रम का एक अंग है। समूचे हिन्दुस्तान में आदिवासियों की आबादी दो करोड़ है। उनके लिए कई सेवक काम कर रहे हैं। फिर भी उनकी संख्या काफी नहीं है।

16. **कुष्ठ रोगी** – यह एक बदनाम शब्द है। फिर हममें जो सबसे श्रेष्ठ या बढ़े-चढ़े हैं, उन्हीं की तरह कुष्ठ रोगी भी हमारे समाज के अंग हैं। पर हकीकत यह है कि जिन कुष्ठ रोगियों को सार-संभाल की सबसे ज्यादा जरूरत है, उन्हीं की हमारे यहाँ जान-बूझकर उपेक्षा की जाती है।

17. **विद्यार्थी** – विद्यार्थी भविष्य की आशा है। इन्हीं नौजवान स्त्रियों और पुरुषों में तो राष्ट्र के भावी नेता तैयार होने वाले हैं। विद्यार्थियों को दलबन्दी वाली राजनीति में कभी शामिल नहीं होना चाहिए। उन्हें राजनैतिक हड़तालें नहीं करनी चाहिए। पहनने-ओढ़ने के लिए वे हमेशा खादी का इस्तेमाल करें।

18. **स्त्रियां** – स्त्री को अपना मित्र या साथी मानने के बदले पुरुष ने अपने को उसका स्वामी माना है। कांग्रेसवालों का यह खास कर्तव्य है कि हिन्दुस्तान की स्त्रियों को इस गिरी हुई हालत से हाथ पकड़कर ऊपर उठावें।

19. **गो सेवा** – गो रक्षा मुझे बहुत प्रिय है। मुझसे कोई पूछे कि हिन्दू धर्म का बड़े-से-बड़ा ब्रह्म स्वरूप क्या है तो मैं गो रक्षा बताऊंगा। मुझे वर्षों से दिख रहा है कि म इस धर्म को भूल गये हैं। दुनिया में ऐसा कोई देश मैंने नहीं देखा, जहां गाय के वंश की हिन्दुस्तान जैसी लावारिस हालत हो।

गांधीजी का जीवन घटनाक्रम

1869 – 2 अक्टूबर को पोरबंदर में जन्म।
1876 – राजकोट में शिक्षारंदभ : कस्तूरबाई से सगाई।
1883 – कस्तूरबाई से विवाह।
1885 – पिताजी की मृत्यु।
1887 – मैटिक परीक्षा पास की; भावनगर के सांवलदास कॉलेज में दाखिला।
1888 – 4 सितंबर को शिक्षा के लिए विलायत रवाना।
1889 – पहला सार्वजनिक भाषण इंग्लैण्ड के निरामिषभोजियों की सभा में।
1891 – 10 जून को बैरिस्टर हुए; 7 जुलाई को बम्बई पहुँचे; माताजी की मृत्यु का समाचार।
1892 – राजकोट तथा बम्बई में वकालत।
1893 – अप्रैल में मुकदमे के लिए दक्षिण अफ्रीका रवाना।
1894 – जिस मुकदमे के लिए दक्षिण अफ्रीका गये थे, उसका पंच-फैसला हुआ।
1895 – नेटाल सुप्रीम कोर्ट के एडवोकेट हुए; नेटाल भारतीय कांग्रेस संगठन।
1896 – छ: मास के लिए भारत आगमन; तिलक, गोखले आदि नेताओं से भेंट; 28 नवम्बर को वापसी।
1897 – डर्बन लौटने पर विरोधी प्रदर्शन; जीवन में महान परिवर्तन।
1899 – बोअर-युद्ध में अंग्रेजों की सहायता।
1901 – राजकोट में महामारी कमेटी द्वारा सेवा, भारत-आगमन; कलकत्ता कांग्रेस की सहायता।
1902 – बर्मा यात्रा रेल के तीसरे दर्जे में भारत-प्रवास। जुलाई में बम्बई में आफिस; तीन महीने बाद दक्षिण अफ्रीका के लिए पुन: प्रस्थान।
1903 – 'ट्रांसवाल ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन' की स्थापना। इंडियन ओपीनियन की स्थापना।
1904 – गीताध्ययन, रस्किन के 'अंटू दिस लास्ट' (सर्वोदय) को पढ़कर जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन; फीनिक्य आश्रम की स्थापना।
1906 – जुलू विद्रोह : घायलों की सेवा; ब्रह्मचर्य से रहने की प्रतिज्ञा, 'सत्याग्रह' शब्द का आविष्कार। शिष्टमंडल के सदस्य के तौर पर इंग्लैंड रवाना।
1907 – खूनी कानून के विरूद्ध सत्याग्रह।
1908 – अन्तरिक समझौता; पठान द्वारा आक्रमण; पुन: सत्याग्रह प्रारंभ;

गिरफ्तारी।

1909 – टॉल्सटाय को प्रथम पत्र, दूसरी बार शिष्टमंडल में इंग्लैण्ड रवाना; वापसी में जहाज पर 'हिन्द स्वराज्य' पुस्तक लिखी।

1910 – जोहांसबर्ग में टॉल्सटाय फार्म की स्थापना।

1912 – गोखले की दक्षिण अफ्रीका की यात्रा; 'नीति -धर्म' प्रकाशित। 'आरोग्य-विषयक सामान्य ज्ञान' पुस्तक लिखी।

1913 – सत्याग्रह फिर आरंभ, गिरफ्तारी और रिहाई, सात दिन का उपवास तथा साढ़े चार मास तक एक समय भोजन।

1914 – चौदह दिन का उपवास, समझौता व सत्याग्रह की सफलता; 18 जुलाई को इंग्लैण्ड रवाना; 4 अगस्त से प्रथम महायुद्ध, सरोजनी नायडू से परिचय और महायुद्ध में सेवा।

1915 – भारत आगमन और 'कैसरे हिन्द' पदक की प्राप्ति; भारत भ्रमण; काका कालेलकर व आचार्य कृपलानी से परिचय; 19 फरवरी को गोखले की मृत्यु; 25 मई को आश्रम की स्थापना।

1916 – काशी-विश्वविद्यालय की स्थापना के अवसर पर प्रसिद्ध भाषण। लखनऊ-कांग्रेस में जवाहरलाल नेहरू से पहली बार भेंट।

1917 – राजेन्द्र बाबू से पहली बार भेंट; 10 अप्रैल को चम्पारन-सत्याग्रह; 31 मई को गिरमिटिया कानून रद्द; 30 जून को दादाभाई नौरोजी की मृत्यु; महादेवभाई देसाई से संपर्क।

1918 – अहमदाबाद में मिल-मजदूरों की हड़ताल और तीन दिन का उपवास; खेड़ा सत्याग्रह; चर्खे का पुनरुद्धार।

1919 – रौलद कानून; 6 अप्रैल को प्रार्थना और उपवास दिवस; 13 अप्रैल को जलियांवाला बाग-कांड; 'यंग इण्डिया' व 'नवजीवन' का संपादन शुरू; खिलाफत द्वारा असहयोग; अमृतसर-कांग्रेस।

1920 – 1 अगस्त को लोकमान्य तिलक की मृत्यु; 2 अक्टूबर को 'तिलक स्वराज्य फंड' की स्थापना; गांधीजी द्वारा तैयार हुआ कांग्रेस का संविधान स्वीकृत, असहयोग-आंदोलन आरंभ, गुजरात विद्यापीठ की स्थापना।

1921 – अन्य राष्ट्रीय विद्यापीठों की स्थापना; प्रिंस ऑफ वेल्स के आगमन के बहिष्कार के कारण दंगा; अशान्ति, पांच दिन का उपवास; अहमदाबाद कांग्रेस।

1922 – 5 फरवरी को चौरी-चौरा कांड; सत्याग्रह आंदोलन स्थगित; पांच दिन का उपवास; 10 मार्च को गिरफ्तारी; 6 वर्ष की सजा।

1924 – अर्पेडिसाइटिस का आपरेशन, 5 फरवरी को रिहाई; 24 सितम्बर को हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए 21 दिन का उपवास; बेलगांव कांग्रेस के अध्यक्ष।

1925 – 16 जून को देशबन्धु चित्तरंजनदास की मृत्यु; एक सप्ताह का उपवास; कानपुर कांग्रेस; चर्खा संघ की स्थापना।

1926 – स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान।

1927 – खादी यात्रा; 19 सितम्बर को हकीम अजमल खां की मृत्यु।

1928 – साइमन-कमीशन; बारडोली सत्यागह; मगनलाल गांधी की 22 अप्रैल को पटना में मृत्यु; 17 नवम्बर को लाला लाजपत राय की मृत्यु; नेहरू रिपोर्ट; कलकत्ता कांग्रेस में समझौता प्रस्ताव।

1929 – लाहौर-कांग्रेस में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव।

1930 – 26 जनवरी को पूर्ण स्वाधीनता की प्रतिज्ञा; 12 मार्च को नमक कानून तोड़ने के लिए दांडी-यात्रा, 5 मई को गिरफ्तारी।

1931 – 4 जनवरी को इंग्लैंड में मो. मुहम्मद अली की मृत्यु; 25 जनवरी को रिहाई; 6 फरवरी को पं. मोतीलाल नेहरू की मृत्यु; 4 मार्च को गांधी-इर्विन पैक्ट, 23 मार्च को भगतसिंह को फाँसी, कराची कांग्रेस, 25 मार्च को गणेशशंकर विद्यार्थी का बलिदान; दूसरी गोलमेज-परिषद में भारत के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में शामिल; दिसम्बर में गोलमेज परिषद से खाली हाथ लौटे।

1932 – कांग्रेस गैर कानूनी घोषित; सत्याग्रह फिर से प्रारंभ; 4 जनवरी को गिरफ्तारी; 'नवजीवन', 'यंग इंडिया' पत्र बंद; 20 सितम्बर से साम्प्रदायिक निर्णय के विरोध में आमरण अनशन; 24 सितम्बर को यरवदा-पैक्ट; 26 सितम्बर को उपवास समाप्त।

1933 – 8 मई से 31 दिन का उपवास; हरिजन पत्रों का प्रारंभ; रिहाई फिर गिरफ्तारी, एक वर्ष की सजा, 16 अगस्त से आमरण उपवास, जो एक सप्ताह चला; 23 अगस्त को रिहाई; 20 सितम्बर को एनी बेसेंट की मृत्यु; 22 सितम्बर को विट्ठलभाई पटेल की मृत्यु; साबरमती आश्रम का विसर्जन; वर्धा में रहने का निश्चय; 7 नवम्बर से हरिजन-यात्रा।

1934 – बिहार भूकम्प; 7 मई को सत्याग्रह स्थगित; 7 दिन का उपवास; 26 अक्टूबर को ग्रामोद्योग-संघ की स्थापना; बम्बई कांग्रेस।

1935 – कांग्रेस की स्वर्ण-जयंती।

1936 – 10 मई को डा. अंसारी की मृत्यु; सेवाग्राम आश्रम की स्थापना।

1937 – जुलाई में कांग्रेस पद-ग्रहण; नई तालीम शुरू।

1939 – 4 जनवरी को मौ. शौकत अली की मृत्यु; राजकोट में आमरण अनशन; वायसराय के हस्तक्षेप से चार दिन बाद समाप्त; त्रिपुरी-कांग्रेस; सुभाषबाबू का कांग्रेस के अध्यक्ष-पद से त्याग-पत्र; 3 सितम्बर को द्वितीय महायुद्ध का आरंभ; 8 नवम्बर को प्रान्तों में कांग्रेस सरकारों द्वारा पद-त्याग।

1940 – 11 अक्टूबर से व्यक्तिगत सत्याग्रह; विनोबा प्रथम सत्याग्रही; हरिजन पत्रों पर रोक।

1941 – 7 अगस्त को रविन्द्रनाथ ठाकुर की मृत्यु; कांग्रेस के नेतृत्व से मुक्ति; 30 सितम्बर को गो-सेवा संघ की स्थापना।

1942 – कांग्रेस का फिर नेतृत्व; 11 फरवरी को सेठ जमनालाल बजाज की मृत्यु; क्रिप्स मिशन, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना; 8 अगस्त को भारत छोड़ो प्रस्ताव, 9 अगस्त को भारत-भर में नेताओं की सामूहिक गिरफ्तारीयां; 15 अगस्त को महादेव भाई की मृत्यु।

1943 – आगाखां के महल में 21 दिन का उपवास।

1944 – 22 फरवरी को कस्तूरबा गांधी की मृत्यु; 6 मई को जेल से रिहाई; गांधी-जिन्ना वार्ता।

1945 – नेताओं की जेल से मुक्ति; पहली शिमला-कांफ्रेंस।

1946 – कैबिनेट मिशन; मुस्लिम लीग द्वारा 16 अगस्त को 'सीधी कार्यवाही' का दिन; सांप्रदायिक दंगे; नोआखाली की पैदल यात्रा शुरू; 12 नवम्बर को महामना मालवीय का देहावसान।

1947 – 15 अगस्त को स्वतंत्रता-प्राप्ति; कलकत्ता में 73 घंटे का उपवास।

1948 – दिल्ली में शान्ति-स्थापना तथा आमरण-अनशन, जो पांच दिन चला। 30 जनवरी को महाप्रयाण।

अन्ति शब्द : 'हे राम!'

स्त्रोत : गांधी भवन न्यास, भोपाल ■

आलेख

राष्ट्रदेव गांधी के अंतिम 24 घण्टे

– प्यारेलाल

29 जनवरी को सारे दिन गांधीजी को इतना ज्यादा काम रहा है कि दिन के आखिर में उन्हें खूब थकान मालूम होने लगी। कांग्रेस विधान मसविदे की तरफ इशारा करते हुए जिसे तैयार करने की जिम्मेदारी उन्होंने ली थी, उन्होंने आभा से कहा – 'मेरा सिर घूम रहा है। फिर भी मुझे इसे पूरा करना ही होगा। मुझे डर है कि रात को सवा नौ बजे तक जगना होगा।'

आखिरकार वे 9.15 बजे रात को सोने के लिए उठे। एक लड़की ने उन्हें बाद दिलाया कि आपने हमेशा की कसरत नहीं की है। 'अच्छा, तुम कहती हो तो मैं कसरत करूंगा' – गांधीजी ने कहा और वे दोनों लड़कियों के कन्धों पर, जिमनाशियम के पेरेलल बार की तरह, शरीर को तीन बार उठाने की कसरत करने के लिए बढ़े।

हमेशा की तरह काम

बिस्तर में लेटने के बाद गांधीजी आमतौर पर अपने हाथ पांव और दूसरे अंग सेवा करने वालों से दबवाते थे। ऐसा करवाने में उन्हें अपना नहीं बल्कि सेवा करने वालों की भावनाओं का ही ज्यादा ख्याल रहता था। मन से तो उन्होंने अपने आप को इस बात से एक अरसे से उदासीन बना लिया था, हालांकि मैं जानता हूं कि उनके शरीर को इन छोटी-मोटी सेवाओं की जरूरत थी। इससे उन्हें दिन भर के कुचल डालने वाले काम के बोझ के बाद मन को हलका करने वाली बातचीत और हंसी-मजाक का थोड़ा मौका मिलता था। अपने मजाक में भी वे हिदायतें जोड़ देते थे। गुरुवार रात को वे आश्रम की एक महिला से बातचीत करने लगे, जो संयोग से मिलने आ गयी थी। उन्होंने उसकी तन्दुरस्ती अच्छी न होने के कारण उसे डांटा और कहा कि अगर राम नाम तुम्हारे मन मंदिर में प्रतिष्ठित होता, तो तुम बीमार न पड़तीं। उन्होंने आगे कहा – 'लेकिन उसके लिए श्रद्धा की जरूरत है।'

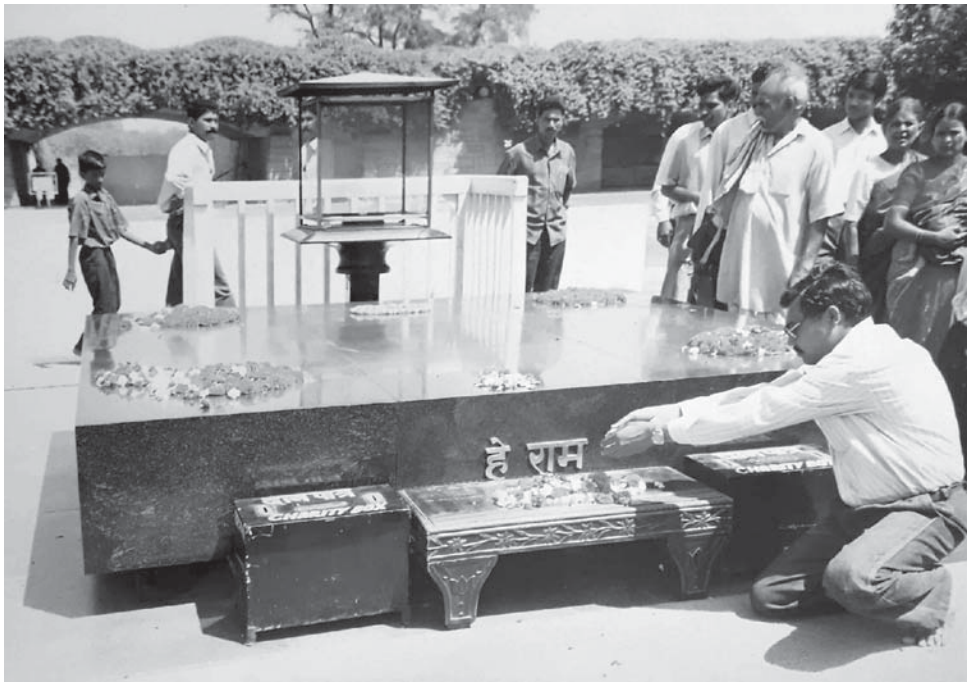

एक दूसरे आश्रमवासी भाई से बात करते हुए गांधीजी ने वह राय फिर दोहरायी, जो उन्होंने प्रार्थना के बाद अपने भाषण में जाहिर की थी – 'मुझे गड़बड़ी के बीच शांति, अंधेरे में प्रकाश और निराशा में आशा पैदा करनी होगी।' बातचीत के दौरान में चलती लकड़ियों का जिक्र आने पर गांधीजी ने कहा: मैं लड़कियों को मेरी 'चलती लकड़ियां' बनने देता हूं। लेकिन दर-असल मुझे उनकी जरूरत नहीं है। यह छोटी-सी बातचीत तब तक चलती रही, जब तक गांधी जी सो न गये।

30 जनवरी को सुबह गांधी जी हमेशा की तरह 3.30 बजे प्रात:कालीन प्रार्थना के लिए उठे। प्रार्थना के बाद वे काम करने बैठे और थोड़ी देर बाद दूसरी बार थोड़ी-सी नींद लेने के लिये लेटे।

आठ बजे उनका मालिश का वक्त था। मेरे कमरे में से गुजरते हुये उन्होंने कांग्रेस के नये विधान का मसविदा मुझे दिया, जो देश के लिये उनका आखिरी वसीयतनामा था। इसका कुछ हिस्सा उन्होंने पिछली रात को तैयार किया था। मुझसे उन्होंने कहा कि इसे पूरी तरह दोहरा लो। 'इसमें कोई विचार छूट गया हो, तो उसे लिख डालो, क्योंकि मैंने इसे बहुत थकावट की हालत में लिखा है।'

मालिश के बाद मेरे कमरे में से निकलते हुये उन्होंने पूछा कि मैंने उसे पूरा पढ़ लिया या नहीं। और मुझसे कहा कि नोआखाली के अपने अनुभव और प्रयोग के आधार पर मैं इस विषय पर एक टिप्पणी लिखूं कि मद्रास के सिर पर झूमते हुये अन्न-संकट का किस तरह सामना किया जा सकता है। उन्होंने कहा – वहां का खाद्य-विभाग हिम्मत छोड़ रहा है। मगर मेरा ख्याल है कि मद्रास जैसे प्रान्त में, जिसे कुदरत ने नारियल, ताड़, मूंगफली और केला इतनी ज्यादा तादाद में दिये हैं– कई किस्म की जड़ों और कन्दों की तो बात ही जाने दो – अगर लोग सिर्फ अपनी खाद्य सामग्री का संभाल कर उपयोग करना जानें, तो उन्हें भूखों मरने की जरूरत नहीं है। मैंने उनकी इच्छा के अनुसार टिप्पणी तैयार करने का वचन दिया। इसके बाद वे नहाने चले गये। जब वे नहा कर लौटे, तो उनके बदन पर काफी ताजगी नजर आती थी। पिछली रात की थकावट मिट

गयी थी और हमेशा की तरह प्रसन्नता उनके चेहरे पर चमक रही थी।

उनका आखिरी वसीयतनामा

बंगाली लिखने के अपने रोजाना के अभ्यास को पूरा करने के बाद गांधीजी ने साढ़े नौ बजे अपना सबेरे का भोजन किया। अपनी पार्टी को तितर-बितर करने के बाद जब वे पूर्व बंगाल कबे गांवों में अपनी 'करो या मरो' की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए नंगे पांवों श्रीरामपुर गये, तब से वे नियमित रूप से बंगाली का अभ्यास करते रहे हैं। जब मैं विधान के मसविदे को दोहराने के बाद उनके पास ले गया, तब वे अभी भोजन ही कर रहे थे। उनके भोजन में ये-ये चीजें शामिल थी : बकरी का दूध, पकाई हुई और कच्ची भाजियां, संतरे और अदरख का काढ़ा, खट्टे नीबू और 'धृत कुमारी'। उन्होंने अपनी विशेष सतर्कता से मसविदे में बढ़ाई हुई और बदली हुई बातों को एक-एक करके देखा और पंचायती नेताओं की संख्या के बारे में जो गलती रह गई थी, उसे सुधारा।

उनकी अन्तिम चिन्ता

दोपहर को थोड़की झपकी लेने के बाद गांधीजी श्री सुधीर घोष से मिले। श्री घोष ने और और बातों के अलावा लंदन टाईम्स की कतरन और एक अंग्रेज दोस्त के खत के कुछ हिस्से पढ़कर उन्हें सुनाये। इसमें लिखा था कि किस तरह कुछ लोग बड़ी तत्परता के साथ पंडित नेहरू और सरदार पटेल के बीच फूट डालने की कोशिश कर रहे हैं।

साढ़े चार बजे आभा उनका शाम का खाना लाई। इस धरती पर उनका यह आखिरी भोजन था, जिसमें करीब-करीब सबेरे की ही सब चीजें शामिल थी। उनकी आखिरी बैठक सरदार पटेल के साथ हुई। जिन विषयों पर चर्चा हुई, उनमें से एक कैबिनेट की एकता को तोड़ने के लिए सरदार के खिलाफ किया जाने वाला गन्दा प्रचार था। गांधी जी की यह साफ राय थी कि हिन्दुस्तान के इतिहास में ऐसे नाजुक मौके पर कैबिनेट में किसी तरह की फूट पैदा होना बड़ी दु:खपूर्ण बात होगी। सरदार से उन्होंने कहा कि आज मैं इसी को अपनी प्रार्थना सभा के भाषण का विषय बनाऊंगा। प्रार्थना के बाद पंडित जी मुझसे मिलेंगे। मैं उनसे भी इसके बारे में चर्चा करूंगा। अगर जरूरी हुआ, तो मैं 2 तारीख को अपना वर्धा जाना मुल्तवी कर दूंगा और तब तक दिल्ली नहीं छोडूंगा जब तक दोनों के फूट डालने की कोशिश के इस भूत का पूरी तरह खात्मा न कर दूं।

प्रार्थना - मैदान में जाने के पहले ज्यों ही गांधी जी गुसलखाने में जाने के लिए उठे, वे बोले : 'अब मुझे आपसे अलग होना पड़ेगा। रास्ते में वे उस शाम को अपनी चलती लकड़ियों आभा और मनु के साथ तब तक हंसते और मजाक करते रहे, जेब तक वे उठे हुये प्रार्थना-मैदान की सीढ़ियों पर नहीं पहुंच गये।

दिन में जब दोपहर के पहले आभा गांधी जी के लिये कच्चे गाजरों का रस लाई, तो उन्होंने उलाहना देते हुए कहा : 'तो तुम मुझे ढोरों का खाना खिलाती हो। आभा ने जवाब दिया : बा तो इसे घोड़ों की खुराक कहती थी।' उन्होंने पूछा : इस चीज को दूसरा पूछेगा भी नहीं, उसे स्वाद से खाना क्या मेरे लिये बड़ी बात नहीं है। और हंसने लगे।

राम! राम!

जब गांधीजी प्रार्थना-सभा के बीच रस्सियों से घिरे रास्ते में चलने लगे, उन्होंने प्रार्थना में शामिल होने वाले लोगों के नमस्कारों का जवाब देने के लिये लड़कियों के कंधे से अपने हाथ उठा लिये। एकाएक भीड़ में से कोई दाहिनी ओर से भीड़ को चीरता हुआ उस रास्ते पर आया। छोटी मनु ने यह सोचा कि वह आदमी बापू के पांच छूने को आगे बढ़ रहा है। इसलिए उसने उस को ऐसा करने के जिए झिड़का क्योंकि प्रार्थना को पहले ही देर हो चुकी थी। उसने रास्ते में आने वाले आदमी का हाथ पकड़ कर उसे रोकने की कोशिश की। लेकिन उसने जोर से धक्का दिया, जिससे उसके हाथ की आश्रम भजनावलि, माला और बापू का पीकदान नीचे गिर गये। ज्यों ही वह बिखरी हुई चीजों को उठाने के लिए झुकी, वह आदमी बापू के सामने खड़ा हो गया - इतना नजदीक खड़ा था कि पिस्तौल से निकली हुई गोली का खोल बाद में बापू के कपड़ों की पर्त में उलझा हुआ मिला। सात कारतूसों वाली आटोमेटिक पिस्तौल से जल्दी जल्दी तीन गोलियां छूटी। पहली गोली नाभि से ढाई इंच ऊपर और मध्य रेखा से साढ़े तीन इंच दाहिनी तरफ पेट की दाहिनी बाजू में लगी। दूसरी गोली मध्य रेखा से एक इंच की दूरी पर दाहिनी तरफ घुसी और तीसरी गोली छाती की दाहिनी तरफ लगी। पहली और दूसरी गोली शरीर को पार कर पीठ पर बाहर निकल आई। तीसरी गोली उनके फेफड़े में ही रूकी रही। पहले बार में उनका पांव जो गोली लगने के वक्त आगे बढ़ रहा था, नीचे आ गया। दूसरी गोली छोड़ी गई तब तक वे अपने पांव पर ही खड़े थे। और उसके बाद वे गिर गये। उनके मुंह से आखिरी शब्द ''राम-राम'' निकले। उनका चेहरा राख की तरह सफेद पड़ गया। उनके सफेद कपड़ों पर गहरा सुर्ख धब्बा फैलता हुआ दिखाई पड़ा। उनके हाथ जो सभा को नमस्कार करने के लिए उठे थे, धीरे धीरे नीचे आ गये, एक हाथ आभा के गले में अपनी स्वाभाविक जगह पर गिरा। उनका लड़खड़ाता हुआ शरीर धीरे से ढुलक गया। सिर्फ तभी घबराई हुई मनु और आभा ने महसूस किया कि क्या हो गया है।

अवसान

हर एक को इस घटना से एक धक्का लगा। डॉ. राज समरवाल ने, जो उनके पीछे आई, गांधी जी के सिर को धीरे से अपनी गोद में रख लिया। उनका कांपता हुआ शरीर डाक्टर के सामने औंघा लिटा हुआ था और आंखे अधमुंदी थी। हत्यारे को बिरला-भवन के माली ने मजबूती से पकड़ लिया था। दूसरों ने भी साथ दिया और थोड़ी खींचतान के बाद उसे काबू में कर लिया गया। बापू को शांत और ढीला पड़ा हुआ शरीर दोस्तों के द्वारा अन्दर ले जाया गया और उस चटाई पर उसे रखा गया, जिस पर बैठ कर वे काम किया करते थे। मगर कुछ इलाज करने से पहले ही घड़ी की आवाज बन्द हो चुकी थी। उन्हें भीतर लाने के बाद उनको जो छोटे चम्मच भर शहद और गरम पानी पिलाया गया, उसे भी वे पूरी तरह निगल न सके। करीब करीब फौरन ही उनका अवसान हो गया।

डॉ. सुशीला बहावलपुर गई थी। जहां बापू ने उसे दया के मिशन पर भेजा था। डॉ. भार्गव जिन्हें बुलावा भेजा था, आये और 'एड्रेनलिन' के लिए डॉ. सुशीला की संकट के समय काम में आने वाली दवाइयों की संदूक की पागल की तरह तलाश करने लगे। मैंने उनसे दलील की, कि वे उस दवाई को ढूंढने की मेहनत न उठायें, क्योंकि गांधी जी ने कई बार हमसे कहा है कि उनकी जान बचाने के लिये भी कोई निषिद्ध दवाई उनको न दी जाये। जैसे-जैसे वर्ष बीतते गये, उन्हें ज्यादा ज्यादा विश्वास होता गया कि सिर्फ राम-नाम ही उनकी और दूसरों की सारी बीमारियों को दूर कर सकता है। थोड़े ही दिनों पहले अपने

उपवास के दरमियान उन्होंने यह सवाल पूछकर साइंस की कमियों के बारे में अपने मत को पक्का कर दिया था कि गीता में जो यह कहा गया है कि एकांशेन स्थितो जगत् उसके एक अंश से सारा संसार टिका हुआ है – का क्या मतलब है ? रामनाम की सब बीमारियों को दूर करने की शक्ति पर अपने विश्वास के बारे में बोलते हुए एक आह के साथ गांधीजी ने घनश्याम दास जी से कहा था – 'अगर मैं इसे अपने जीते जी साबित नहीं कर सकता, तो वह मेरी मौत के साथ ही खत्म हो जायेगा।' जैसा कि आखिर में हुआ, डॉ. सुशीला की संकटकालीन दवाइयों की पेटी में एड्रेनलिन नहीं मिला, संयोगिक एड्रेनलिन की जो एकमात्र शीशी सुशीला ने कभी ली थी, वह नोआखाली के काजीरखिल कैम्प में छूट गई थी। गांधी जी उसकी इतनी कम परवाह करते थे।

उनके साथियों में सबसे पहले सरदार वल्लभभाई पटेल आये। वे गांधी जी के पास बैठे और नाड़ी देखकर उन्होंने ख्याल कर लिया कि वह अभी भी धीरे-धीरे चल रही है। डॉ. भीमराव मेहता कुछ मिनट बाद पहुंचे। उन्होंने नाड़ी और आंखों की परीक्षा की और उदास और दु:खी होकर सिर हिलाया। लड़कियां सिसक उठी। लेकिन उन्होंने तुरंत दिल को कड़ा किया और राम नाम बोलने लगी। मृत शरीर के पास सरदार चट्टान की तरह अचल बैठे थे। उनका चेहरा उदास और पीला पड़ गया था। इसे बाद पंडित नेहरू आये और बापू के कपड़ों में अपना मुंह छिपाकर बच्चे की तरह सिसकने लगे। इसके बाद देवदास और डॉ. राजेन्द्रप्रसाद आये। तब बापू के पुराने रक्षकों में से बचे हुए श्री जयरामदास, राजकुमारी अमृत कुंवर और आचार्य कृपलानी आये। जब कुछ देर बाद लार्ड मौएटबेटन आये, उस समय बाहर लोगों की भीड़ इतनी बढ़ गई थी कि वे बड़ी मुश्किल से अन्दर आ सके। कड़े दिल के योद्धा होने के कारण उन्होंने एक पल भी नहीं गंवाया और वे पंडित नेहरू और मौलाना आजाद साहब को दूसरे कमरे में ले गये और महान दुर्घटना से पैदा होने वाली समसयाओं पर अपने राजनीतिक दिमाग से विचार करने लगे। एक सुझाव यह रखा गया कि मृत शरीर को मसाला देकर कुछ समय के लिए सुरक्षित रखा जाये। लेकिन इस बारे में गांधीजी के विचार इतने साफ और मजबूत थे कि बीच में पड़ना मेरे लिये जरूरी और पवित्र फर्ज हो गया। मैंने उनसे कहा कि बापू मरने के बाद पार्थिव शरीर को पूजने को कड़ा विरोध करते थे। उन्होंने मुझे कई बार कहा था, अगर तुम मेरे बारे में ऐसा होने दोगे, तो मैं मौत में भी तुम्हें कोसूंगा। मैं जहाँ कहीं मरूं, मेरी यह इच्छा है कि बिना किसी दिखावे या झमेले के मेरा दाह-संस्कार किया जाये। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, श्री जयरामदास और डॉ. जीवराज मेहता ने मेरी बात का समर्थन किया। इसलिए मृत शरीर को मसाला देकर रखने का विचार छोड़ दिया गया। बाकी रात में गीत के श्लोक और सुखमणि साहब के भजन मीठी राग में गाये जाते रहे और बाहर दु:ख से पागल बने लोगों की भीड़ दर्शन के लिए कमरे के चारों तरफ इकट्ठी होती रही। आखिरकार मृत शरीर को ऊपर ले जाकर बिड़ला भवन के छज्जे पर रखना पड़ा, ताकि सब लोग दर्शन कर सकें।

अलविदा!

सुबह जल्दी ही शरीर को हिन्दू विधि के अनुसार नहलाया गया और कमरे बीच में फूलों से ढक कर रख दिया गया। विदेशी राजदूत सुबह थोड़ी देर बाद आये और उन्होंने बापू के चरणों पर फूल की मालायें रखकर अपनी मौन श्रद्धांजलि अर्पण की। अवसान के दो दिन पहले ही गांधी जी ने कहा था। ''मेरे लिये इससे प्यारी चीज क्या हो सकती है कि मैं हंसते हंसते गोलियों की बौछार का सामना कर सकूं।'' और मालूम होता है, भगवान ने उन्हें यह वरदान दे दिया।

जो कुछ हुआ था, उसके अर्थ पर मैं विचार करने लगा। पहले मैं घबराहट महसूस करने लगा, लेकिन बाद में धीरे धीरे यह पहेली अपने आप सुलझने लगी। उस दिन जब बापू ने एक आदमी के भी अपना फर्ज पूरी और अच्छी तरह अदा करने के बारे में कहा, तो मुझे ताज्जुब हुआ था कि आखिर कहने का ठीक-ठीक मतलब क्या है ? उनकी मृत्यु ने उसका जवाब दे दिया। पहले जब गांधीजी उपवास करते, तो वे दूसरों से देखने और प्रार्थना करने के लिए कहते थे। वे कहा करते थे; जब तक पिता बच्चों के बीच है, तब तक उन्हें खेलना और खुशी से उछलना कूदना चाहिये। जब मैं चला जाऊंगा। तब आज मैं जो कुछ कर रहा हूँ, वह सब वे करेंगे। अगर आज जो आग की लपटें देश को निगल जाने की धमकी दे रही है उन्हें शांत करना है और बापू ने जो आजादी हमारे लिए जीती है उसका फल हमें भोगना है, तो उनकी मौत ने वह रास्ता दिखा दिया है, जिस पर हमें चलना है।

-हरिजन सेवक से
सौजन्य : डॉ. नारायण व्यास
वीर अर्जुन (साप्ताहिक), 23 फरवरी सन् 1948

राष्ट्रपिता को राष्ट्रकवि की श्रद्धांजलि

हाय राम! कैसे झेलेंगे
अपनी लज्जा, उसका शोक।
गया हमारे ही पापों से
अपना राष्ट्रपिता परलोक।

- मैथिलीशरण गुप्त

शख्सियत

डॉ. एस.एन. सुब्बाराव आज के गांधी

राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत भाई जी के नाम से देश और दुनिया में लोकप्रिय डॉ. एस.एन. सुब्बाराव गिने-चुने गांधी वादियों में एक हैं। जिन्होंने गांधी जी के विचारों का न सिर्फ प्रचार किया बल्कि उसे धारण किया और उसे आज भी अपनी जीवन शैली और कार्यक्रमों के जरिए अभिव्यक्त भी कर रहे हैं।

व्यक्तिगत प्रचार-प्रसार से दूर रहने वाले सुब्बाराव ने अपने विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए देशभर के लाखों युवाओं को सांप्रदायिक सौहार्द और रचनात्मक कार्यक्रमों के लिए प्रेरित किया। युवाओं को राष्ट्र निर्माण के कार्यों के प्रति सक्रिय करने की दृष्टि से डॉ. सुब्बाराव ने 1970 में राष्ट्रीय युवा योजना की स्थापना की। इसके तहत राष्ट्रीय स्तर पर सैकड़ों युवा शिविर और अन्य कार्यक्रम देश के विभिन्न राज्यों में आयोजित किए गए। उन्होंने जहाँ नागालैंड, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा, अरूणाचल प्रदेश, सिक्किम, लद्दाख, लक्षद्वीप और अंडमान में शिविरों के द्वारा इन राज्यों को देश की मुख्यधाराओं से जोड़ा, वही सांप्रदायिक दंगों से प्रभावित क्षेत्रों जैसे भागलपुर, गोधरा, कानपुर, अलीगढ़, अहमदाबाद, मुम्बई, जयपुर, गोहादी, बनारस, जम्मू आदि जगहों पर आयोजित शिविरों ने जलन पर मरहम का काम किया। साथ ही प्राकृतिक आपदाओं में उतरकाशी, नागपट्टनम तथा गुजरात आदि स्थानों पर सेवा कार्य किया।

युवाओं के बीच रचनात्मक कार्य के अलावा डॉ. सुब्बाराव का अहम कार्य चंबल के दस्युओं के बीच रहा है। वास्तव में उन्होंने इनके बीच कार्य को अंजाम देकर गांधी प्रणीत अंहिसा को उनके बाद व्यवहारिक रूप से पेश किया। डॉ. सुब्बाराव ने चंबल घाटी में श्रृंखलाबद्ध युवाश्रम शिविर आयोजित किए। देशभर से हजारों युवाओं ने इन शिविरों में भाग लिया। 1970 में उन्होंने मध्यप्रदेश के मुरैना जिले के तहत जौरा गांव में महात्मा गांधी सेवा आश्रम की स्थापना की। आश्रम की मदद से स्थानीय युवाओं ने चंबल घाटी में कई बड़ी सड़कों का निर्माण किया। शांति कार्यकर्ताओं के सहयोग और भाई

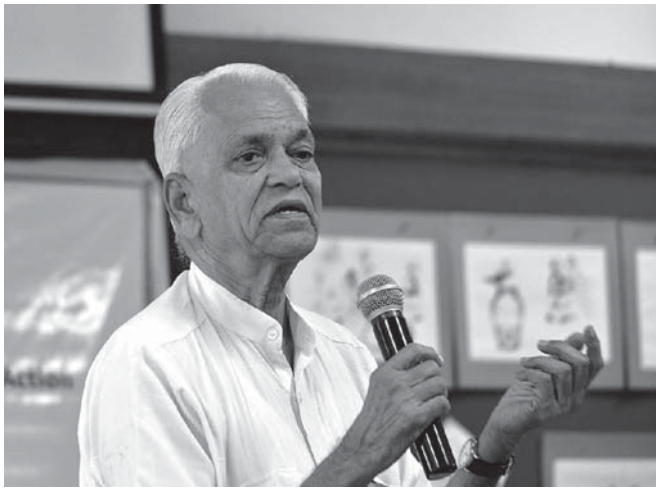

पुरस्कार एवं उपाधियाँ

- महात्मा गाँधी पुरस्कार – 2008
- जमनालाल बजाज पुरस्कार रचनात्मक कार्य-2006
- राजीव गांधी राष्ट्रीय सदभावना पुरस्कार – 2003
- राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सदभावना पुरस्कार भारत सरकार- 2003
- विश्व मानवाधिकार प्रोत्साहन पुरस्कार – 2002
- भारतीय एकता पुरस्कार
- डी.लिट. मानद उपाधि काशी विद्यापीठ वाराणसी – 1997
- राष्ट्रीय युवा पुरस्कार रा.य.यो. को – 1995

जी के कठिन प्रयासों के फलस्वरूप चंबलघाटी के 654 से अधिक भयानक डाकुओं ने ऐतिहासिक आत्मसमर्पण किया। सन् 1972 में महत्मा गांधी सेवा आश्रम में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की मौजूदगी में डाकुओं के आत्मसमर्पण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। जिन डाकुओं ने आत्म समपर्ण किया उनके और पीड़ित परिवारों के कल्याण के कई कार्य आश्रम में उठाए। सन 1976-1980 के दौरान चंबल घाटी में कई विकास कार्य और 34 राष्ट्रीय एकता शिविर आयोजित किए गए। पंद्रह हजार से अधिक युवक-युवतियों ने उनमें भाग लिया।

डॉ. सुब्बाराव आज नौ दशक पूरे कर चुके हैं। लेकिन इतनी लंबी आयु में भी कम साधनों पर अपने जीवन को साध लिया है और युवाओं में राष्ट्रीय निर्माण कार्य के लिए दमखम से लगे हुए हैं। उनके पीछे युवाओं और बच्चों के कार्यक्रमों की ऐसी श्रृंखला चलती रहती है कि देश-विदेश में कहीं भी वे ज्यादा दिन टिके नहीं रहते। वे एक कार्यक्रम से मुक्त होते ही दूसरे कार्यक्रम के लिए कूच कर जाते हैं।

खादी की कमीज और नेकर ही सुब्बाराव की चिर परिचित वेशभुषा है। गर्मी सर्दी सभी में एक समान और यहां तक कि अपने कपड़े स्वयं धोना और उनको सिरहाने रखकर प्रेस किए हुए कपड़ों की जैसी क्रीज बनाए रखना यह रोजाना के जीवन का अटूट हिस्सा है। वे अनवरत यायावर है। एक यात्रा पर निकल पड़ते हैं। रेलगाड़ी के डिब्बे में भी उन्हें टाईपराइटर पर काम करते देखकर यात्री विस्मिकत तो होते ही है, उनके प्रति आकर्षित हुए बगैर नहीं रहते। वे कोहनी का सिरहाना लगाकर खुले आसमान के तले बिना चादर वाली धरती पर सो सकते हैं। भाई जी का ऐसा सादगी और क्रांतिकारी जीवन आज अचानक नहीं हुआ है। वे स्कूली जीवन से ही सामाजिक कार्यों से जुड़ गए थे। मल्लेश्वरम् बंगलोर के रामकृष्ण वेदांत मंदिर में दस वर्ष की उम्र से ही वे गीता और उपनिषद के भक्ति गीतों का गायन करते थे। गांधी जी की प्रेरणा से उन्होंने खादी पहनना शुरू कर दिया था। 9 अगस्त 1942 को उन्हें ब्रिटिश विरोधी नारे लगाने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया था। वे राष्ट्रीय सेवा दल के सदस्य

उसी समय बन गए और मजदूरों के क्षेत्र में उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र प्रारंभ किया। सन् 1948 में चित्रदुर्गा शिविर के दौरान वे प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और सामाजिक नेता डॉ. हार्डिकर के संपर्क में आए। डॉ. हार्डिकर के कहने से वे सन. 1951 में अखिल भारतीय कांग्रेस सेवा दल का काम करने दिल्ली आ गए। तब तक उन्होंने कानून की डिग्री हासिकल कर ली थी। कांग्रेसी कार्यकर्ताओं के लिए पूरे देश में उन्होंने केडर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये। पंडित जवाहर लाल नेहरू और कांग्रेस के अन्य बड़े नेता उनकी संगठन कुशलता से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने सोवियत संघ, अफ्रीका, घाना आदि देशों में कई भारतीय युवा प्रतिनिधि मंडलों का नेतृत्व किया। गांधी शताब्दी समारोह समिति की जनसंपर्क उपसमिति के वे सचिव नियुक्त हुए। गांधी दर्शन रेल की कल्पना में डॉ. सुब्बाराव जी की ही थी। उन्हें इस परियोजना का निदेशक नियुक्त किया गया। सन् 1979-1980 में यह रेल उनके निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे देश में गई। 1970 में ही उन्हें गांधी शांति प्रतिष्ठान का आजीवन सदस्य बनाया गया। भाई जी विशेष प्रतिभा के धनी हैं। संविधान द्वारा मान्य 18 भाषाओं में वह बात और गायन कर सकते हैं। सन् 1993-94-95, में उन्होंने भारत सरकार के सहयोग से बारह महीने की सद्भावना रेल यात्रा आयोजित की जिसमें भारत की हर दिशा में भ्रमण किया। 26 प्रदेशों और कुछ बाहर के 4500 पुरुष और महिलाओं ने बारी बारी पूरे समय व अल्पकाल के लिए एक परिवार की तरह साथ रहे, जबकि उनकी भाषाएं, धार्मिक विश्वास, राजनीतिक विचार, सामाजिक परिपक्ष सब में भिन्नताएं थी। उनका मिशन था। प्रेम, शांति, मित्रता, सांप्रदायिक सद्भावना और विश्व शांति का संदेश फैलाना।

भाई जी विश्व भर में घूमे हैं। अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, कनाडा, सिंगापुर आदि देशों मकें उन्होंने गांधी युवक शिविरों का संचालन किया है। 1960 में अफ्रीका में युवा सम्मेलन में भाग लिया। सर्व धर्म विश्व संसद शिकागो में स्वामी विवेकानंद के भाषण के शताब्दी समारोह के मौके पर भाई जी ने 1993 में इस पर अपनी वार्ता प्रस्तुत की। उन्होंने 1999 में दक्षिण अफ्रीका में हुए सर्व धर्म विश्व संसद के सम्मेलन ने भी भाग लिया।

अभी हाल में भाई जी को मुम्बई में रचनात्मक कार्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए जमना लाल बजाज पुरस्कार से नवाजा गया है। इससे पहले 2003 में राजीव गांधी सद्भावना पुरस्कार के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया। स्वतंत्रता सेनानी होते हुये भी उन्होंने कभी पेंशन की मांग नहीं की। उनकी हिम्मत की दाद देनी होगी कि भाई जी ने उत्तरकांशी के भयंकर भूकंप में अपने 300 साथियों के साथ सहायता कार्य करते हुए कड़ाके की सर्दी में भी खादी के सादे वस्त्र पहने। आज 92 वर्ष की आयु में भी वे अथक रूप से युवा शिविर आयोजित करने में कार्यरत हैं।

डॉ. एस.एन. सुब्बाराव आज जहां अपनी सक्रियता से राष्ट्र की एकता-अखंडता की अंतरधार को उष्मा देते रहते हैं वही उनसे प्रेरित होकर देशभर में अपने अपने क्षेत्रों में हजारों युवाओं के समूह सौहार्द, शांति, प्रेम और राष्ट्र निर्माण के कार्यों से जुड़े हुए हैं।

श्रद्धेय सुब्बाराव जी के द्वारा तैयार किये हुये अनेकों कार्यकर्ता राष्ट्र निर्माण का कार्य करते हुये भारत माता की सेवा में संलग्न हैं।

सौजन्य : गांधी भवन न्यास, भोपाल

वैष्णव जन तो तेने कहिये .....

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड पराई जाणे रे।
पर दुखे उपकार करे तोय, मन अभिमान न आणे रे।।
सकल लोकमा सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन-धन जननी तेनी रे।
वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड पराई जाणे रे।
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे।।
वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड पराई जाणे रे।
मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमा रे।
रामनामशु ताळी लागी, सकल तीरथ तेना तनमा रे।।
वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड पराई जाणे रे।
वणलोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे।
भणे नरसैंयो तेनं दरसन करता, कुल एकोतेरे तार्या रे।।
वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड पराई जाणे रे।।

पुस्तक समीक्षा

महीन संवेदनाओं का सघन वितान रचता रचनाकर्म

संदीप राशिनकर

एक पाठक के नाते विष्णु खरे का सेतु समग्र : कविता संग्रह जब सम्मुख आता है तो उसके पन्ने पलटते हुए महसूस होता है कि हम एक कहानीनुमा गद्य से गुजर रहे हैं। ब्यौरेवार कथा कहती इस सपाट बयानी को देख अनायास ही मन में यह प्रश्न उपस्थित होता है कि वह क्या है जो इस कवि को अपने समय का एक महत्वपूर्ण कवि बनाता है।

इसी सोच व इसी खोज के साथ जब संग्रह के अध्ययन का सिलसिला बढ़ता है तो कई जगह हम चौंकते हैं कि रोजमर्रा की हमारी आपकी जिन्दगी में गुजरती, घटती ऐसी अनेक स्थितियां है जिनमें व्याप्त संजीदगी जो हम न देख पाते हैं न महसूस कर पाते हैं वे इन कविताओं में सशक्तता से उभरकर पाठक के मानस को झंझोड़ती है, हिलाती है, खदबदाती है। तब जाकर अनायास ही हम इस खालिस भाषा में किस्सागोई करती इस कविता के गांभिर्य उसमें सिरजी संवेदनाओं की महीनता और जीवन व उसके परिवेश को अभिनवता में देखने के कौशल से साक्षात होते हैं।

इस संग्रह में समाहित विष्णु खरे के जीवनकाल में प्रकाशित सात कविता संग्रहों की कविताओं में अपने समय के सरोकारों, संघर्षों सत्ता की बर्बरताओं, मूल्यों के स्खलन के न सिर्फ स्वर सुने जा सकते हैं, वरन बेखौफ हो मानवता के विरोध में हो रहे षड़यंत्रों को बेनकाब करने और उन्हें नंगा करने की पुरजोर आवाजें इन कविताओं में सुनी जा सकती हैं। जैसा कि अमूमन होता है विष्णु खरे की कविताएं नामक उनके पहले संग्रह की कविताओं में वे तत्कालिन काव्य परंपराओं को आगे बढ़ाते नजर आते हैं, लेकिन जल्द ही उनकी रचनाओं में उनकी अपनी एक लक्षणीय छबी उभरती नजर आती है जो समय के साथ आगे चलकर न सिर्फ तत्कालीन काव्य परिवेश की जमीन तोड़ती दिखती है वरन अपनी शैली, अपना मुहावरा गढ़ती भी नजर आती है। स्थापित मान्यताओं, मापदंडों के टेबिल पर होते रचनाधर्म में अवतरित 'टेबिल' ही उनकी वह रचना बनकर उतरती है जो इस कवि के बनते नए मुहावरे की सुगबुगाहट पैदा करती है। जैसा कि शुरुआत में उल्लेखित है कि गद्य-शिल्प सपाट बयानी और ब्यौरेवार किस्सागोई जैसे काव्य विधा में तज्य तथ्यों को ही विष्णु खरे ने अपने रचना सामर्थ्य से न सिर्फ अपनी कविताओं की शक्ति बनाया वरन् स्थापित मानदंडों के खिलाफ निडरता से अपने रचनाकर्म को स्थापित करते हुए एक अलहदा पहचान बनायी। हालांकि इससे भी इंकार नहीं किया जा सकता कि बावजूद कथ्य में निहित मार्मिकता और संवेदनाओं की कुछ रचनाएं पाठक को अपेक्षित रूप से प्रभावित नहीं कर पाती।

'सबकी आवाज के पर्दे में' काव्य संग्रह जो उनके पिछले काव्य संग्रह के सोलह वर्ष की लंबी अवधी के बाद प्रकाशित हुआ के बारे में काव्य समीक्षक मानते हैं कि यह संग्रह विष्णु खरे की काव्य यात्रा में एक मिल के पत्थर से कम नहीं है। मंगलेश डबराल मानते हैं कि इस संग्रह सरीखे वक्त के बुखार को नापने और इंसानी जज्बे को रेखांकित करने वाले दूसरे संग्रह हिंदी कविता में ज्यादा नहीं है। कबीर की सांगीतिक शब्दावली में कहें तो इस संग्रह की अनेक कविताएं एक अनहद का स्पर्श करती हुई है। यह संग्रह समकालीन और बदली हुई कविता की स्वरलिपी का पर्दा साबित हुआ।

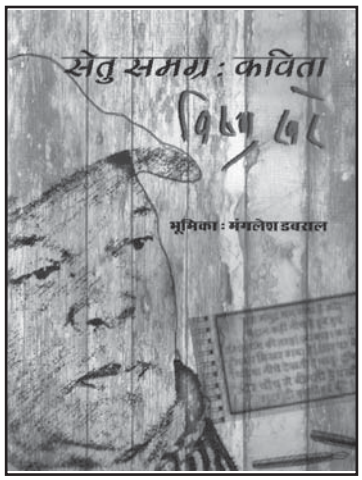

यहां यह उल्लेखनीय है कि इस संग्रह की अनेकों लक्ष्यवेधी रचनाओं में 'लालटेन जलाना' जैसी रचना ने न सिर्फ एक मिथक रचा है वरन् उसमें आधुनिक हिन्दी कविता और विष्ण खरे की रूपकीय ऊंचाईयों को भी देखा जा सकता है। इस रचना को सतह के भीतर खुद को प्रकाशित करने के पाठ के तौर पर जहां जीवन के रूपक से जोड़ा जा सकता है वहीं इस रचना के बारे में केदारनाथ सिंह द्वारा की गयी यह टिप्पणी भी उल्लेखनीय है कि –

वे लालटेन 'लिखते' नहीं, उसे देखते है और इस तरह देखते हैं कि वह जिंदा होती जाती है – जैसे कि कोई जला रहा हो यहां कोई कथा नहीं है – कोरी लालटेन है। सिर्फ उसकी स्मृतियां जो खुलती चली जाती हैं। जैसे कस्बाई खूँटी पर वह उसी तरह टँगी हो। विष्णु खरे अतीत के कबाड़ से उसे फिर से ढूँढ लाते हैं। आलोचक रवींद्र त्रिपाठी मानते हैं कि उनकी यह कविता विद्युतिकरण के बाद भी इसलिए प्रासंगिक रहेगी कि यह कविता सिर्फ लालटेन जलाने के बारे में न होकर सामान्य जीवन की बहुस्तरीय बुनावट के बारे में है।

विष्णु खरे की कविताओं के केनवास पर जहां आधुनिक परिवेश के नजर अंदाज हुए वे पात्र, उनकी विडंबनाएं विसंगतियां नजर आती हैं वहीं दूसरी ओर उन्हें मिथकीय वृत्तांतों से भी गहरा लगाव है। विशेषतौर पर व्यास और उनके महाभारत के संदर्भ उनकी कविताओं में प्रमुखता से नजर आते हैं। आधुनिक से लेकर पुरातन मिथकीय संदर्भों में भी यह कवि की प्रामाणिकता और सरोकार ही है कि वे जहां भी खड़े होते हैं वहां उपेक्षितों, उत्पीड़ितों के पक्ष में अपनी आवाज बुलंद करते नजर आते हैं। विष्णु खरे की संवेदनाओं व उनकी संवेदनक्षमता के कई आयाम उनकी कविताओं में यत्र तत्र नजर आते हैं। समाज के निचले तबके के घटक हो, दुलर्क्षित या उपेक्षित घटक हो हर व्यक्ति, हर तबके के जीवन और उसके स्पंदन को विष्णु खरे का अति संवेदनक्षम रडार

न सिर्फ चिन्हित करता है वरन उनके सरोकारों, विडंबनाओं को महसूस करते हुए उन्हें अभिव्यक्त भी करता है। उनकी संवेदनाओं के जद में रेल में पर्चा बांट भीख मांगता व्यक्ति हो बगीचे के पेड़ के नीचे दो बच्चों को दिन भर के लिए छोड़ काम पर जाती बाई हो, बाप के इस्त्री किए कपड़ों को पहुंचाती/लाती शिवांगी हो, रंगीन पन्नियां बटोरता बचपन हो, कार्यकर्ता हिजड़े हो रंडी हो समाज के हर तबके की विडंबनाओं अभावों या सरोकारों के स्वर मुखर होकर उनकी कविताओं में उतरते हैं। उपेक्षा झेल रहे इंसान ही नहीं वरन अपेक्षित पशु-पक्षी जैसे घुग्गू, चमगादड़े, गिद्ध या चील ने भी उनकी कविताओं में अपनी आवाज उठाई है। उपेक्षित, उत्पीड़ित व्यक्ति, पशु-पक्षियों जैसे चेतन तत्वों के साथ जब जड़ वस्तु, परिवेश परित्यक्त या एबंडेंड जैसी कविता में उपस्थित हो आपकी चेतना को झकझोरता है तब इन कवि की संवेदना की आर्द्रता और तीव्रता पाठक को अंतर्मुख करती है।

परिवेश के निरीक्षण के सूक्ष्म दृष्टि, तीव्र संवेदना और उसकी प्रभावशाली अभिव्यक्ति की अलहदा क्षमता विष्णु खरे को अपने समकालीन कवियों में विशिष्ट दर्जा दिलाती है। वे अपने समाज, परिवेश, देश और विश्व की तमाम हलचलों से न सिर्फ बाबस्ता होते हैं वरन भौगोलिक सीमाओं से परे मानवीय सरोकारों को सर्वोपरि रखते हुए उसे अपनी कविताओं में अभिव्यक्ति देते हैं। हिंसा, अत्याचार, अनाचार उनमें ग्लानि बोध जरूर जगाता है पर उनकी कविता उसमें लिप्त न होकर प्रतिरोध करने अत्याचार दमन के खिलाफ आवाज उठाने संघर्ष करने और अत्याचारी को नेस्तनाबूद करने का संदेश देती है।

मूर्तिभंजक की छवि वाले विष्णु खरे के जीवन और कविता में लीक से हटकर चलने के उनके बगावती तेवर बड़ी शिद्दत से नजर आते हैं। उनकी अभिव्यक्ति शालीनता, भद्रता जैसी मान्य कसौटियों से परे खरी खरी, ठेठ बिना लाग लपेट की बेखौफ अभिव्यक्ति है। विलोम कविता में कवि ने लिखे 'दिवंगत आत्मा पर बल्कि सारे जमाने' पर लगातार खिल-खिलाने सा कुछ अभद्र कहने की असभ्य इच्छा होती है। के तर्ज पर ही उन्होंने अपनी कविताओं को रचा है। हालांकि रूढ़िग्रस्त मान्यताओं, परंपराओं, कानूनों का कड़ा विरोध वाजिब है किंतु विरोध को या ललकार को गैरजरूरी गालियों या अपशब्दों के बिना अभिव्यक्त किया जाना ज्यादा मौजूं होता। यह मान्यता ही भ्रामक है कि गालियों या अपशब्दों का प्रयोग आपकी अभिव्यक्तिय तेवर को तीखा या दबंग बनाता है। यह भी कम आश्चर्यजनक नहीं है कि तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिंहराव पर दबंगाई से आरोप लगाती कविता लिखने वाला कवि नयी रोशनी जैसी नेहरू परिवार की भाटगिरी करती कविता लिखता है। या नेहरू गांधी परिवार के साथ मेरे रिश्ते, अर्जुनसिंह जैसी व्यक्तिगत सरोकारों व तात्कालिकता की रचना लिखता है। रचनाकार के विचार/सरोकार वृहत्ताकार होते हुए जब तक सामाजिक सरोकारों विचारों को समाविष्ट नहीं करते तब तक उसकी रचना का कोई रचनात्मक मूल्य नहीं रहता।

जिनकी अपनी कोई दुकान नहीं होती, जो टेंपों में घर बदलते हैं जैसी रचनाएं वही रचनाकार दे सकता है जिसकी संवेदनाओं के परिध में दीर्घ से लेकर सूक्ष्म तक अपनी संपूर्णता में दर्ज होता हो। दिल्ली में अपना फ्लैट बनवा लेने के बाद एक आदमी सोचता है कि मार्मिकता जहां अंतर्मुख करती है वहीं रूदन में यांत्रिकता में खोते स्पंदन का आर्तनाद विव्हल करता है। बेटी, मुरीद, यह परदा, तरमीम, तुम्हें, गुंगा, गुंगमहल, डरो जैसी रचनाएं भी अपनी अलहदा अभिव्यक्ति से अभिभूत करती हैं। निवेदन पाठांतर नींद में, नुस्खा, रोने के बारे में, लापता, शिविर में शिशु सपने जैसी कविताएं भी पाठक को एक नयी दृष्टि, नया विचार देकर उसे सोचने को बाध्य करती है।

विष्णु खरे की कविताएं तमाम ब्यौरो के साथ सिलसिलेवार एक दृश्य, एक घटना या एक वाकया किस्सागोई की कुशलता से रचते हुए पाठक को न सिर्फ अपनी कविता के हमराह बनाती हैं, वरन् हमारी अनदेखी, अनसोची, अनचिन्ही संवेदनाओं को जागृत कर उसमें निहित अभिनवता का साक्षात्कार कराती है। वे चित्रों को देखने, परखने की वह महीन दृष्टि पाठक को देते है जिससे उसमें निहित आर्द्रता पाठक के मानस को नम कर उसे उद्वेलित करती है। क्रिकेट पर लिखी कविताएं हो, सर पर मैला ढोने की प्रथा, न हन्यते जैसी अन्य कविताएं कवि के केनवास का विस्तार है। 'आवाजाही', 'सुंदरता', 'संकेत', 'कल्पनातीत' में वे पक्षियों की स्मृतियों तितलियों, चीटियों, जुगनुओं, बकरियों की दुनिया में लौटते हैं और सौंदर्य और प्रेम के अनोखे चित्र निर्मित करते हैं। यह देखकर आश्चर्य होता है कि विष्णु खरे अपनी कविता में निहित गद्य को शुष्क, सपाट और निबंधात्मक बनाने के बावजूद इससे अपेक्षित सघन संवेदनाओं और मार्मिकता को संभव बना पाते हैं।

किसी भी कवि की समग्र कविताओं के वाचन में निरंतरता में उपजी एक रसता के चलते कई महत्वपूर्ण रचनाएं अलक्षित या अल्पलक्षित रह जाती है। मंगलेश डबराल की सार्थक एवं प्रभावी भूमिका के साथ आया यह संग्रह कई मायनों में पाठक की अपने परिवेश को देखने की दृष्टि को समृद्ध करने, उसके मानस को और मानवीय करते हुए उसे सम के समर्थन में सार्थकता से डटे रहने का बल देता है।

पुस्तक : सेतुसमग्र, लेखक : विष्णु खरे, प्रकाशन : प्रकाशक, मूल्य: 1030 रू.

11 बी, राजेन्द्र नगर, इंदौर-452012 (म.प्र.)
मो. 8085359770/9425314422

जब हम अच्छा खाने, अच्छा पहनने और अच्छा दिखने में खर्च करते हैं
तो अच्छा पढ़ने-लिखने और सोचने-समझने की खुराक में खर्च क्यों न करें !

कला समय

प्रबंध संपादक

सम्पर्क- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com / bhanwarlalshrivas@gmail.com

पुस्तक समीक्षा

धूप का रास्ता

-डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय

दुष्यंत कुमार ने 'साये से धूप' 52 गजलों का संग्रह रचकर काव्य जगत में एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया जिसकी ऊँचाई और क्षेत्र-विस्तार दोनों गजल के क्षेत्र में मील का पत्थर सिद्ध हुए हैं। उसी धरती के गजलकार किशन तिवारी हैं जिन्होंने धूप का रास्ता चयन कर 110 गजलों का छठा गजल संग्रह प्रकाशित कराया है। सामने छाया थी फिर भी धूप का रास्ता चुना है किशन तिवारी ने, क्योंकि धूप मे ंपके और तपे होने के कारण वे ऊर्जावान हो चुके हैं। धूप जीवन की ऊष्मा है, ऊर्जा है, शक्ति का स्रोत है, कांति का परिचायक है जो 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का संदेश मुखरित करती है।

प्रथम ग़ज़ल में ही तिवारी ने अपनी स्थिति साफ कर दी है क्योंकि उन्हें दिल में छिपे डरों, बुनकरों, बाजीगरों, सौदागरों, कारीगरों एवं शायरों की बात करनी है। सम्प्रति रचनाकार के समक्ष बाजारवादी संस्कृति, उपभोक्तावादी वृत्ति एवं प्रतियोगितावादी प्रवृत्ति खड़ी है - उसी के मद्देनजर वह रचना सृजन की मानसिकता बनाता है तथा परिवेगत स्थितियों-परिस्थितियों को भी वह रचना में उजागर करता है। द्वितीय गजल में दर्द के मारे हुए, जंग में हारे हुए, आज अंगारे हुए, बंजारे हुए आदि तुकान्त शब्दावली से गजलकार ने सामाजिक विडम्बनाओं और विसंगतियों पर व्यंग्योक्ति की है। दर्दे दिल गजलकार ने अपनी विवशता, बाध्यता एवं मजबूरी को यथार्थवादी धरातल पर अभिव्यंजित करने की कोशिश की है-

सामने छाया थी फिर भी धूप का रास्ता चुना
सब हकीकत में जिए मैंने मगर सपना चुना
लोग बाजारों में दुकानें सजा बैठे रहे
जो बिकाऊ था नहीं सबने वही चेहरा चुना।(पृ. 13)

अलाव में आग, तनाव में बस्ती, दबाव में बीमार-बेबस, बचाव में जंगी, रखरखाव में आँखें, भाव में उसूल बेचना तथा चुनाव में राजनेता की खोज-खबर लेने वाले गजलकार किशन तिवारी है। नदी का बेआबरू होना, लाश ढोना, जिस्म बंजर होना, व्यभिचार का सिलसिला बढ़ना, पाप धोना, इंसान की संवेदना मरना आदि तथ्यों को कथ्य के रूप में व्यंजित कर रचनाकार ने सत्य का उद्घाटन किया है।

गजलकार की फितरत जमीं के दर्द को गाने की रही है। मृगतृष्णा में हरदम भटकते हुए गजलकार ने व्यवस्थाओं से टकराने की बात की है। समय की उलझनों में उलझ कर स्वयं को भूल जाने वाले रचनाकार को अपनी जिन्दगी आजकल बहुत मंहगी प्रतीत हुई है। नित्य नए परिवर्तन के साथ नए जमाने की बात कही गई है :

इस बदलते दौर का ये नौजवाँ कुछ और है
है जमीं इनकी अलग ही आसमाँ कुछ और है
यूँ बदलते दौर में सब कुछ बदलता है मगर
आज के इस दौर का पर इम्तहाँ कुछ और है।(पृ. 20)

बरसात में भीगने की आकांक्षा रखने वाले, दिन में रोज ख्वाब देखने वाले, मन की गहरी पीड़ा की अनुभूति करने वाले, खुद के बाहर बड़ा दायरा करने की सलाह देने वाले, कचहरी-थाना बिकते हुए देखने वाले तथा शब्द पर अर्थ को भारी समझने वाले गजलकार किशन तिवारी है। राह पर बिना भटके चलने वाले रचनाकार को उम्मीदें हैं।
समस्याएँ हमारी हल तो बस मिल बैठकर होंगी। (पृ. 31)

रचनाकार ने गजल के क्षेत्र में (छोटी बहरों) लघुता को प्राथमिकता देते हुए नए अंदाज में गजलें लिखी है। साक्ष्य है यह ग़ज़ल:

सच कहूँ
चुप रहूँ
और कब
तक, सहूँ
अश्क बन
फिर बहूँ
कर किसी
का गहूँ
एक नई
सोच हूँ
किस लिए
सब सहूँ
कल नहीं
आज हूँ (पृ. 33)

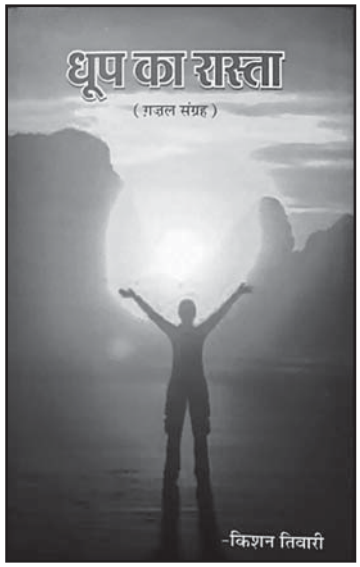

प्रीत की दुनिया में समर्पण की सलाह देने वाले, प्रतिज्ञाबद्ध होकर रण करने को ललकारने वाले, जीवन का प्रत्येक क्षण व्यवस्थित देखने की अभिलाषा रखने वाले, जीवन संग्राम में बहुत अवरोध की अनुभूति करने वाले, हरदम जिन्दगी को कठिन समझने वाले तथा दर्दे दिल गजल लिखने वाले रचनाकार की मान्यता है:

मेरे सपने हकीकत से अलग है
किसी से इनका समझौता नहीं है।
बहुत आसान सा लगता है बचपन
मगर ऐसा सदा होता नहीं है।(पृ. 37)

इंसान की पहचान करना रचनारकार के लिए सम्प्रति मुश्किल हो गया है क्योंकि अनमोल जिन्दगी हास और परिहास के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। कल तक गजल मनुहार थी वह आज सरदार बन बैठी है क्योंकि अँधियारे सन्नाटे में तान छेड़ रही है गजल। अपनी अनुभूति को रचनाकार ने गजल के प्रति व्यंजित किया है;

सीखा रोज अदीबों से
है सबको स्वीकार गजल
बाँट दिया था लोगों को
तोड़ेगी दीवार गजल
सच का अब इस दुनिया में
करती है इजहार गजल।(पृ. 42)

आदर्श प्रेम का रास्ता चुनने वाले, सबके साथ अंगार पर चलने वाले, बँटी हुई जिन्दगी देखने वाले, हर दिन एक नया सपना और नया बहाना देखने वाले, बदलते दौर पर आश्चर्य चकित होने वाले, नए सपने की पूँजी की अनुभूति करने वाले तथा जीवन भर अवसाद में रहने वाले रचनाकार की स्पष्टोक्ति अभिव्यंजित है–

अब सफलता के नए सोपान हैं
झूठ दरबारों में सम्मानित हुआ
तोतली भाषा सराही जब गई
मन हमारा भी बहुत पुलकित हुआ
हर समय लालच रहा सम्मान का
इसलिए हर रोज ही कुण्ठित हुआ।(पृ. 51)

इस गजल संग्रह में किशन तिवारी ने बिल्कुल नए अंदाज में गजले कहने का प्रयास किया। भाषायी सम्प्रेषणीयता भी अन्य गजलकारों से अलग इनकी पहचान कराती है। प्रयोगधर्मी गजलकारों ने बड़े ही श्रमपूर्वक गजले लिखीं हैं तथा छोटी–छोटी बहरों में भी गजलें लिखकर एक नया मार्ग प्रशस्त किया है जिससे गजल काव्य रूप का क्षेत्र विस्तार हुआ है। तथ्यान्वेषण की प्रक्रिया आरंभ से अंत तक चली है जिसमें कथ्य ही सत्य रूप में अभिव्यंजित हुआ है। जीवन के भोगे हुए यथार्थ को व्यापक केनवास पर उकेरने का काम बड़ी ही सतर्कता से किया गया है।

गजल को नए तेवर में कहने का जोखिम भरा कदम गजलकार ने उठाया है जिसमें सामाजिक सरोकारों की असली पूंजी साधन बन पड़ी है। भटके हुए, अटके हुए, शोषित–पीड़ित मानव की व्यथा–कथा को भी मर्मस्पर्शी फलक पर अभिव्यंजित किया गया है। जब से दुनिया को गजलकार ने पहचाना है तभी से गजल लिखने को ठाना है–यह उसके लिए सुखद संयोग की बात है। घोर निराशा में भी आशा की किरण गजलकार को दिखाई पड़ी है। सपनों के महल बनाने में भी उसे महारत हासिल है। सपने खण्डहर की तरह धराशाही हो गए फिर भी उसने आशा की पतवार से जीवन–नौका को पार लगाने का अदम्य साहस और हौंसला दिखाया है – साक्ष्य हैं ये पंक्तियाँ;

सपनों के कुछ महल बनाए थे मैंने
हर सपना लेकिन खण्डहर–सा ढहता है
लेकर उम्मीदों की गठरी निकला हूँ
हर दिन जाने कितने ताने सहता हूँ
कुछ सपने हैं और तराने आँखों में
गाते–गाते हाथ किसी का गहता है।(पृ. 116)

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि जिन्दगी की जंग जीतने के लिए रचनाकार ने प्रेम–सद्भाव रूपी शस्त्र की आवश्यकता महसूस की है अतीत की 'स्मृतियाँ' सूख कर और प्रीति करने लगी है। गिले–शिकवे दूर कर अन्ततोगत्वा उसकी नैराश्य की भावना आशावाद में परिणति पा जाती है – यही उसका अभीष्ट भी है। अतएव आधुनिक गजलकारों में किशन तिवारी ने अपनी सर्जनात्मक वृत्ति, भारतीय संस्कृति एवं समसामयिकता बोध की काव्यात्मक प्रवृत्ति से अपनी रचनाधर्मिता का सफल निर्वहन करते हुए एक विशिष्ट पहचान बनाई है। कतिपय सीमाओं के बावजूद उनकी काव्यमात्रा एक सफल पथिक की रही है जिसने दुर्गम मार्ग में भी अदम्य साहस और धैर्य से यात्रा की है–एतदर्थ किशन तिवारी अपनी श्रमशीलता और काव्य संवेदनशीलता के लिए बधाई के पात्र हैं। आशा एवं पूर्ण विश्वास है यह गजल–संग्रह पाठकों को प्रेरित करेगा।

कृतिकार : किशन तिवारी, प्रकाशक : पहले पहल प्रकाशन, भोपाल, संस्करण : प्रथम 2019 ई., मूल्य : 200/– मात्र

8/29–ए, शिवपुरी अलीगढ़, 202001,
मो. 9897452431

कला समय
आगामी
अंक
संयुक्तांक
अप्रैल–मई–जून–जुलाई 2020
डॉ. अरविंद विष्णु जोशी
म.प्र. के प्रसिद्ध सितार वादक, स्व. पं. विष्णु कृष्ण जोशी के पुत्र
(ग्वालियर) घराना तथा पं. बिमलेन्दु मुखर्जी के शिष्य पर
एकाग्र विशेषांक हेतु
आलेख, संस्मरण, रचनाएँ, छायाचित्र आमंत्रित है

आलेख

झालावाड़ की कला नृत्यांगना 'कुक्की' की संगीत साधना और कला शिल्प

ललित शर्मा

झालावाड़ रियासत में अनेक कलावन्तों ने अपनी कला से रियासत का नाम हमेशा ऊंचा रखा। यहां के शासकों ने भी उनकी कला के संरक्षण और संवर्धन में कोई कमी नहीं रखी। कला के ऐसे ही अनमोल रत्नों में से एक थी झालावाड़ की राजनर्तकी 'कुक्की बाई'।

उसके अप्रतिम रूप सौन्दर्य व अद्‌भुत नृत्यकला की चर्चा दूर-दूर तक की रियासतों में होती थी। कुक्की ने ब्रिटिश वायसराय से लेकर मेवाड़ के महाराणाओं तक से अपनी कला साधना के बल पर बहुत सम्मान प्राप्त किए तथा झालावाड़ की नृत्यकला को नई ऊंचाइयां प्रदान कीं। कुक्की का जन्म उत्तरप्रदेश के बांदा शहर में हुआ था। उसकी माँ उल्फतजहां भी अपने समय की प्रसिद्ध नृत्यांगना थी। कुक्की ने अपनी माँ से ही नृत्यकला सीखी थी। धीरे-धीरे वह एक अद्‌भुत नृत्यांगना बन गई। कुछ वर्षों के बाद उल्फतजहां ने बांदा छोड़ दिया तथा अपनी पुत्री कुक्की के साथ इंदौर जाकर रहने लगी। झालावाड़ में इस समय राजराणा पृथ्वीसिंह (1845-1875) का शासन था। एक बार किसी अवसर पर पृथ्वीसिंह का इंदौर जाना हुआ तो वहां उन्होंने कुक्की का शानदार नृत्य देखा। हालांकि उस समय झालावाड़ में बहुत से उत्तम नर्तक व नर्तकियां पहले से मौजूद थे लेकिन कुक्की के नृत्य की चमक के सामने सब फीके पड़ गए। कुक्की को नर्तकों-नर्तकियों में सबसे अधिक 1800 रूपये प्रतिमाह वेतन मिलने लगा। एक बार उदयपुर के महाराणा शम्भूसिंह के निमंत्रण पर पृथ्वीसिंह अपने साथ कुक्की को भी उदयपुर ले गए। वहां महाराणा शम्भूसिंह ने कुक्की के सामने कोई अनोखी नृत्य कला की प्रस्तुति देने हेतु पेशकश की। वहां के प्रांगण में एक हाथी खड़ा था। उस समय हाथियों को सजाने के लिए उनके दांतों पर लकड़ी की चोकोर पट्टिकाएं लगाया करते थे। कुक्की ने उस हाथी के दांत की पट्टिका

पर चढ़कर नृत्य करना शुरू किया तो वहां महाराणा के साथ बैठे सभी दरबारी कुक्की का ऐसा नृत्य देखकर अचम्भित रह गए।

नि:संदेह नृत्य एवं संगीत का यह एक अद्‌भुत प्रस्तुतिकरण था। महाराणा अपने स्थान से खड़े हुए और कुक्की के पास जाकर बोले 'आज से मैं तुम्हें कुक्की नहीं 'कुक्कीराज' कहकर पुकारूंगा।' कुक्की अपनी नृत्य साधना की कला में इतनी प्रवीण थी कि जब वह नृत्य करती थी तब उसके पैरों में बंधे घुंघरुओं की ध्वनियों में कभी एक की ध्वनि तो कभी अनेक घुंघरूओं की ध्वनियां सुनायी देती थी। यहां इस क्रम में यह भी उल्लेखनीय होगा कि झालावाड़ के प्रख्यात नृत्यकार पं. उदयशंकर के दल में करन्दीकर भी ऐसे ही तबका वादक थे जो तबले पर अपने दोनों हाथों से अनेक तालें बजाते थे। एक बार ऐसी ही अनोखी प्रस्तुति से अभिभूत होकर ब्रिटिश वायसरॉय ने कुक्की को पीतल व लकड़ी से निर्मित एक भव्य रथ तोहफे में दिया था। उस समय कुक्की ने रंगों की गुलाल पर नृत्य कर अपने नृत्य की कला से हाथी का चित्र अपने पैरों से बनाकर सभी को अचम्भित कर दिया था। कुक्की ने 65 वर्ष की उम्र तक अपनी नृत्य कौशल की साधना से झालावाड़ का ही नहीं बल्कि दूर-दूर तक की रियासतों के राजा, महाराजा, नवाबों और ब्रिटिश अधिकारियों का मनोरंजन किया। झालावाड़ राज्य में नरेशों की विशेष अवसरों पर शाही जुलूस निकालने की परम्परा थी। इसमें नरेश एक शाही रथ पर विराजमान होते थे। इस रथ को 'शाही इन्द्रविमान' कहा जाता था। यह तीन मंजिला तथा रजत जड़ित था जिसे दो विशाल हाथी खीचते थे। उन हाथियों के ऊंचे उठे विशाल दन्तों पर एक काष्ठ का पटिया सैट किया जाता था। उन पटियों पर शाही सवारी में 'कुक्की' नृत्य करती थी। महावत नृत्य के समय अपने अंकुश से हाथी के मस्तक को सधा रखते थे और कुक्की का नृत्य देखकर सामान्यजन का मनोरंजन होता था। शाही इन्द्रविमान का एक दुर्लभ हस्तचित्र आज भी झालावाड़ गढ़ संग्रहालय की भित्ती पर अंकित है जो नरेश भवानी सिंह

के समय नाथद्वारा के चित्रकारों ने बनाया था। आखिरकार राजराणा भवानीसिंह (1899-1929) के शासनकाल में कुक्की की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद राजराणा के आदेश से उसकी कब्र पर शानदार मकबरे का निर्माण किया गया। इस मकबरे की कला शैली को राजराणा ने उतना ही उत्कृष्ट रखने का प्रयास किया जितना उत्कृष्ट कुक्की की नृत्य कला हुआ करती थी। मकबरे की कला राजपूत स्थापत्य शैली व मालवा स्थापत्य शैली का समन्वयी रूप है।

संपूर्ण मकबरे के लाल पत्थर में बेहद सुन्दर शिल्पकला के बेलबूटों के कार्य द्वारा कंगूरों का निर्माण किया गया। दीवारों पर रंगीन चमकदार राजपूतकला की आकृतियां देखने योग्य है। मध्य में चारों तरफ लाल पत्थरों में कलात्मक डिजाइन, बेलबूटों की सुन्दर नक्काशी करके दरवाजों की चौखटों व स्तम्भों को इस प्रकार सभी कोण से संरक्षित किया गया है कि प्रत्येक मेहराब में से आरपार तक की सभी कक्षों की मेहराबें एक सीध में नजर आती है। मकबरे की लगभग सभी महराबों में उकेरी गई बेलबूटेदार कला हर कलाप्रेमी को चकित कर देती है। दीवारों पर रंगीन चमकदार आकृतियां देखने योग्य है। जिनका अलंकरण आज भी काफी हद तक अच्छी स्थिति में है। कुक्की का यह मकबरा मालवा व राजपूत स्थापत्य शैली के बेहद सुन्दर मिश्रण का नमूना है। हालांकि इस मकबरे में राजपूत स्थापत्य शैली के बहुत से तत्व सम्मिलित किए गए थे लेकिन फिर भी संपूर्ण मकबरे के निर्माण में मालवा की स्थापत्य शैली की प्रधानता साफ नजर आती है।

मकबरे की दीवारों पर चारों ओर लाल पत्थर का प्रयोग, कलात्मक डिजाईन व बेलबूटों की सुन्दर नक्काशी मालवा शैली की विशेषताएं है। मालवा के भवनों की एक अनोखी विशेषता थी जो कहीं अन्यत्र नहीं मिलती, वह है फिरोजी रंग का शानदार प्रयोग। इस मकबरे की दीवार व दरवाजों की चौखटों पर भी फिरोजी रंग का खुलकर प्रयोग किया गया है। इस मकबरे का मूल गुम्बद उल्टी हुई नौका के आकार का (Boatkeel Dome) है। उल्टी हुई नौका के आकार के गुम्बदों का निर्माण भी विशुद्ध मालवा स्थापत्य शैली की विशेषताओं में से एक रहा। इसके अतिरिक्त मकबरे के कलात्मक झरोखे व छज्जे भी मालवा शैली में बने हैं। हालांकि इस मकबरे का बाहरी रूप अब ठीक ठाक है।

मकबरे की कलात्मक दो मीनारें टूट गई नीचे गिर चुकी हैं तथा धीरे-धीरे अन्य हिस्से भी क्षतिग्रस्त हो रहे हैं। मकबरे के अन्दर झाड़ उगे है। उचित संरक्षण एवं जीर्णोद्धार से इस मकबरे को हाड़ौती मालवा के महत्वपूर्ण पर्यटक स्थलों एवं कला स्मारकों में जोड़ा जा सकता है। नृत्यकला एवं संगीत को समर्पित नृत्यांगना 'कुक्की' का यह मकबरा झालावाड़ नगर में उत्तर की ओर ईदगाह के पीछे स्थित है।

संपर्क : 'अहनद' जैकी स्टूडियो, 15-मंगलपुरा,
झालावाड़ (राज.), मो. 9829896368

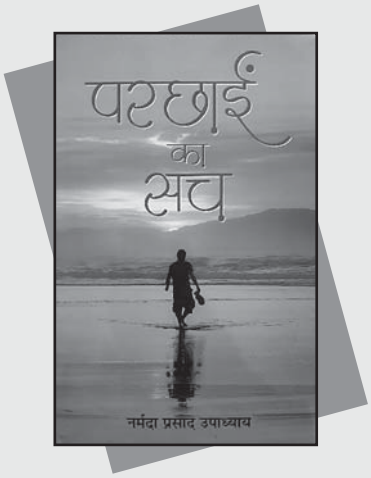

परछाई का सच

लेखक : नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

प्रकाशक : ज्ञान विज्ञान एजूकेयर, नई दिल्ली

मूल्य : ₹350 मात्र

आलेख

कस्तूरबा जीवन झाँकी
बा-बापू की सहधर्मचारिणी

पूरा नाम : कस्तूरबा मोहनदास गांधी
जन्म : 11 अप्रैल, 1869
जन्म स्थान : पोरबंदर
पिता : गोकुलदास कपाड़िया
माता : व्रजकुवर कपाड़िया
विवाह : मोहनदास करमचंद गांधी
मृत्यु : 22 फरवरी, 1944 (उम्र 74) पूणे, महाराष्ट्र

पोरबंदर के गोकुलदास और व्रजकुवर कपाड़िया की पुत्री के रूप में कस्तूरबा का जन्म हुआ। 1883 में 14 साल की कस्तूरबा का विवाह, सामाजिक परम्पराओं के अनुसार 13 साल के मोहनदास करमचंद गांधी से करवा दिया गया। उनकी शादी के दिन को याद करते हुए उनके पति कहते हैं कि, 'हम उस समय विवाह के बारे में कुछ नहीं जानते थे, हमारे लिए उसका मतलब केवल नए कपड़े पहनना, मीठे पकवान खाना और रिश्तेदारों के साथ खेलना था।'

पति-पत्नी 1888 ई. तक लगभग साथ-साथ ही रहे किंतु बापू के इंग्लैंड प्रवास के बाद से लगभग अगले बारह वर्ष तक दोनों प्राय: अलग-अलग से रहे। इंग्लैंड प्रवास से लौटने के बाद शीघ्र ही बापू को अफ्रीका चला जाना पड़ा। जब 1896 में वे भारत आए तब बा को अपने साथ ले गए। तब से बा बापू के पद का अनुगमन करती रहीं। उन्होंने उनकी तरह ही अपने जीवन का सादा बना लिया था। वे बापू के धार्मिक एवं देशसेवा के महाव्रतों में सदैव उनके साथ रहीं। यही उनके सारे जीवन का सार है। बापू के अनेक उपवासों में बा प्राय: उनके साथ रहीं और उनकी सार सँभाल करती रहीं। कस्तूरबा गांधी उनके पति के साथ काम करके, कस्तूरबा एक सामाजिक कार्यकर्ता और स्वतंत्रता सेनानी बन गयी थी। गांधीजी के लॉ की पढ़ाई हेतु दक्षिण अफ्रीका जाने के बाद, उन्होंने भी अपने पति के साथ 1897 में दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की। 1904 से 1914 तक, दुबई में वह फीनिक्स सेटलमेंट में एकटिव रही। 1913 में उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में भारतीय कामगारों का साथ दिया।

जब 1932 में हरिजनों के प्रश्न को लेकर बापू ने यरवदा जेल में आमरण उपवास आरंभ किया उस समय बा साबरमती जेल में थीं। उस समय

वे बहुत बेचैन हो उठीं और उन्हें तभी चैन मिला जब वे यरवदा जेल भेजी गई।

दक्षिण अफ्रीका में 1913 में एक ऐसा कानून पास हुआ जिसके अनुसार ईसाई मत के अनुसार किए गए और विवाह विभाग के अधिकारी के यहां दर्ज किए गए विवाह के अतिरिक्त अन्य विवाहों की मान्यता अग्राह्य की गई थी। दूसरे शब्दों में हिंदू, मुसलमान, पारसी आदि लोगों के विवाह अवैध करार दिए गए और ऐसी विवाहित स्त्रियों की स्थिति पत्नी की न होकर रखैल सरीखी बन गई। बापू ने इस कानून को रद कराने का बहुत प्रयास किया। पर जब वे सफल न हुए तब उन्होंने सत्याग्रह करने का निश्चय किया और उसमें सम्मिलित होने के लिये स्त्रियों का भी आह्वान किया। पर इस बात की चर्चा उन्होंने अन्य स्त्रियों से तो की किंतु बा से नहीं की। वे नहीं चाहते थे कि बा उनके कहने से सत्याग्रहियों में जायें और फिर बाद में कठिनाइयों में पड़कर विषम परिस्थिति उपस्थित करें। वे चाहते थे कि वे स्वेच्छया जायें और जायें तो दृढ़ रहें। जब बा ने देखा कि बापू ने उनसे सत्याग्रह में भाग लेने की कोई चर्चा नहीं की तो बड़ी दु:खी हुई और बापू को उपालंभ दिया। फिर स्वेच्छया सत्याग्रह में सम्मिलित हुई और तीन अन्य महिलाओं के साथ जेल गई। दक्षिण अफ्रीका में जेल जाने के सिवा कदाचित वहां के किसी सार्वजनिक काम में भाग नहीं लिया किंतु भारत आने के बाद बापू ने जितने भी काम उठाए, उन सबमें उन्होंने एक अनुभवी सैनिक की भाँति हाथ बँटाया। चंपारन के सत्याग्रह के समय बा भी तिहरवा ग्राम में रहकर गाँवों में घूमती और दवा वितरण करती रहीं। इसी प्रकार खेड़ा सत्याग्रह के समय बा स्त्रियों में घूम-धूमकर उन्हें उत्साहित करती रहीं। इसके बाद कस्तूरबा को 3 महीने के लिए मजदूरों की जेल में भी जाना पड़ा। बाद में भारत में, कभी जब महात्मा गांधी को जेल हो जाती तब कुछ समय के लिए कस्तूरबा उनके अभियान को आगे बढ़ातीं। 1915 में, जब गांधीजी भारतीय बागानों को मदद करने वापिस आये तब कस्तूरबा ने उनका साथ दिया। उन्होंने स्वास्थ्य विज्ञान, अनुशासन, पढ़ना और लिखना सिखाया।

1922 में जब बापू गिरफ्तार किए गए और उन्हें छह साल की सजा हुई उस समय उन्होंने जो वक्तव्य दिया वह उन्हें वीरांगना के रूप में प्रतिष्ठित करता है। उन्होंने गांधी जी के गिरफ्तारी के विरोध में विदेशी कपड़ों के त्याग के लिए लोगों को आह्वान किया। बापू का संदेश सुनाने नौजवानों की तरह गुजरात

के गाँवों में घूमती फिरीं। 1930 में दांडी कूच और धरासणा के धावे के दिनों में बापू के जेल जाने पर बा एक प्रकार से बापू के अभाव की पूर्ति करती रहीं। वे पुलिस के अत्याचारों से पीड़ित जनता की सहायता करती, धैर्य बँधाती फिरीं। 1932 और 1933 का अधिकांश समय उनका जेल में ही बीता।

1939 में राजकोट के ठाकुर साहब ने प्रजा को कतिपय अधिकार देना स्वीकार किया था किंतु बाद में मुकर गए। जनता ने इसके विरूद्ध अपना विरोध प्रकट करने के लिये सत्याग्रह करने का निश्चय किया। बा ने जब यह सुना तो उन्हें लगा कि राजकोट उनका अपना घर है। वहाँ होने वाले सत्याग्रह में भाग लेना उनका कर्तव्य है। उन्होंने इसके लिए बापू की अनुमति प्राप्त की और वे राजकोट पहुँचते ही सविनय अवज्ञा के अभियोग में नजरबंद कर ली गई।

9 अगस्त 1942 को बापू आदि के गिरफ्तार होने जाने पर बा ने शिवाजी पार्क (बंबई) में, जहां स्वयं बापू भाषण देने वाले थे, सभा में भाषण करने का निश्चय किया किंतु पार्क के द्वार पर पहुँचने पर गिरफ्तार कर ली गईं। दो दिन बाद वे पूना के आगा खां महल में भेज दी गईं। बापू गिरफ्तार कर पहले ही वहाँ भेजे जा चुके थे। उस समय वे अस्वस्थ थीं। गिरफ्तारी की रात को उनका जो स्वास्थ्य बिगड़ा वह फिर संतोषजनक रूप से सुधरा नहीं और अहंतोगत्वा उन्होंने 22 फरवरी 1944 को अपना ऐहिक समाप्त किया।

कस्तूरबा वह महिला थी जिसने जीवन भर अपने पति का साथ दिया। जबकि स्वतंत्रता के दिनों में महिलाओं को इतना महत्व नहीं दिया जाता था, उस समय महात्मा गांधी ने कभी कस्तूरबा को समाजसेवा करने से नहीं रोका। कम उम्र में शादी होने के बाद भी कस्तूरका अपनी जवाबदारियों से नहीं भागी, वो अंत तक अपने कर्तव्यों का पालन करती रही, और अपने समाज की सेवा करती रही। निश्चित ही कस्तूरबा आज के महिलाओं की प्रेरणास्त्रोत है।

– दयाराम नामदेव
सचिव, गांधी भवन न्यास

वरिष्ठजनों के लिए देश का पहला समाचार

प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स

वरिष्ठजनों द्वारा, वरिष्ठजनों का,
वरिष्ठजनों के लिए मुखपत्र

वरिष्ठजनों द्वारा लिखित
रचनाएँ जैसे –
आलेख, कहानी, लघुकथा,
कविता, ग़ज़ल, व्यंग्य तथा
वरिष्ठजनों से संबंधित समाचार,
उनकी समस्या प्रकाशनार्थ
आमंत्रित है।

संपादक
अरुण तिवारी

पृष्ठ संख्या
8 (बहुरंगीय पाक्षिक)

कार्यालय :
प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स
26–बी, देशबंधु भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स,
एम.पी. नगर, जोन–1, भोपाल–462001
फोन: 0755–4940788
ई–मेल : prernasctimes@gmail.com

श्रद्धांजलि

डॉ. रमाकांत दुबे
पूर्व आईएएस अफसर, समाजसेवी
जन्म : 1 दिसम्बर, 1926 निधन : 4 फरवरी, 2020

श्री कृष्ण बलदेव वैद
वरिष्ठ उपन्यासकार, लेखक, साहित्यकार
जन्म : 27 जुलाई, 1927 निधन : 06 फरवरी, 2020

श्री गिरिराज किशोर
प्रसिद्ध साहित्यकार, उपन्यासकार
जन्म : 08 जुलाई, 1937 निधन : 09 फरवरी, 2020

'कला समय' परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि...

गांधी भवन न्यास, भोपाल

1969 में गठित गांधी शताब्दी समारोह समिति को 4 अक्टूबर 1978 को गांधी भवन न्यास में परिवर्तित कर दिया गया। न्यास की स्थापना का मुख्य उद्देश्य शताब्दी वर्ष में प्रारंभ किये गये गांधी तत्व प्रचार कार्य की निरंतरता को बजाये रखकर एक नए समाज की संरचना में सहभागिता करना है। स्थापना के समय से ही विभिन्न प्रवृत्तियों का संचालन कर गांधी तत्व प्रचार का कार्य किया जा रहा है।

प्रारंभ से ही प्रदेश के तपोनिष्ठ सेवक, विचारक, स्व. संग्राम सेनानी, कवि साहित्यकार श्री काशीनाथ त्रिवेदी, भवानी प्रसाद मिश्र, विष्णु प्रभाकर, शम्भूनाथ शुक्ल, श्यामलालजी, रामानन्द दुबे, दादाभाई नाईक, चतुर्भुज पाठक, रविन्द्रनारायण बाजपेयी, हेमदेव शर्मा, सुश्री लीलाराय एवं रामचन्द्र भार्गव का सक्रिय सहयोग न्यास को मिलता रहा। मध्यप्रदेश के पदेन मुख्यमंत्री न्यास के संरक्षक होते हैं। स्थापना के समय से लेकर आज तक श्री रामचन्द्र भार्गव न्यास के सचिव पद पर कार्यरत हैं।

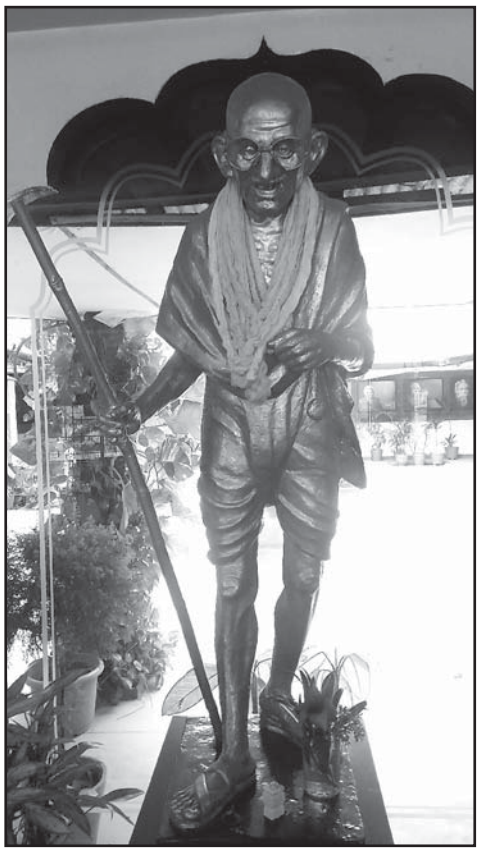

न्यास द्वारा किये जा रहे प्रयासों का संक्षिप्त विवरण

गांधी चित्र प्रदर्शनी

गांधी भवन में गांधीजी के जीवन की विभिन्न घटनाओं को चित्र प्रदर्शनी के माध्यम से दर्शाया गया है। इस प्रकार की चित्र प्रदर्शनी भारत में अन्यत्र नहीं है।

मोहन से महात्मा

गांधीजी के जन्म से मृत्यु तक की प्रतिवर्षानुसार चित्र प्रदर्शनी।

मेरे सपनों का भारत

गांधीजी के सपनों के स्वतंत्र भारत की परिकल्पना की चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्ति जिसका उद्घाटन 9 अगस्त 1992 को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति माननीय ज्ञानी जैलसिंह ने किया था।

मध्यप्रदेश और गांधीजी

गांधीजी द्वारा की गई मध्यप्रदेश की दस यात्राओं का सचित्र विवरण जो 1918 से 1942 के मध्य की गई।

गांधीजी के समकालीन महापुरूष

अलबर्ट आईंसटीन, रोमांरोला, पर्लबक तथा अन्य समकालीन महापुरुषों के गांधी जी के प्रति विचार।

विनोबा चित्र प्रदर्शनी

आचार्य विनोबा भावे पर आधारित चित्र प्रदर्शनी में उनके जन्म से मृत्यु तक की यात्रा तक का विवरण।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण

जयप्रकाश नारायण पर आधारित चित्र प्रदर्शनी में उनके जन्म से मृत्यु तक की यात्रा तक का विवरण।

सर्वधर्म प्रेरणा स्थल

विभिन्न धर्मों के महापुरुषों एवं धर्म प्रर्वतकों के धर्म संबंधी विचारों की अभिव्यक्ति।

गांधी पुस्तकालय

गांधी, विनोबा, तथा अन्य महापुरुषों की दुर्लभ पुस्तकें जिनका उपयोग शोध कार्य एवं ज्ञान प्राप्ति के लिये किया जा रहा है।

गांधी पुस्तक घर

गांधी तथा अन्य महापुरुषों से संबंधित साहित्य को सहज उपलब्ध करवाने की दृष्टि से गांधी पुस्तक घर का संचालन किया जा रहा है। विधान सभा सत्र के समय विधानसभा सचिवालय में गांधी पुस्तक घर का स्टाल लगाया जाता है।

'आसरा' वृद्धजन सेवा आश्रम

जिला प्रशासन भोपाल के आग्रह पर शाहजहांनाबाद भोपाल में नि:शुल्क वृद्धजन सेवा आश्रम 8 अगस्त 1994 से चलाया जा रहा है जिसमें 100 वृद्धजनों को नि:शुल्क आवास, भोजन, वस्त्र तथा चिकित्सा उपलब्ध कराई जा रही है।

रेन बसेरा

सुल्तानिया महिला चिकित्सालय में रोगियों के परिजनों को आवासीय सुविधा देने के लिये रैन बसेरा केन्द्र 2003 से चलाया जा रहा है।

भोजन वितरण केन्द्र

सुल्तानिया महिला चिकित्सालय में रोगियों के परिजनों को दो रूपए में दाल रोटी प्रतिदिन उपलब्ध करवाई जाती है।

गांधी तत्व प्रचार

प्रचार प्रसार की दृष्टि से गांधी विचार से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन स्थानीय एवं प्रादेशिक स्तर पर किया जाता है जिसमें विद्यालयीन छात्र छात्राएं भाग लेती हैं। पुरुस्कार स्वरूप गांधी साहित्य एवं प्रमाण-पत्र दिये जाते हैं।

संस्था समन्वय

गांधी विचारों से प्रेरित प्रदेश एवं प्रदेश की समानधर्मी संस्थाओं के

समन्वय का गांधी भवन, भोपाल मुख्य केन्द्र है।

अन्य कार्यक्रम

2 अक्टूबर गांधी जयंती एवं 30 जनवरी गांधी पुण्यतिथि पर सर्व धर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया जाता है तथा गांधीजी के समकालीन महापुरुषों की जयंतीयों पर भी आयोजन किया जाता है जिसमें स्थानीय नागरिक एवं विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं।

न्यास द्वारा किये गये प्रमुख कार्य

1. **यूनियन कार्बाइड गैस रिसन –**
   दिसम्बर 1984 को भोपाल में युनियन गैस कार्बाइड गैस रिसन हुई जिसमें गांधी भवन न्यास के कार्यकर्ताओं ने दुर्घटनाग्रस्त लोगों की सेवा में सक्रिय सहयोग दिया।
2. **साम्प्रदायिक दंगा –**
   6 दिसम्बर 1992 को अयोध्या में बाबरी मस्जिद के ढहाने पर भोपाल शहर में भीषण दंगे हुए थे। दंगे के समय से लेकर दो माह तक 250 दंगा पीड़ितों को गांधी भवन में नि:शुल्क भोजन, आवास चिकित्सा तथा वस्त्र उपलब्ध करवाये गये।
3. **भारत छोड़ो आन्दोलन –**
   9 अगस्त 1992 को भारत छोड़ो आन्दोलन की स्वर्ण जयंती की अवसर पर प्रदेश के लगभग 500 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का सम्मान तथा भारत छोड़ो आन्दोलन स्मारिका का प्रकाशन किया गया। इस अवसर पर भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति माननीय ज्ञानी जैलसिंह ने प्रमाण–पत्र भेंट कर स्मारिका का विमोचन किया।

गांधी स्मृति यात्रा

1994 में गांधी जी का 125 वां वर्ष देश में मनाया गया। गांधी भवन न्यास ने 30 जनवरी 1994 से 12 जून 1994 तक यात्रा का आयोजन कर प्रदेश के 6 सम्भागों के 24 जिलों की 127 तहसीलों के 275 गांव–कस्बों एवं नगरों की आठ हजार किलोमीटर की यात्रा कर गांधीजी के विचारों को जन जन तक पहुंचाया और 'बापू ने कहा था' नामक एक लघु पुस्तिका प्रकाशित की।

गांधीजी का चम्पारण सत्याग्रह के सौ वर्ष पूर्ण होने पर गांधी भवन न्यास द्वारा मध्यप्रदेश के गांव, कस्बों एवं नगरों में जहां–जहां गांधी जी गए थे वहां–वहां गांधी विचारों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए यात्रा का आयोजन किया गया।

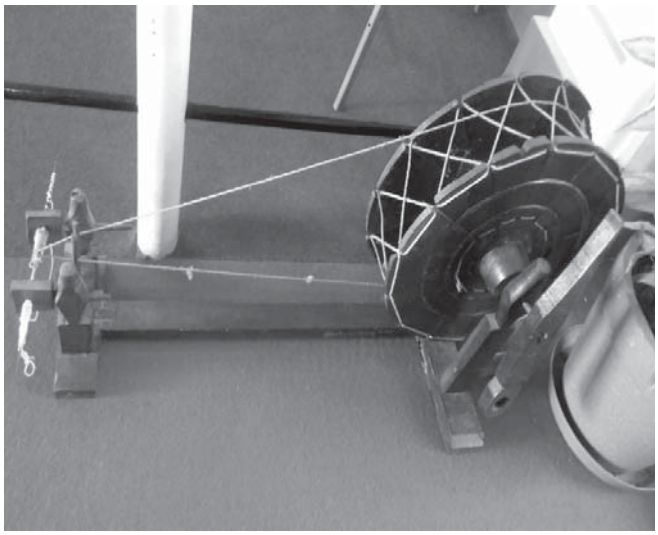

गांधी जन सम्मेलन एवं युवा प्रशिक्षण शिविर

जनमानस में गांधी जी के विचारों का प्रचार प्रसार करने एवं आपसी सद्भाव जाग्रत करने के लिए गांधी जन सम्मेलन एवं युवा शिविर का आयोजन किया जाता है।

नगर स्वराज्य पद यात्रा

स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती के अवसर पर 2 से 9 अक्टूबर 1997 तक भोपाल शहर की 55 झुग्गी बस्तियों में पदयात्रा कर नगर स्वराज्य का संदेश जन जन तक पहुंचाया गया।

लोक स्वराज्य यात्रा

11 सितम्बर विनोबा भावे की जयंती के अवसर पर लोक स्वराज्य यात्रा का आयोजन कर प्रदेश के 17 जिलों की 11 अक्टूबर 1998 तक एक माह की यात्रा कर लोकतंत्र में लोगों के अधिकार एवं कर्तव्य का संदेश आम आदमी तक पहुंचाया गया।

नवजीन नशा मुक्ति केन्द्र

समाज में मादक पदार्थों के बढ़ते प्रभाव की रोकथाम के लिये 15 फरवरी 1989 से 15 मई 2012 तक नशामुक्ति केन्द्र के माध्यम से 6690 विभिन्न प्रकार के नशा पीड़ितों को नशामुक्त करने का प्रयास किया गया।

आकांक्षा विशेष स्कूल

सेरेब्रल पल्सी से पीड़ित मानसिक विकलांग बच्चों के लिये 2007 से 2012 तक विशेष स्कूल के माध्यम से बच्चों को सहायता प्रदान कर राहत पहुंचाई गई।

जैविक खेती का शिक्षण एवं प्रशिक्षण

कार्पोरेट घराने एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने हमारी कृषि नीति को प्रभावित किया है, जिससे भूमि बंजर होती जा रही है और कीटनाशक दवाएं एवं रासायनिक खाद से लोक स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है, इसलिए जैविक खेती को प्रोत्साहन देने के लिए शिक्षण, प्रशिक्षण के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

गांधी समाधि स्थल

महात्मा गांधी, कस्तूरबा एवं महादेव भाई की चिता भस्म के अवशेष यहां रखे हुए हैं।

हम मानते हैं कि ....

1. गांधी एक व्यक्ति नहीं समग्र विचार है जो दुनिया के लिए प्रेरणा स्रोत है।
2. गांधी के द्वारा बताए गए रचनात्मक कार्यों से ही एक नए समाज की रचना हो सकती है।
3. स्वराज्य का अर्थ निरंकुश आजादी या स्वच्छंदता नहीं है।
4. अधिकारों की उत्पत्ति का सच्चा स्रोत कर्तव्यों का पालन है।
5. बुद्धिपूर्वक किया हुआ शरीर श्रम समाज सेवा का सर्वोत्कृष्ट रूप है।
6. प्रेम और अहिंसा से ही सच्ची सेवा की जा सकती है।
7. खादी–वृत्ति का अर्थ है, जीवन के लिए जरूरी चीजों की उत्पत्ति और उनके बंटवारे का विकेन्द्रीकरण।

■

दक्षताओं का उपयोग सुनिश्चित करना सबसे बड़ी आवश्यकता : मनोज श्रीवास्तव

पारूल श्रीवास्तव की पुस्तक 'अ ट्रेनर्स क्रॉनिकल' का विमोचन संपन्न

भोपाल। युवा प्रशिक्षक एवं लेखका पारूल श्रीवास्तव ने व्यावहारिक अप्रोच के साथ प्रबंधन के संबंध में अंग्रेजी में पुस्तक 'ट्रेनर्स क्रॉनिकल' की रचना की है। पुस्तक की सर्वव्यापी उपयोगिता होने से कला समय संस्कृति, शिक्षा एवं समाज सेवा समिति, भोपाल ने स्वराज्य संस्थान के सभागार में 19 फरवरी, 2020 को प्रख्यात साहित्यकार और शिक्षाविद प्रो. रमेश दवे की अध्यक्षता एवं म.प्र. शासन के अपर मुख्य सचिव तथा प्रख्यात लेखक चिंतक श्री मनोज श्रीवास्तव के मुख्य आतिथ्य में पुस्तक के विमोचन का समारोह आयोजित हुआ। समारोह में म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री पलाश सुरजन और भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी श्री आशीष सक्सेना विशिष्ट अतिथि के बतौर उपस्थित थे। समिति के सचिव श्री भंवरलाल श्रीवास के संयोजन में हुए समारोह का कुशल संचालन वरिष्ठ लेखक श्री लक्ष्मीकांत जवणे ने किया। इस अवसर पर लेखिका की मार्गदर्शक और प्रेरणास्त्रोत डॉ. भारती व्यंकटेश विशेष रूप से उपस्थित थीं। मुख्य अतिथि के रूप में कु. पारूल श्रीवास्तव को बधाई और शुभ कामनाएँ देते हुए श्री मनोज श्रीवास्तव ने कहा कि दक्षता तो व्यक्ति के भीतर नैसर्गिक रूप में रहती है। इसलिए बढ़ाने की बजाए दक्षता के अधिक से अधिक बेहतर उपयोग की आवश्यकता है। हमारे ग्रामीणों, विशेष आदिवासियों में भी भरपूर दक्षताएँ हैं। हमें उन दक्षताओं की उनकी निर्योग्यता मानकर उनकी उपेक्षा करने की बजाय उनके बेहतर उपयोग को सुनिश्चित करने के बारे में सोचना चाहिए। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में जो देशज कौशल उपलब्ध हैं, उनका भी अच्छा उपयोग हो सकेगा।

मुख्य अतिथि ने पारूल श्रीवास्तव की पुस्तक 'अ ट्रेनर्स क्रॉनिकल' की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनमें पास लेखन की अच्छी प्रतिभा है। उन्हें अपने लेखन को सतत रूप से जारी रखना चाहिए। झाबुआ जिले में कलेक्टर रहते प्राप्त एक अनुभव को साझा करते हुए आपने कहा – मैंने दौरे के समय एक जगह देखा कि आदिवासी पहाड़ी पर 9 कि.मी. पानी पहुंचा रहे थे। मैंने उस बारे में बिजली बोर्ड और बैंक को बताया था। आदिवासियों ने बताया कि वे बैंक के चक्कर काटने से बचने के लिए अपने ही बूते पर पहाड़ी पर पानी पहुंचाते हैं। खेद की बात है कि देशज पद्धतियों और कौशल का उपयोग करने की बजाय हम लोगों को दूसरों पर निर्भर बना रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि जो कौशल और दक्षता पारंपरिक रूप से उपलब्ध है उसका उपयोग करने की दिशा में काम होना चाहिए। हर व्यक्ति एक 'पावर हाउस' है, उसका उपयोग करने की जरूरत है। ऐसा करने पर सामाजिक आत्म निर्भरता भी बढ़ेगी। हमें स्वयं पर अविश्वास करने की बजाय विश्वास करना होगा। आधुनिकता के चक्कर में पड़कर हम अपनी भाषा, वेशभूषा और भोजन की अवमानना कर रहे हैं, जो कि अनुचित है।

मनोज जी ने आगे कहा मैंने आदिवासियों का कोंदो, कुटकी से बना खाना खाया है। वह हमारे भोजन से कम स्वादिष्ट नहीं था। दूसरी तरफ हम आदिवासियों की कोंदो, कुटकी और मक्का से दूर हटा रहे हैं। यह स्वयं को दबाने की प्रवृत्ति बहुत नुकसानकारी है। इसे छोड़ना होगा। हमें समाज में जो है, उसको और बेहतर बनाने के प्रयास करना चाहिए।

अपने मसूरी प्रशिक्षण की चर्चा करते हुए अपर मुख्य सचिव ने कहा कि मनुष्य में जो जन्मजात क्षमताएँ रहती हैं, प्रशिक्षण से उनका सही ढंग से उपयोग करने और उनका मूल्य जानने की समझ पैदा होती है। इस भ्रम को मन से निकाल दिया जाना चाहिए कि हम विभिन्न प्रकार के ट्रैनिंग प्रोग्राम्स के जरिये व्यक्तियों को ट्रैण्ड करते हैं। वस्तुत: ट्रैण्ड तो पशुओं को किया जाता है। वास्तव में ट्रेनिंग का एक उद्देश्य यह रहता है कि व्यक्ति को सही ढंग का रोजगार मिल सके और अनुभव बढ़ने से व्यक्ति के भीतर सतर्कता भी बढ़े। आपने कहा – ग्रामीण क्षेत्र में जो योग्यताएँ मौजूद हैं, उनका सम्मान करने की आवयकता है।

अध्यक्षीय उद्बोधन : प्रो. रमेश दवे ने कुमारी श्रीवास्तव को बधाई और शुभ कामनाएँ देते हुए अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि कुमारी पारूल को प्रशिक्षण और लेखन के क्षेत्र में बेहतर से बेहतर करने का प्रयास करना चाहिए। मैं भी शिक्षकों का ट्रेनर रहा हूं। आखिर ट्रेनिंग की जरूरत क्यों है? व्यक्ति के पास सब रहता है, लेकिन जो है, उसको ट्रेनिंग बेहतर बनाती है और ट्रेनिंग लेने वालों में आत्मविश्वास पैदा करती है। आपने कहा इस समय हम भूमंडलीकरण के ग्राहक नहीं, बल्कि भूमंडलीकरण के ग्राहक बनते जा रहे हैं। कुशलता से किया गया काम ही योग्य है। हमें अपनी क्षमता का वितरण करना भी सीखना होगा। हमें देखना और सीखना होगा कि मजदूर और किसान अपना

मैनेजमेंट कैसे करते है ? पारूल की किताब बहुत अच्छी है। उसकी भाषा भी अच्छी है। वह लोगों तक पहुंचना चाहिए।

प्रारंभ में डॉ. भारती व्यंकटेश और पारूल श्रीवास्तव ने भी अपने-अपने विचार रखें। डॉ. व्यंकटेश ने कहा कि पारूल एक प्रतिभावान और मेहनती लड़की है। उसमें अच्छा से अच्छा करने की प्रबल इच्छाशक्ति है। वह निश्चित ही भविष्य में प्रबंधन पर और भी बेहतर साहित्य समाज को समर्पित करेंगी। विशिष्ट अतिथि श्री आशीष सक्सेना और श्री पलाश सुरजन ने भी अपनी बात रखते हुए पारूल श्रीवास्तव को बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं। समिति के सचिव श्री भंवरलाल श्रीवास ने समिति की गतिविधियों से अवगत कराते हुए सभी अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया। पुस्तक की लेखिका की ओर से श्रीमती रचना श्रीवास्तव ने अतिथियों का आभार माना। इस अवसर पर कला समय संस्कृति, शिक्षा एवं समाज सेवा समिति के अध्यक्ष संगीताचार्य प्रो.पं. सज्जनलाल ब्रम्हभट्ट 'रसरंग' सहित साहित्यकार, साहित्य प्रेमी एवं

प्रशासनिक अधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान संस्थाओं और व्यक्तियों की ओर से भी पारूल श्रीवास्तव का स्वागत हुआ।

रिपोर्ट : युगेश शर्मा

काकली संगीत समारोह सम्पन्न

काकली संगीत संस्था और काकली संगीत महाविद्यालय भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में 7 एवं 8 मार्च, 2020 को मायाराम सुरजन स्मृति भवन भोपाल में पद्मश्री डॉ. कैलाश मड़वैया के मुख्य आतिथ्य में डॉ. मुकुंद भाले, खैरागढ़ को तालवाद्य तथा डॉ. प्रो. राजाराम भोपाल को ललित कला में प्रतिभा सम्मान तथा श्रीमती मानिका सचदेव को प्रदान किये गये। फिर डॉ. शिल्पा मसूरकर इन्दौर का गायन तथा डॉ. मुकुन्द भाले का एकल तबला वादन हुआ। दूसरे दिन डॉ. दीप्ति गेड़ाम परमार, प्रदक्षणा भट्ट का शास्त्रीय गायन, पं. रामजीलाल शर्मा, रामपुर (दतिया) का एकल पखावज वादन दोनों सभाओं में मुन्नालाल भट्ट, मनोज पाटीदार, आशेष उपाध्याय तबला तथा जितेन्द्र शर्मा, रवि किल्लेदार ने हारमोनियम पर संगत दी।

कला समय विशेषांक 102वाँ अंक का लोकार्पण

दिनांक 9 फरवरी, 2020 को श्री गुरूनानक देव जी का 550वाँ प्रकाश पर्व विशेषांक का लोकार्पण गुरूद्वारा गुरूनानक टेकरी सहाब, ईदगाह हिल्स भोपाल में सम्पन्न हुआ। अवसर था संत रविदास जी, श्री हरिराम जी के प्रकाश पर्व पर गुरूद्वारे में लगभग 1000 सिख समुदाय के बीच कला समय का लोकार्पण के साथ संपादक भँवरलाल श्रीवास का शॉल पहनाकर सम्मान किया गया। विशेष रूप से ज्ञानी गुरभेज सिंह और गुरूद्वारा कमेटी के सदस्य उपस्थित थे।

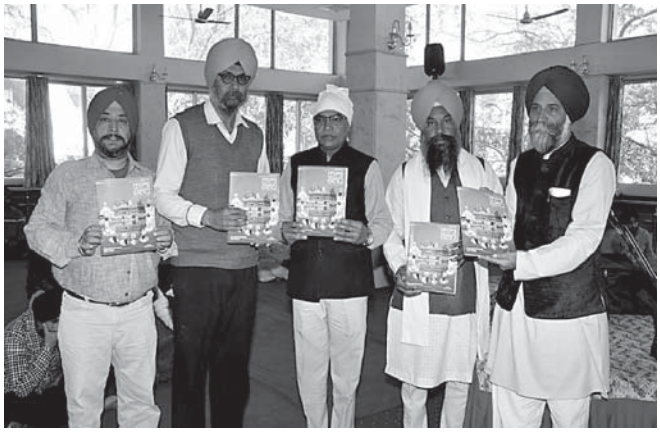

'इतिहास कला श्री' पुरातत्व सम्मान से अलंकृत हुई 'डॉ. मुक्ति पाराशर'

फरवरी माह में बीकानेर में आयोजित राजस्थान आर्कियालॉजी एण्ड एपीग्रापी कांग्रेस के द्वितीय वार्षिक अधिवेशन में कोटा की इतिहासकार 'डॉ. मुक्ति पाराशर' को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर पद्मश्री पुरातत्ववेत्ता डॉ. वाकणकर के सहयोगी रहे पुरातत्ववेत्ता डॉ. नारायण व्यास तथा कांग्रेस के अध्यक्ष प्रो. बी.एल. भादानी ने डॉ. मुक्ति पाराशर का शाल ओढ़ाकर एवं इतिहास कला श्री सम्मान पत्रक प्रदान कर सम्मान किया गया। 2 दिवसीय अधिवेश में भारत के 9 प्रांतों के पुरातत्वविद्, इतिहासकार एवं शौधार्थी उपस्थित हुए थे।

डॉ. मुक्ति पाराशर को यह सम्मान उनके द्वारा कला, इतिहास पर लिखे 4 शोध पूर्ण ग्रंथों तथा 150 शोध लेखों व उनकी हाड़ौती में खोज की गई अल्पज्ञात पुरा सम्पदा के कार्य करने हेतु प्रदान किया गया। वे इस अधिवेश में

राजस्थान की एक ऐसी महिला के रूप में सम्मानित हुई, जिन्होंने पुरातत्व एवं कला पर मौलिक कार्य किये।

'हिन्दी साहित्य मनीषी' सम्मानोपाधी से अलंकृत हुई इतिहासविद 'पुष्पा शर्मा'

श्रीनाथद्वाराजी के साहित्य मण्डल द्वारा आयोजित वार्षिक 'पाटोत्सव' महोत्सव में केकड़ी (अजमेर) की इतिहासविद् श्रीमती पुष्पा शर्मा को 'हिन्दी साहित्य मनीषी' की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जाने माने साहित्यकार भागीरथ शर्मा एवं लोककवि रामेश्वर शर्मा ने पुष्पा शर्मा को शॉल, ओपरना, कंठहार एवं मेवाड़ी पगड़ी पहनाकर तथा श्रीनाथजी की स्वर्णिम छवि तथा सम्मानोपाधी पत्र प्रदत्त कर सम्मानित किया। समारोह से देश के 18

राज्यों से आये साहित्य साधकों का भी सम्मान किया गया। ज्ञातव्य कि केकड़ी निवासी श्रीमती पुष्पा शर्मा मूलत: एक इतिहासविद् और साहित्य साधक है तथा अब तक देशभर की अनेक पत्र-पत्रिकाओं और अधिकृत इतिहास जर्नल में उनके लगभग 100 लेख, कविता तथा अजमेर जिले के बघेरा कस्बे के पुरातत्व, शिल्प एवं इतिहास पर मानक ग्रन्थ का प्रकाशन हो चुका है। वर्तमान में वे अजमेर जिले की अल्पज्ञात पुराकला निधियों पर शोध कार्य में संलग्न हैं।

'हिन्दी साहित्य मनीषी' सम्मानोपाथी से समलंकृत हुई 'श्रीमती प्रीति शर्मा'

'रोशनी के दीप का हुआ विमोचन'

श्रीनाथद्वाराजी के साहित्य मण्डल द्वारा आयोजित 'पाटोत्सव' महोत्सव में भरतपुर की इतिहासविद् एवं कवियत्री श्रीमती प्रीति शर्मा को 'हिन्दी साहित्य मनीषी' की मानद उपाधी से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर जाने माने साहित्यकार भागीरथ शर्मा एवं लोककवि रामेश्वर शर्मा ने पुष्पा शर्मा को शॉल, ओपरना, कंठहार एवं मेवाड़ी पगड़ी पहनाकर तथा श्रीनाथजी की स्वर्णिम छवि तथा सम्मानोपाथी पत्र प्रदत्त कर सम्मानित किया। समारोह से देश के 18 राज्यों से आये साहित्य साधकों का भी सम्मान किया गया। इस अवसर पर प्रीति शर्मा द्वारा रचित एवं सद्य: प्रकाशित 'रोशनी के दीप' काव्य पुस्तक का भव्य लोकार्पण मण्डल के प्रधानमंत्री श्यामप्रकाश देवपुरा के मुख्य आतिथ्य में किया गया। ज्ञातव्य की प्रीति शर्मा के अब तक 2 ग्रन्थों तथा 150 आलेखों का स्तरीय प्रकाशन हो चुका है तथा वर्तमान में वे

'हाड़ौती के जैन मंदिरों की कला और स्थापत्य' पर पी.एच.डी. में शोधरत है।

रपट : ललित शर्मा

पोयसिस समारोह में डॉ. शाम्भवी शुक्ला का काव्य - नर्तन

नई दिल्ली/काव्य, साहित्य और संगीत को समर्पित नयी दिल्ली की संस्था 'पोयसिस' द्वारा आयोजित समारोह में अंतर्राष्ट्रीय कथन नृत्यांगना एवं गुरु डॉ. शाम्भवी शुक्ला मिश्रा ने 'काव्य-नर्तन' प्रस्तुत किया। नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में डॉ. शाम्भवी ने सवयं द्वारा लिखी गई कविताओं पर परिपक्व भाव-अभिनय के साथ नृत्याभिव्यक्ति प्रस्तुत की। समस्त उपस्थित साहित्यकारों, कवियों एवं बुद्धिजीवियों के बीच यह प्रस्तुतिकरण नवाचार एवं सृजनधर्मिता के ठोस उदाहरण स्वरूप उपस्थित हुआ। इस कार्यक्रम का आकर्षक व सुमधुर पार्श्व संगीत संयोजन प्रसिद्ध गजल गायक श्री बृजेश मिश्रा का रहा। काव्य नर्तन पश्चात 28 नवोदित कवियों ने अपनी एक-एक कविता का पाठ किया। काव्य पाठ के साथ पेंटिंग का लाइव प्रदर्शन भी सुन्दर हा। IIC दिल्ली के सहयोग एवं सभी अतिथियों का आभार पोयसिस संस्था के संस्थापक सचिव चित्रकार श्री आनंद खत्री ने माना। इस अवसर पर काव्य संग्रह 'लामका' पुस्तक का विमोचन किया गया। समारोह में प्रसिद्ध लेखक श्री ज्योतिष जोशी, पेंटर सुश्री ट्विंकल अरोरा, अदिति वर्मा, डॉ. एस.एम. अख्तर, श्री केकी एन दारूवाला, डॉ. लवली शर्मा, सुश्री अंजोरा खत्री सहित करीब सौ अतिथि उपस्थित थे।

प्रेषक : कवि, प्रोफेसर दिनेश अत्रि सागर

'श्रीहरि सरलगीता' से जनमानस को कर्तव्यनिष्ठ बनाने में मदद मिलेगी : डॉ. सुरेन्द्र बिहारी गोस्वामी

भोपाल। जो लोग संस्कृत पढ़ना नहीं जानते, उने लिए रामचरित मानस की तरह दोहे, चौपाई, छंद में गीता का सरल, सहज एवं बोधगम्य अनुवाद 'श्रीहरि सरलगीता' जन-जन में लोकप्रिय होगा। इससे जनमानस को कर्तव्यनिष्ठ बनाने तथा संस्कार ग्रहण करने में सहायता मिलेगी। उक्त विचार रविवार को हिंदी भवन के महादेवी वर्मा कक्ष में 'श्रीहरि सरलगीता' पुस्तक के लोकार्पण समारोह में मुख्य वक्ता डॉ. सुरेन्द्र बिहारी गोस्वामी ने व्यक्त किए। समारोह के अध्यक्ष पूर्व राज्यसभा सांसद श्री रघुनंदन शर्मा ने कहा कि कमल किशोर दुबे द्वारा किया गया यह सहज, सरल एवं भावपूर्ण अनुवाद जनहितैषी साबित होगा। इससे जनमानस को सनातन संस्कारों के साथ-साथ नवउत्साह, ऊर्जा एवं कर्तव्य प्रेरणा की शिक्षा मिलेगी। समारोह के मुख्य अतिथि अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रामदेव भारद्वाज ने इस पुस्तक को समाज में संस्कारों की स्थापना करने के लिए अत्यधिक उपयोगी बताया। श्रीहरि सरलगीता कृति के रचनाकार पं. कमल किशोर दुबे ने गीता के विभिन्न अध्यायों के लोकप्रिय श्लोकों का दोहे, चौपाइयां, छंद के काव्यानुवाद को उद्धृत करते हुए कहा कि समाज व जनमानस में बढ़ रही संस्कारहीनता, उद्दंडता, निराशा को दूर करने विशेष रूप से युवाओं को कर्तव्यनिष्ठ बनाने एवं

कृतिकार पं. कमल किशोर दुबे भोपाल द्वारा रचित श्रीहरि सरलगीता का लोकार्पण समारोह

हिन्दी भवन के महादेवी वर्मा कक्ष, श्यामला हिल्स, पॉलिटेक्निक चौराहा भोपाल में अध्यक्ष श्री रघुनंदन शर्मा पूर्व सांसद, राज्यसभा एवं उपाध्यक्ष म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल, मुख्य अतिथि - प्रोफेसर रामदेव भारद्वाज कुलपति, अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल विशिष्ट अतिथि डॉ. राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' जबलपुर, सारस्वत अतिथि प्रो. कमल दीक्षित वरिष्ठ पत्रकार लेखक, प्रमुख वक्ता डॉ. सुरेन्द्र बिहारी गोस्वामी, पूर्व संचालक, म.प्र. साहित्य अकादमी एवं अनेक विद्वान साहित्यकारों के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

'श्रीहरि सरलगीता' पं. कमल किशोर दुबे द्वारा श्रीमद् भगवतगीता का रामचरित मानस की शैली में दोहे चौपाई छंद में सरल एवं बोधगम्य पद्यानुवाद किया गया है।

अपना जीवन सफल बनाने में उपयोगी बताते हुए इसके जनमानस में लोकप्रिय होने का विश्वास व्यक्त किया।

इससे पूर्व पब्लिक रिलेशन्स सोसायटी, भोपाल के अध्यक्ष श्री पुष्पेन्द्र पाल सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए इस कृति को गेय एवं आसानी से समझ में आने योग्य होने से जीवन मूल्यों की स्थापना में महत्वपूर्ण एवं समाजोपयोगी बताया। वरिष्ठ पत्रकार-लेखक प्रो. कमल दीक्षित ने इसे संस्कृत का ज्ञान नहीं जानने वाले समस्त पाठकों के लिये अत्यधिक लाभकारी बताया। इसके अलावा जबलपुर के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. राजकुमार तिवारी सुमित्र ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये। इस मौके पर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मंत्री-संचालक कैलाशचंद्र पंत, हिन्दी भवन के निदेशक डॉ. जवाहर कर्णावट, कान्ता राय, पीआरएसआई के पदाधिकारियों में डॉ. संजीव गुप्ता, श्री मनोज द्विवेदी, श्री विजय बोन्द्रिया, योगेश पटेल, कलामंदिर साहित्यिक संस्था के अध्यक्ष डॉ. गौरीशंकर शर्मा 'गौरीश', सचिव गोकुल सोनी, तुलसी साहित्य समिति के अध्यक्ष डॉ. मोहन तिवारी 'आनंद', म.प्र. लेखक संघ के अध्यक्ष डॉ. रामवल्लभ आचार्य, अशोक चंद्र दुबे, डॉ. संजय सक्सेना, ऋषि श्रृंगारी, आनंद तिवारी, अशोक व्यग्र, मनोज जैन मधुर, अशोक निर्मल, सोहागपुर से शरद व्यास, कृति कार दुबेजी के पिताश्री पं. श्यामलाल जी दुबे, परिजन, सहपाठी मित्रगण श्री प्रमोद बरुआ, शिव कुमार शर्मा, श्रीराम शर्मा, के.एल. सिलावट, आर.के. पाराशर, मुकेश अवस्थी सहित बड़ी संख्या में कवि, साहित्यकार, साहित्य प्रेमीजन और उपस्थित थे।

श्रीहरि सरलगीता के प्रकाशक - भाल्व पब्लिशिंग कं. प्रायवेट लि. बी.24, सिद्धार्थ लेक सिटी, रायसेन रोड, भोपाल (दूरभाष-0755-2529169) द्वारा प्रकाशित इस ग्रंथ का मूल्य मात्र 495/- है। जो इंटरनेट संस्करण E-Book के रूप में chandralekha.com पर भी उपलब्ध है।

आपले वाचनालय में बौराया 'कविता का वसंत'
कवि निशांत हुए सम्मानित

इंदौर। अपने समय के व्याप्त विसंगतियों, अनाचारों, पीड़ाओं को ईमानदारी से अभिव्यक्त करते हुए हर काल में युवा कवि न सिर्फ अपने समय से सार्थक मुठभेड़ करते हैं वरन अपनी प्रयोगधर्मी दृष्टि से काव्य विधा में नए आयाम जोड़ते हैं। उक्त विचार ओम ठाकुर और डॉ. पुरषोत्तम दुबे ने आपले वाचनालय में बंगाल से आये प्रतिभाशाली युवा कवि निशांत के स्वागत में आयोजित कविता का वसंत कार्यक्रम के अपने अतिथिय उद्‌बोधन में व्यक्त किये।

वसंत पंचमी के अवसर पर आयोजित इस सम्मान काव्य गोष्ठी के पूर्व निशांत को उनके साहित्यिक अवदान के लिए संस्था द्वारा सम्मानित किया गया। कवि निशांत ने अपने उद्‌बोधन में आपले वाचनालय द्वारा समाज में रचनात्मकता के संवर्धन के लिए किये जा रहे समर्पित प्रयासों की प्रशंसा करते हुए संस्था के संस्थापक संस्कृति पुरुष वसंत राशिनकर द्वारा शुरू किये गए इस सांस्कृतिक अनुष्ठान को प्रणम्य बताया। इस प्रसंग पर उन्होंने अपनी चुनिन्दा अलहदा रचनाओं का पाठ कर श्रोताओं को अभिभूत किया। इंद्रधनुषी रंगों की इस वासंतिक काव्य गोष्ठी में अजीज अंसारी, मुकेश इंदौरी और प्रदीप कान्त ने जहां अपनी ग़ज़लों से समां बांधा वहीं सदाशिव कौतुक की पहाड़, बसंत पर शिव चंद्रायण, श्रीति राशिनकर निर्भया पर अरुणा खरगोणकर तथा प्रदीप मिश्र, अरुण ठाकरे और संदीप राशिनकर ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को प्रभावित किया। प्रदीप नवीन की हास्य सरस्वती वंदना ने गुदगुदाया वहीं हरेराम वाजपेयी के गीत ने श्रोताओं को आल्हादित किया।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन, माल्यार्पण और मनोहर शहाने द्वारा सुमधुर सरस्वी वंदना से हुई। अतिथियों का स्वागत दीपक देशपांडे, चंद्रायण व संदीप ने किया और प्रभावी सूत्र संचालन किया श्रीति राशिनकर ने। इस अवसर पर अशोक शर्मा भारती, राम मूरत राही, सदानंद नाइक, किरण टकसाले, रमेश बलंग, वोहरा, अनंत काईतवाड़े, वाणी, शुभा देशपांडे, मोघे, राजुरकर के अलावा कई सुधि श्रोता मौजूद थे।

लघुकथा प्रसंग आयोजित

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. विनय षडंगी राजाराम की अध्यक्षता में दिनांक 2 फरवरी 2020 को दुष्यंत कुमार संग्रहालय में लघुकथा शोध केन्द्र भोपाल का विशेष मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. उमेश कुमार सिंह, पूर्व निदेशक म.प्र. साहित्य अकादमी एवं विशेष अतिथि के रूप में कथाकार श्री हीरालाल नागर उपस्थित थे। लघुकथा शोध केन्द्र, भोपाल की निदेशक डॉ. कान्ता राय ने आयोजन की रूपरेखा प्रस्तुत की और आगन्तुक अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर अध्यक्ष डॉ. बिनय ने लघुकथा के महत्व को स्पष्ट करते हुए वेदों एवं उपनिषदों में प्राप्त लघुकथाओं के उदाहरण प्रस्तुत किए तथा लगभग तीस लघुकथाकारों द्वारा की गई लघुकथाओं की समीक्षा करते हुए उन्हें बगीचे के विविध पुष्पों की तरह पूर्ण एवं महत्वपूर्ण बताया। मुख्य अतिथि के रूप में अपनी बात रखते हुए डॉ. उमेश कुमार सिंह ने लघुकथाओं में सकारात्मक अभिव्यक्ति के महत्व को स्पष्ट किया तथा श्री नागर ने अपने वक्तव्य में लघुकथाकारों को दीर्घ कहानी भी लिखने का आहवान किया। लघुकथा शोध केन्द्र के सचिव, साहित्यकार श्री घनश्याम मैथिल ने कार्यक्रम का संचालन किया।

पत्रिका ही नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान

पत्रिका मुफ्त मांग कर, कृपया हमारे अनुष्ठान को आघात न पहुँचाएं

'कला समय' के सदस्य बनें- ❍ पत्रिका की वार्षिक/द्वैवार्षिक /आजीवन सदस्यता ग्रहण करें। सदस्यता शुल्क मनीआर्डर, ड्राफ्ट, ऑनलाइन अथवा व्यक्तिगत रूप से भुगतान किया जा सकता है।

'कला समय' की एजेंसी के नियम- ❍ आपके गांव, कस्बे, शहर में सांस्कृतिक पत्रिका 'कला समय' की एजेन्सी के लिए सम्पर्क करें। ❍ कम से कम दस प्रतियों से एजेन्सी शुरू की जायेगी। ❍ पत्रिका कुरियर अथवा रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजी जायेगी। डाक खर्च एजेन्सी को वहन करना होगा। ❍ कमीशन, प्रतियों की संख्या के आधार पर।

स्थायी तथा सम्पादकीय पता और दूरभाष क्रमांक के साथ सम्पर्क करें- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 Email : bhanwarlalshrivas@gmail.com मो. 9425678058, 0755-2562294

लेखकों/कलाकारों से ❍ कला, संस्कृति और विचार के अछूते पहलुओं पर सृजनात्मक, शोधात्मक और सूचनात्मक आलेख, टिप्पणियां, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, ललित निबंध, कविताएँ, छायाचित्र, रेखांकन तथा शोध आमंत्रित हैं। ❍ रचनाएँ कागज के एक ओर टाइप की हुई तथा मौलिकता का प्रमाण पत्र संलग्न हो। कृपया रचना के साथ पर्याप्त डाक टिकिट लगा लिफाफा भी संलग्न करें। रचनाएँ और चित्र ई-मेल से भी भेजे जा सकते है।

प्राथमिकता के साथ : Chanakya फोंट / वर्ड फाइल / PDF फॉर्मेट में ही भेजें।

अनुरोध : वे सदस्य जिनका वार्षिक / द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क समाप्त हो रहा है, कृपया अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करायें। सदस्यों को पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। नहीं मिलने की स्थिति में सदस्यता शुल्क के साथ ₹ 120/- का प्रतिवर्षानुसार रजिस्टर्ड डाक शुल्क अतिरिक्त भेजा जाना होगा।

-संपादक

आपके पत्र

पत्रिका के बहाने

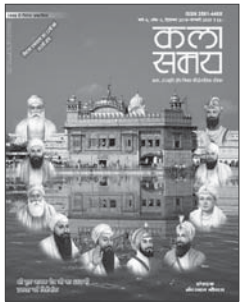

श्रीमान्य श्रीवासजी, सादर वन्दे

कला समय का श्री नानकदेवजी का 550 वां प्रकाश पर्व विशेषांक अच्छी नई जानकारी से समृद्ध करता है। मेरा कावड़ में गुरु नानकदेवजी का जीवन दर्शन लेख प्रकाशित कर कावड़ कला-शिल्पी मांगीलाल मिस्त्री का भी मान बढ़ाया है। डॉ. विभा सिंह ने डॉ. धर्मवीर भारती को बड़ी आत्मीय संवेदनाओं से याद किया। उन्होंने ठीक ही लिखा, जब कोई श्रेष्ठ लिख रहा होता है तब हमारा उसकी ओर कोई ध्यान नहीं जाता और जब वह नहीं लिख रहा होता है तब उसे पुरस्कृत किया जाता है। ऐसा अक्सर होता है जब लेखक को पुरस्कृत करने के लिए उसे लंबी उम्र का इंतजार करते हुए जीना होता है।

इस आलेख को पढ़कर मुझे भारतीजी की अनेक यादें हो आईं। उन्होंने मुझे सर्वाधिक छापा और मैं भी चकित होता रहा कि जो धर्मयुग लोकसाहित्य संस्कृति कला का पत्र नहीं है वह मेरे लोकसम्मत भूतों, प्रेतों, दिव्यात्माओं के रहस्यजनित करतबों, करिश्मों को विशेष तरजीह उत्साह के साथ प्रकाशित कर रहा है।

याद पड़ता है जब सन् 1984 में महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन द्वारा प्रदत्त पत्रकारिता का हल्दीघाटी पुरस्कार लेने भारतीजी उदयपुर आये थे। मुझे भी लोक वांग्मय क्षेत्र का महाराणा सज्जनसिंह पुरस्कार प्रदान किया गया जो पहली बार शुरू किया गया था। इसी कड़ी में पं. जर्नादनराय नागर को ग्रामीण क्षेत्रों में समाज शिक्षण की अलख जगाने हेतु पुरस्कृत किया गया था। तब फाउंडेशन के संस्थापक भगवतसिंह मेवाड़ ने एक विशिष्ट कक्ष में हम सब से भावभीनी मुलाकात की थी। दूसरे दिन मैं भारतीजी को लेकर हल्दीघाटी गया। शाहीबाग आदि स्थानों का भ्रमण कराने के बाद जब मैं युद्धस्थल पर ले गया तो भारतीजी बोले, भानावतजी, यहां मुझे कुछ अजीब सी अनुभूति हो रही है। तब मैंने कहा, यही वह स्थल है जिसे रक्त तलाई कहते हैं। युद्ध के दौरान हल्की बूंदाबांदी से यह स्थल रक्तवर्णी हो गया जिससे एक तलैया सा नजारा बन गया सो इसका रक्त तलाई नाम हो गया।

यह सुनते ही भारतीजी ने अपने चप्पल खोल उस भूमि को दंडवत किया और कुछ धूली उठा कागज की पुड़िया बनाई। बंबई पहुंचने पर मुझे लिखा, जिस सरस्वती की मैं आराधना करता हूं उसके साथ हल्दीघाटी की उस माटी को भी पूज रहा हूं। उन्होंने मुझे यह भी कहा कि धर्मयुग अब घाटे में निकल रहा है किंतु वर्ष में रहस्य रोमांच, क्रिकेट तथा फिल्म विषयक तीन अंक निकाल हम पूरे वर्ष के घाटे की पूर्ति करते हैं।

इसी अंक में पं. विजयशंकर मिश्र का स्मृतिशेष सवितादेवी पर लिखा संस्मरण भी कई दृष्टियों से मन को स्पर्श कर गया। उनकी माता सिद्धेश्वरीदेवी ने ठुमरी घराने को विश्वस्तरीय गौरव-गुंजन दिया। वे उदयपुर की महाराणा कुंभा संगीत परिषद के एक समारोह में आई थीं तब लोककला मंडल में देवीलाल सामर और मैंने उन्हें आमंत्रित कर लोककला संग्राहलय दिखाते हुए अनेक चर्चाएं की थीं। वे विदुषी ही नहीं, ठुमरी संगीत की दिव्यात्मिक अनुभूतिपरक आध्यात्मिक चेतना की सात्विक विभूति भी लगीं। रामप्रकाश त्रिपाठी, नर्मदाप्रसाद उपाध्याय, डॉ. चरनजीत कौर, डॉ. योगिता तथा अन्यों की रचनाएं भी उल्लेखनीय हैं। इस सर्वथा संग्रहणीय अंक के लिए आपको बधाई।

– डॉ. महेन्द्र भानावत, मो. 9351609040

धर्मवीर भारती ग्रुप

महात्मा गांधी जी स्मरण दीर्घा

सौजन्य–गांधी भवन न्यास, भोपाल

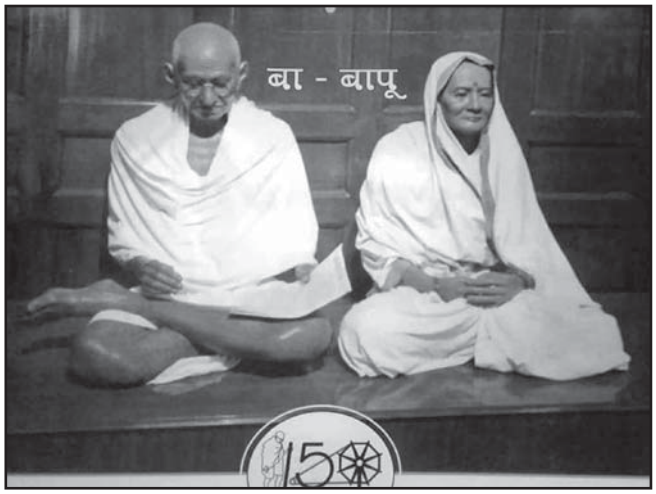

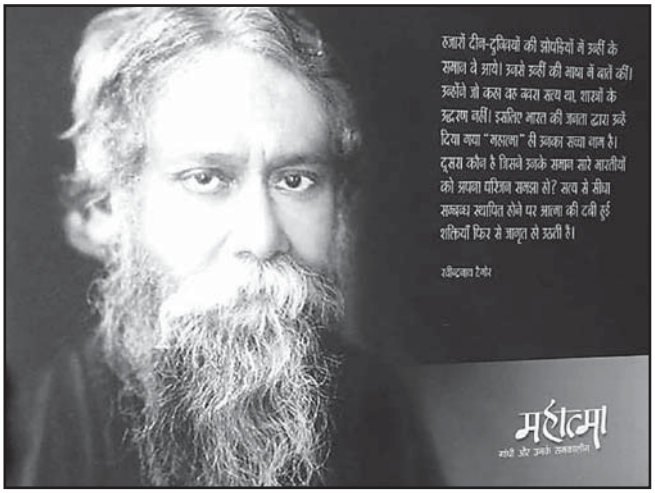

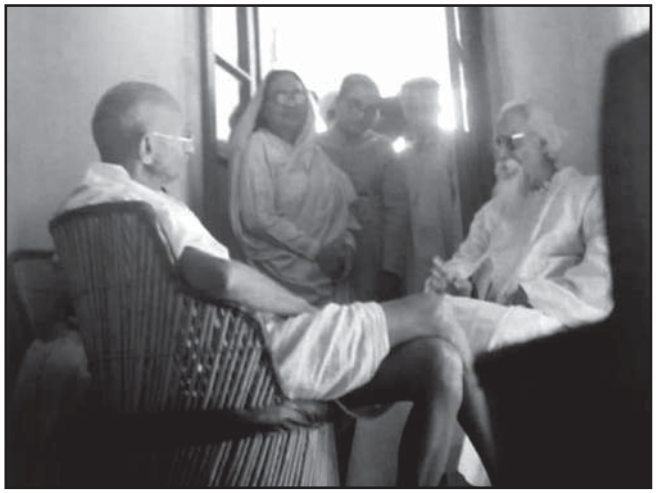

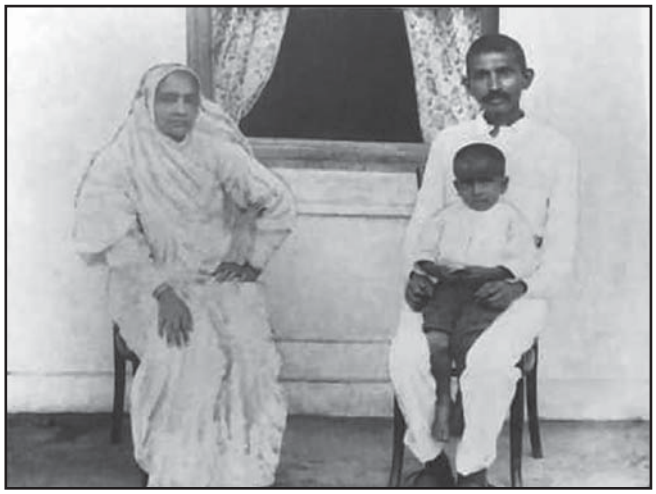

महात्मा गांधी जी स्मरण दीर्घा

सौजन्य–गांधी भवन न्यास, भोपाल

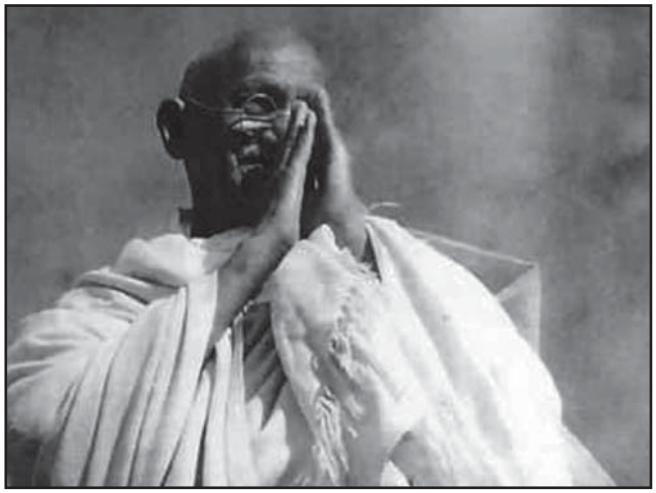

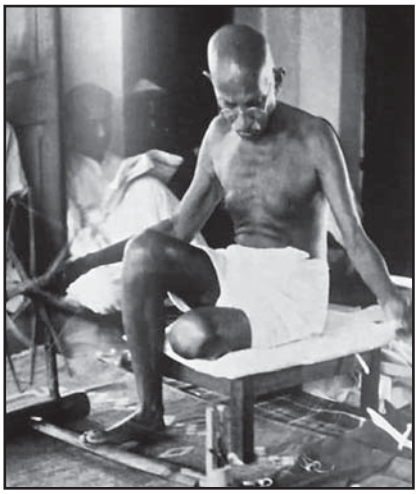

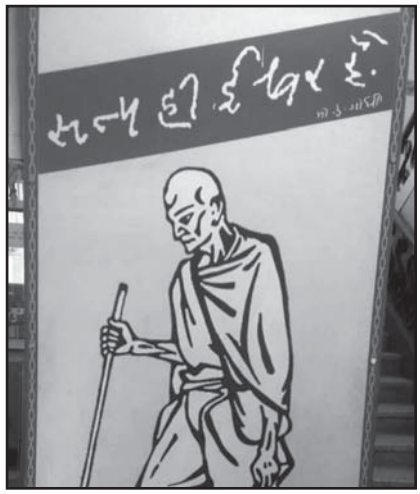

महात्मा गांधी जी की छाया-छवियां

सौजन्य-डॉ. नारायण व्यास, भोपाल

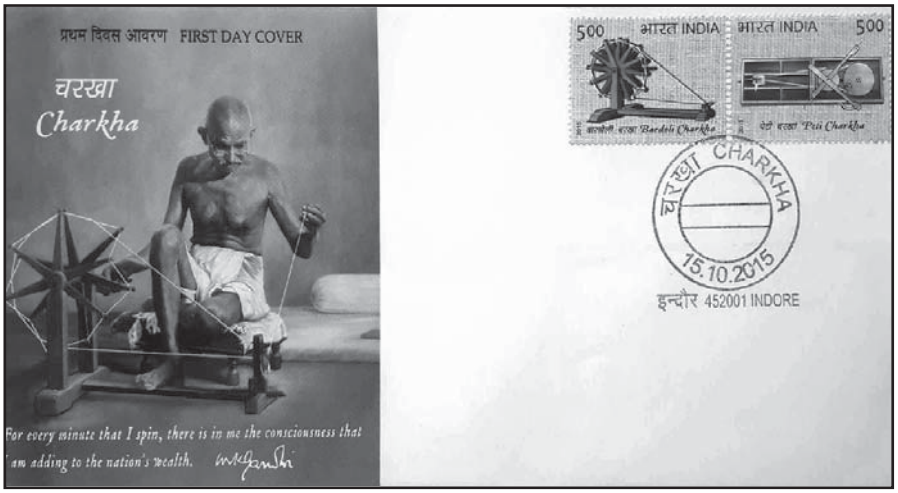

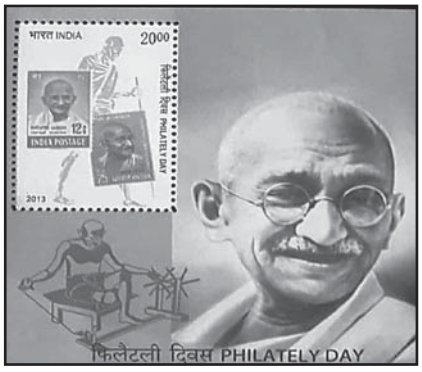

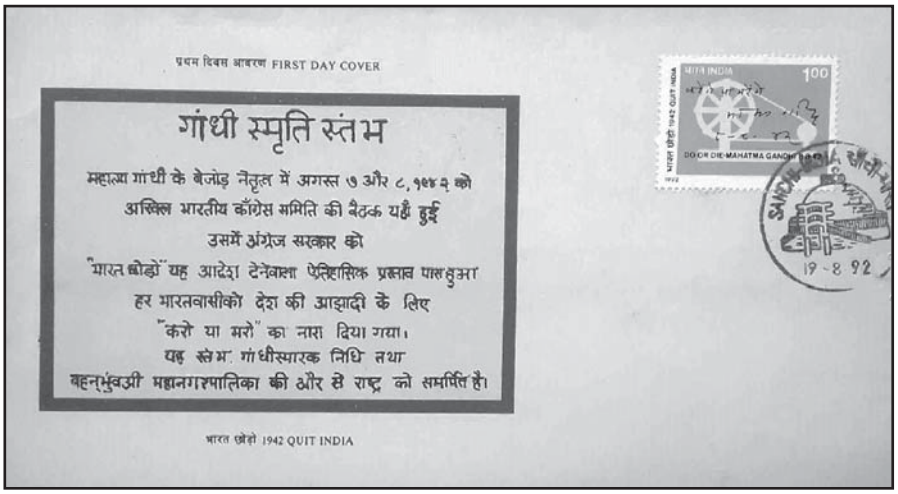

महात्मा गांधी जी की छाया-छवियां

सौजन्य-डॉ. नारायण व्यास, भोपाल

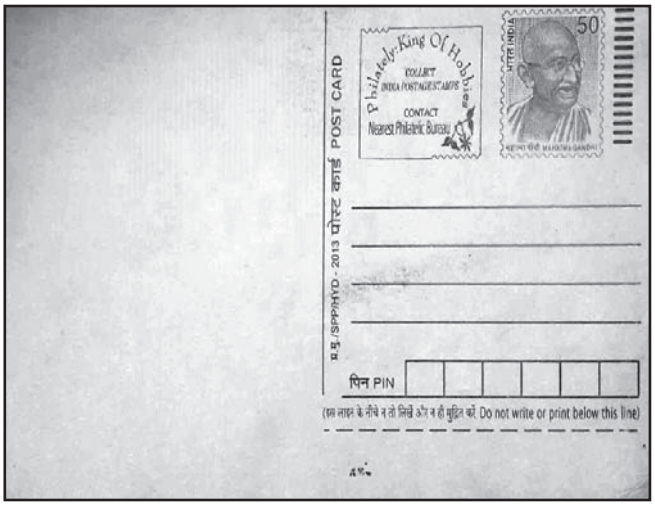

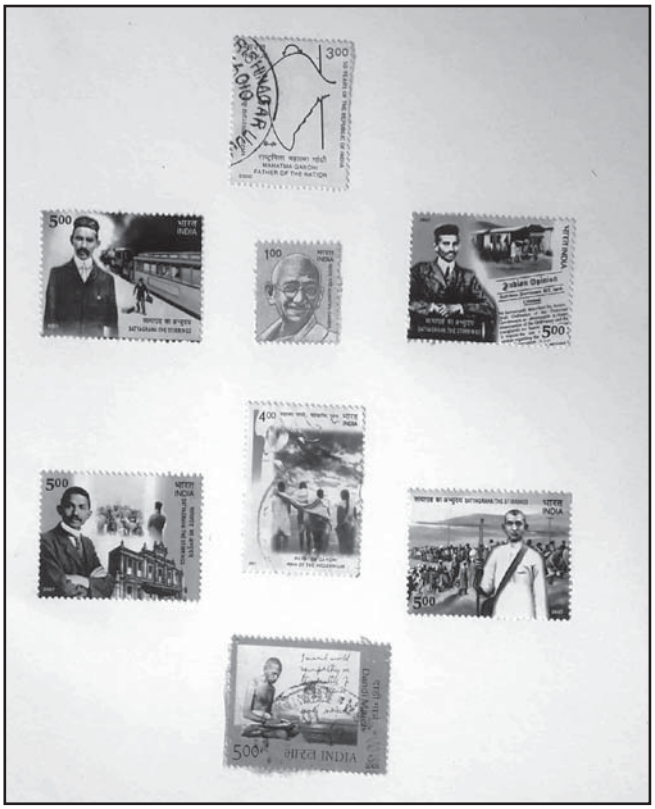

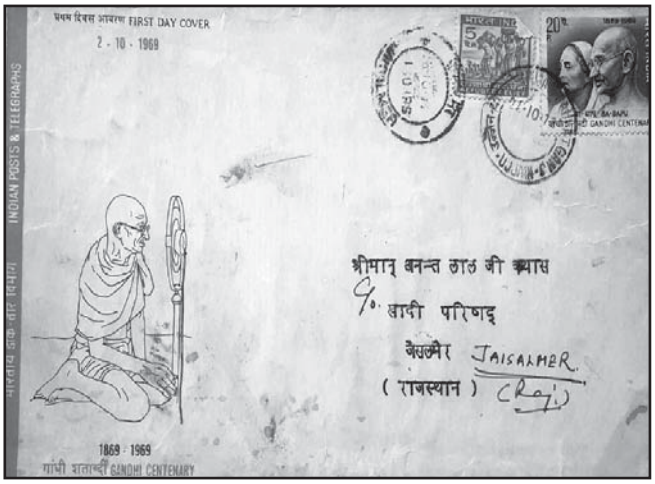

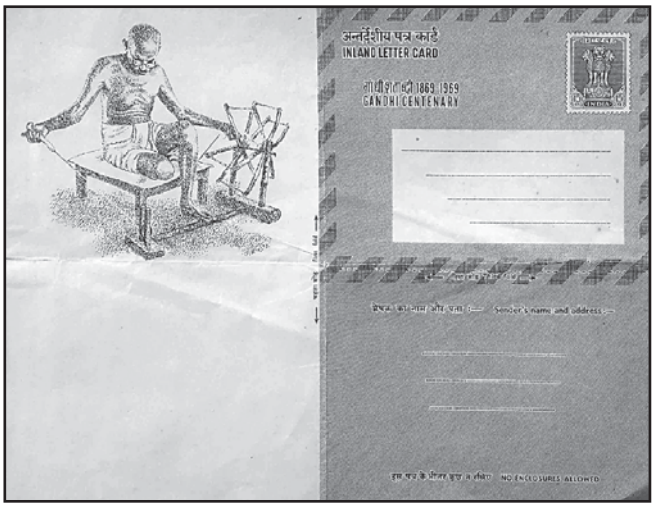

मध्यप्रदेश शासन

प्रदेश के गरीबों को पुनः मिलेगा संबल

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री जन कल्याण (संबल) योजना

योजना को व्यापक स्वरूप देकर इसका दायरा बढ़ाया जा रहा है

योजना में

असामान्य मृत्यु पर ₹ 4 लाख एवं
सामान्य मृत्यु पर ₹ 2 लाख की अनुग्रह सहायता राशि

अपंगता पर ₹ 1 लाख से 2 लाख तक की अनुग्रह सहायता राशि

निःशुल्क चिकित्सा सुविधा

महाविद्यालयीन स्तर तक निःशुल्क शिक्षा

जन्म से मृत्यु तक आर्थिक सहायता

प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित,
योजना में लगभग डेढ़ करोड़ निर्धन श्रमिक शामिल

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

D-17002

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक-भँवरलाल श्रीवास